आदमी

का

ज़हर

•

श्रीलाल शुक्ल

यह उपन्यास हिन्दी के उन असंख्य कथाप्रेमियों को
सस्नेह समर्पित है जिनकी परिधि में दास्तावस्की
से लेकर काफ्का और कामू तथा जैनेन्द्र से
लेकर अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे
विशिष्ट कृतिकारों का अस्तित्व
नहीं है।

यह उपन्यास हिन्दी के उन असंख्य कथाप्रेमियों को
सस्नेह समर्पित है जिनकी परिधि में दास्तायवस्की
से लेकर काफ़्का और कामू तथा जैनेन्द्र से
लेकर अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे
विशिष्ट कृतिकारों का अस्तित्व
नहीं है।

एक

खाना ख़त्म हो चुका था। बैरे ने मेज़ से जूठी प्लेटें, नैपकिन, छुरी-काँटे आदि हटा दिये; गिलासों में फिर से पानी भर दिया और शीशे के दो प्यालों में आइसक्रीम लाकर उनके सामने करीने से सजा दी।

हरिश्चन्द्र ने एक बार रूबी की ओर देखा, फिर चुपचाप खाना शुरू कर दिया। रूबी ने एक बार अपने आसपास देखा, फिर धीरे-से अपने सामने दीवार पर लगे शीशे की ओर निगाह फेर ली।

रेस्तराँ की दीवारें फ़िरोज़ी रंग की थीं, जहाँ शीशा नहीं था, वहाँ भी वे शीशे ही जैसी झिलमिलाती थीं। दीवारों में दो फुट की ऊँचाई पर चारों ओर लगभग एक फुट की चौड़ाई के शीशे जड़े गये थे। होटलों और दुकानों की दुनिया में किसी भी जगह को और बड़ी बनाकर दिखाने का एक खूबसूरत फरेब। बैठनेवालों को अपना अक्स इन्हीं शीशों में दिखायी देता था।

रूबी ने सोचा—मैं अब भी सुन्दर हूँ। अनजाने ही उसे अपने होंठों के कोनों पर मुस्कान का आभास हुआ। दरअसल उन्नीस साल की उम्र में भी रूबी सिर्फ़ सुन्दर ही नहीं, बहुत सुन्दर थी। पर उसे लगा, शीशे में न दिखनेवाली इस कमर के पास जितना चाहिए, उससे कुछ ज़्यादा उभार आ गया है। ब्लाउज़ के बाहर, खुली हुई बाँहों पर कुछ ज़्यादा गोलाई आ गई है। गरदन अब भी पहले जैसी सुडौल है, पर उस पर चारों ओर एक हल्की-सी मरोर पड़ने लगी है।

बैरे को इशारे से पास बुलाकर उसने कहा, "मेरे लिए कॉफ़ी लाओ!"

हरिश्चन्द्र ने कहा, "और यह आइसक्रीम?"

"वापस कर दो, या तुम खा लो! कुछ भी करो।"

हरिश्चन्द्र हँसकर बोला, "नहीं डियर, इससे वजन नहीं बढ़ेगा ! मेरी राय में…"

"ऐसे मामलों में मेरी राय में डॉक्टर की राय पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए !"

हरिश्चन्द्र ने नकली गम्भीरता से सिर हिलाया, जैसे किसी ने बड़ी गहरी बात कही हो।

रूबी अपने प्याले में गर्म कॉफी डालने लगी। उधर से अपनी निगाह हटाये बिना उसने धीरे-से कहा, "शाम को खाली हो न ?"

"हूँ भी, और नहीं भी। क्यों ?"

"ललित कला अकादमी में यतीन्द्र के चित्रों की नुमायश है। हमें चलना है। सात बजे पहुँचना होगा।"

हरिश्चन्द्र ने सहसा कोई जवाब नहीं दिया। उसकी भौंहें धीरे से सिकुड़ीं। कुछ सोचकर बोला, "कैसे जा सकेंगे डियर ?"

"क्यों नहीं जा सकेंगे डियर ?" उसने चिढ़ाने की कोशिश की।

हरिश्चन्द्र ने इसके जवाब में रूबी पर अपनी निगाह टिका दी। उसे सिर्फ देखता रहा। उस निगाह से ही जाहिर हो गया कि उसे जवाब देने की जरूरत नहीं है। रूबी के चेहरे पर उलझन-सी झलकने लगी। उसने जोर से साँस खींची और दूसरी ओर देखते हुए कॉफी का प्याला होंठों की ओर बढ़ाया।

हरिश्चन्द्र ने लापरवाही से कहा, "शाम को मैं ख़ाली नहीं हूँ। इतवार का दिन है। तुम जानती ही हो, आज शाम को हमें कहाँ जाना है !"

बैरे ने इशारा पाकर बिल पेश किया और थोड़ी देर बाद वे दोनों उठ खड़े हुए। वातानुकूलित कमरे से बाहर आते ही गर्मी और धूप का अचानक अहसास हुआ। रूबी ने खरगोश के बच्चों की अदा से नाक सिकोड़ी। पर हरिश्चन्द्र पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह अपने में ख़ोया-खोया रहा। बाहर से देखनेवाले यही समझते होंगे, एक ख़ूबसूरत जोड़ा, जिसे 'मेड फार ईच अदर' कांटेस्ट में पहला इनाम मिल सकता है, रेस्तराँ से निकलकर सड़क पर इन्तजार करती हुई कार की ओर बढ़ा जा रहा है। पर इस वक्त ये दोनों अपनी-अपनी निजी दुनिया की भूलभुलैया में अकेले भटकने लगे थे।

गाड़ी का दरवाजा रूबी के लिए खोलते हुए हरिश्चन्द्र ने लगभग लापरवाही से पूछा, "और कौन-कौन लोग होंगे ?"

कर अनन्नास का रस पीती थी। फिर वे दोनों इस रेस्तराँ में आकर खाना खाते थे। दोपहर के बाद वे सोते थे। शाम को साथ-साथ सिनेमा देखते थे। पति-पत्नी कई सालों से इतवार साथ-साथ बिताते थे। पिछले दिनों हरिश्चन्द्र के मन में रूबी के लिए कई बार सन्देह और खीझ का दौरा पड़ चुका था, फिर भी इतवार के इस क्रम में कोई खास फर्क नहीं आया था।

उनकी शादी हुए आठ साल हो गये थे, पर अभी तक परिवार में सिर्फ वही दोनों थे। शहर के छोर पर एक 'फैशनेबुल क्षेत्र' में उनका बँगला था, मखमली दूब का लॉन था, शहर में सबसे नयी वेरायटी के गुलाब थे जिन पर हर साल मौसम आने पर 'फ्लावर शो' में इनाम मिलता था। उनके पास स्वास्थ्य था, सुन्दरता थी, काफी पैसा था और थी अच्छी सामाजिक हैसियत।

हरिश्चन्द्र रेफ्रिजरेटरों का कारोबार करता था। उसकी दुकान शहर की अत्याधुनिक दुकानों में से थी और अपने कारोबार की मार्फत शहर के सभी जाने-माने आदमियों से उसकी जान-पहचान थी।

जब वे लोग घर पहुँचे, तब लगभग तीन बज रहे थे। हरिश्चन्द्र ने पोर्टिको में कार रोककर रूबी की ओर का दरवाजा खोला। वह तेजी से उतरकर चिकने फर्श पर ऊँची एड़ी के सैण्डिलों से खट-खट की आवाज की चोटें देती हुई बँगले के अन्दर चली गयी। जाते-जाते सिर घुमाकर हरिश्चन्द्र से कहती गयी, शाम को कार मेरे लिए छोड़ देना।"

ज्यादातर वह इतवार को दोपहर के बाद दो-तीन घण्टे सो लिया करता था, पर आज वह सोने के कमरे में नहीं गया। उसने यह जानने की भी कोशिश नहीं की कि रूबी कहाँ है और क्या कर रही है। वह ड्राइंगरूम में ही सोफे के ऊपर, कूलर चलाकर बिना कपड़े उतारे पड़ रहा। उसे नींद नहीं आयी। एक घण्टे तक वह करवटें बदलता रहा। उसके बाद वह ड्राइंग-रूम से ही लगे हुए एक कमरे में जाकर बैठ गया। इस कमरे का इस्तेमाल पढ़ने और दफ्तर के काम के लिए होता था। एक रंगीन पत्रिका के पन्नों में वह थोड़ी देर सिर गड़ाये रहा। पर बाद में वह एक पन्ने पर रुक गया— सिर्फ उसे देखता रहा।

अचानक हरिश्चन्द्र ने झटके से पत्रिका बन्द कर दी। उसे कोने में रखी हुई एक निचली मेज पर लापरवाही से फेंक दिया। सामने मेज पर टेलीफोन रखा था। उसका रिसीवर उठाकर उसने एक नम्बर घुमाया।

रिसीवर कान में लगाये वह किसी के बोलने का इन्तजार करता रहा।

उधर घण्टी लगातार बजती रही। हरिश्चन्द्र के माथे पर दो लकीरें पड़ गयीं। ऊबकर वह रिसीवर रखने ही जा रहा था कि उधर से उसे आवाज सुनायी दी। वह कुर्सी खिसकाकर इत्मीनान से बैठ गया।

"हलो, हाँ, मैं हरिश्चन्द्र···"

उस तरफ से किसी ने कोई हँसीवाली बात कही होगी। जवाब में हरिश्चन्द्र ने फोन पर एक खोखली हँसी हँसने की कोशिश की। कहा, "आज मुझे तुम्हारी कार की जरूरत पड़ेगी···नहीं-नहीं, ड्राइवर की फिक्र मत करो। वह छुट्टी पर है तो उसे वापस मत बुलाओ। अभी घण्टे-भर बाद मैं खुद आकर तुम्हारे यहाँ से गाड़ी ले लूँगा।"···वह फिर हँसा,··· "घबराओ नहीं, गाड़ी स्मगलिंग के लिए इस्तेमाल नहीं होगी।"

साढ़े पाँच बजे के बाद वह जब घर से बाहर निकला तब उसका चेहरा शान्त, पर गम्भीर था। उसकी आँखों पर मोटे फ्रेम का काला चश्मा लगा हुआ था।

लॉन में एक माली काम कर रहा था। उससे उसने कहा, "मेम साहब सो रही होंगी। जगें तो बता देना—चाभी कार में ही लगी है। मैं एक दोस्त के घर जा रहा हूँ। देर से लौटूँगा।"

बँगले से बाहर आकर वह पैदल ही छायादार पेड़ों के नीचे फुटपाथ पर चल दिया।

लगभग पौन घण्टे बाद वह उसी सड़क पर एक कार से वापस लौटा। वह हल्के नीले रंग की एक फिएट थी। इस तरह की कारें शहर में सैकड़ों की तादाद में होंगी। बँगले के सामने से निकलकर उसने कार की खिड़की के बाहर देखा। उसकी गाड़ी—काली ऐम्बेसेडर—अभी पोर्टिको में ही खड़ी थी। काफी तेज रफ्तार से वह बँगले से आगे निकल गया। सड़क चौड़ी और सीधी थी और लगभग डेढ़ फर्लांग तक उस पर कोई चौराहा नहीं पड़ता था। अपने मकान से लगभग दो सौ गज आगे जाकर उसने कार सड़क के किनारे एक घने पेड़ के नीचे खड़ी कर दी। उसके बायीं ओर बच्चों का एक मॉन्टेसरी स्कूल था, जो गर्मियों के कारण बन्द हो गया था। वह गाड़ी में, सड़क की ओर पीठ का कुछ रुख देकर चुपचाप बैठा रहा और कार के 'रियर व्यू मिरर' में पीछे से सड़क पर आनेवाले लोगों को देखता रहा।

अभी सूरज पूरी तौर से डूबा न था। पर धूप खत्म हो चुकी थी और सड़क पर दोपहर की अपेक्षा ज्यादा हलचल थी। फिर भी भीड़ नहीं

थी। चन्द रिक्शे, कुछ पैदल और दो-चार मिनट का अन्तर देकर आने-वाली इक्का-दुक्का कारें उसे 'बैकव्यू मिरर' में दिखायी दीं। उसकी काली ऐम्बेसेडर अभी तक बँगले के बाहर निकलकर सड़क पर नहीं आयी थी। गाड़ी का रुख जिस ओर था, उधर ही ढाई मील आगे जाकर ललित कला अकादमी की इमारत पड़ती थी। हरिश्चन्द्र ने अभी तक काला चश्मा नहीं उतारा था। वह चुपचाप गाड़ी में बैठा हुआ 'बैकव्यू मिरर' पर निगाह जमाये रहा।

अब रोशनी इतनी कम हो गयी थी कि आँखों से चश्मा हटा लेना जरूरी हो गया। फिर भी इतना उजाला था कि सड़क पर आनेवाली गाड़ियों ने अपनी बत्तियाँ नहीं जलायी थीं।

सहसा हरिश्चन्द्र ने 'बैकव्यू मिरर' में गौर से देखा, उसकी काली ऐम्बेसेडर बँगले से बाहर निकलकर सड़क पर आ गयी है। पर वह उसकी ओर नहीं आ रही थी। ललित कला अकादमी की ओर जाने के बजाय, वह बिल्कुल दूसरी तरफ जा रही थी।

उसने अपनी गाड़ी स्टार्ट करके तेजी से मोड़ी और कुछ क्षणों के बाद रफ्तार कुछ कम कर दी। उसकी गाड़ी में और काली ऐम्बेसेडर के बीच लगभग सौ गज का फासला था। बीच में चन्द रिक्शे और एक बस पड़ती थी।

रोशनी और भी कम हो गयी थी और सड़कों की बत्तियाँ जल चुकी थीं। अपनी कार की पार्किंग लाइटें जलाकर वह ऐम्बेसेडर के पीछे चलता रहा।

उसका चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो गया था, क्योंकि रूबी उसकी गाड़ी लेकर ललित कला अकादमी की ओर नहीं जा रही थी। वह उस ओर बढ़ रही थी, जिधर अजीतसिंह का घर पड़ता था। लगभग एक मील आगे चलने पर रूबी ने ऐम्बेसेडर को दायीं ओर एक चहलपहलवाली सड़क पर मोड़ लिया। यह सड़क और भी ज्यादा चौड़ी थी। इसके साथ ही दूर-दूर बसे हुए बँगलों का क्षेत्र खत्म हो जाता था। दोनों ओर रोशनी में झिलमिलाती हुई दुकानें थीं। ये इतवार को खुली रहती थीं।

तीन फर्लांग चलने के बाद एक दुमंजिला इमारत पड़ती थी जिसकी निचली मंजिल में साप्ताहिक, 'जनक्रान्ति' का दफ्तर और जनक्रांन्ति प्रेस पड़ता था। ऊपर की मंजिल में अजीतसिंह रहता था। वह प्रेस का मालिक और 'जनक्रान्ति' साप्ताहिक का सम्पादक, प्रकाशक, व्यवस्थापक—सभी

कुछ था।

यह समझते हुए कि रुबी ऐम्बेसेडर को इसी इमारत के सामने रोकेगी, हरिश्चन्द्र ने फिएट धीमी कर दी। पर उसने ताज्जुब के साथ देखा, एम्बेसेडर जनक्रान्ति प्रेस के सामने नहीं, बल्कि उससे लगभग चालीस गज पहले ही रुक गयी है। उसमें और हरिश्चन्द्र के दरम्यान बहुत कम फासला रह गया था। उसने तिरछे बैठकर सिगरेट सुलगायी और गर्मी के बावजूद खिड़की का शीशा चढ़ा लिया। बाहर दुकानों पर तेज रोशनी हो रही थी। इस कारण उधर से कार के अन्दर आदमी का चेहरा साफ नहीं दीख सकता था। वह चुपचाप सिगरेट पीता हुआ ऐम्बेसेडर पर निगाह जमाये रहा।

रुबी कार से नीचे उतरी और जनक्रान्ति प्रेस की ओर जाने के बजाय बिल्कुल पास की दुकान की ओर बढ़ी। उसके हाथ में कागज में लिपटा हुआ एक पैकेट था। जिस दुकान की ओर वह जा रही थी, उस पर 'क्वालिटी ड्राईक्लीनर्स' का विज्ञापन बिजली के अक्षरों में चमक रहा था। हरिश्चन्द्र ने सिगरेट का एक जोरदार कश खींचा।

लगभग पांच मिनट बाद वह दुकान से बाहर आयी और कार स्टार्ट की। वापस आते वक्त उसके हाथ में वह पैकेट न था। हरिश्चन्द्र ने भी गाड़ी स्टार्ट कर ली। उसका ख्याल था कि रुबी गाड़ी मोड़कर ललित कला अकादमी की ओर वापस जायेगी, लेकिन उसने वैसा नहीं किया। वह सामने की ओर चल दी। रिक्शों और साइकिलों की भीड़ के कारण इस वक्त गाड़ी की रफ्तार बहुत कम थी। हरिश्चन्द्र उससे लगभग पचहत्तर गज पीछे चलता रहा।

बाजार की भीड़वाला हिस्सा पार करते ही रुबी ने ऐम्बेसेडर की रफ्तार काफी तेज कर दी, पर यहां सड़क साफ थी और हरिश्चन्द्र उससे एक फर्लांग पीछे रहकर भी आसानी से चल सकता था। कुछ दूर चलकर रुबी ने एक चौराहे पर गाड़ी को बायीं ओर मोड़ा। इस नयी सड़क पर लगभग डेढ़ मील आगे चलकर उसने गाड़ी को फिर दायीं ओर मोड़ा। तब हरिश्चन्द्र को अहसास हुआ कि वे, एक दूसरे रास्ते से ललित कला अकादमी की ओर पहुंच रहे हैं। इस ओर से उन्हें करीब दो मील का रास्ता ज्यादा तय करना पड़ता था, पर इधर की सड़कें ज्यादा छायादार और साफ-सुथरी थीं। अच्छे मौसम में उन पर कार ड्राइव करते वक्त लगता था, जिन्दगी के क्षण कितने चिकने ढंग से फिसल रहे हैं।

अकादमी की इमारत से लगभग डेढ़ सौ गज पहले हरिश्चन्द्र ने एक पेट्रोल पम्प के पास गाड़ी धीमी की। वहाँ कोई भी पेड़ नहीं था, पर सड़क के किनारे खुली जगह में चार-छह गाड़ियाँ खड़ी थीं। दो गाड़ियों के बीच छूटी हुई जगह में उसने गाड़ी खड़ी कर ली।

एक दूसरी सिगरेट सुलगाकर वह कार से नीचे उतरा। गाड़ी में ताला लगाकर वह स्वाभाविक चाल से ललित कला अकादमी की इमारत की ओर बढ़ा। वहीं बहुत-सी कारों के बीच उसे अपनी काली ऐम्बेसेडर खड़ी दिखायी दी।

अपने चारों ओर पैनी निगाह डालकर वह अकादमी की इमारत में दाखिल हुआ। सामने ही चौड़ा जीना था। ऊपर की मंजिल पर एक बड़े कमरे में चित्र-प्रदर्शनी हो रही थी। नीचे दो-तीन लड़के खड़े हुए जोर-जोर से हँस रहे थे। उन पर ध्यान न देकर वह जीने की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। ऊपर की मंजिल एक गैलरी से शुरू होती थी जिसमें इस समय कोई नहीं था। पर उससे मिले हुए हॉल में स्त्री-पुरुषों के बोलने की सम्मिलित आवाजें बाहर तक आ रही थीं। हरिश्चन्द्र ने सोचा—उद्घाटन हो चुका है, और लोग अब चित्रों के इर्द-गिर्द टहल रहे हैं।

हॉल के प्रवेशवाले मुख्य दरवाजे को एक किनारे छोड़कर वह बरामदे में आगे बढ़ता गया और घूमकर दूसरी ओर पहुँचा। उधर भी बरामदा था। उधर के दरवाजे भी खुले हुए थे और कुछ लोग टहलते हुए बरामदे में आ गये थे। हरिश्चन्द्र ने रुककर देखा, उनमें रूबी न थी। तब एक खिड़की के पास खड़े होकर एक कोने से उसने हॉल के अन्दर झाँका। पहली निगाह में ही उसे हॉल के दूसरे छोर पर वह दिखायी दे गयी।

एक क्षण के लिए हरिश्चन्द्र भूल गया कि वह वहाँ क्यों आया है। उसके दिमाग में कुल इतनी बात रह गयी कि रूबी की सुन्दरता किस तरह आस-पास की पूरी फिजा को अपने में समेट लेती है। इस वक्त वह एक हल्की गुलाबी साड़ी पहने थी और बालों की सज्जा में रोज की अपेक्षा कुल इतना फर्क आ गया था कि वह अपेक्षाकृत कम उम्र की और ज्यादा लम्बी दिखने लगी थी। बिजली की रोशनी में हीरों-जैसे उसके दाँत और उसके कानों के टॉप्स के हीरे चमक रहे थे। वह हँस रही थी, पास खड़े दो नौजवा आर्टिस्ट बड़े ही दिलचस्प ढंग से उसे कोई बात समझा रहे थे। वह इ समय वहीं पर थी जहाँ उसे होना चाहिए था। हरिश्चन्द्र को बरामदे खड़े-खड़े लगा, जैसे एक पूरा संसार उसके लिए बन्द पड़ा है।

खिड़की के पल्ले को घुमाकर, अपने को कुछ और छिपाते हुए उसने पूरे हॉल की तेज नजरों से छानबीन की, लेकिन अजीतसिंह उसे कहीं भी नहीं दिखायी दिया। बरामदे में, और अपने पीछे की ओर भी उसने निगाह डाली। पीछे कोई नहीं था, पर बरामदे में अब काफी लोग आ गये थे। उन में भी उसे अजीतसिंह नहीं दिखायी दिया। कुछ देर वहीं रुककर वह नीचे उतर आया और इमारत के बाहर एक पेड़ के नीचे ठहरकर सिगरेट पीता रहा। वहाँ वह लगभग पन्द्रह मिनट खड़ा रहा। फिर धीरे-धीरे पैट्रोल पम्प के पास जाकर अपनी गाड़ी में बैठ गया। अकादमी की ओर से दो-एक मोटरें आती हुई दिखायी दीं।

उसने गाड़ी मोड़कर इस तरह खड़ी कर ली कि उन कारों को वह अपने सामने से गुजरता हुआ देख सके। गाड़ियाँ गुजरती रहीं और बिना किसी इच्छा या मतलब के, वह मन ही मन उन्हें गिनता रहा। एक...दो...तीन...चार...वह अठारह तक गिन गया। उन्नीसवीं गाड़ी उसी की काली एम्बेसेडर थी। गाड़ी उसके सामने से धीमी रफ्तार के साथ निकली। रूबी के एक गाल और इयर-टाप पर सड़क की नियोनलाइट फिसलते हुए पड़ी। हरिश्चन्द्र को लगा, हजारों बिजलियों के एकसाथ कौंध जाने के बाद सारी दुनिया में अचानक अँधेरा छा गया है। गाड़ी को स्टार्ट करने तक में, उसे लगा, काफी मेहनत पड़ रही है।

अपनी कार उसने तीन-चार गाड़ियों के बाद लगा ली। इस बार रूबी सीधे रास्ते से जा रही थी। कुछ देर बाद उसने उसे अपने बँगले में मुड़ते हुए देखा। फिएट को वापस मोड़कर वह फिर उसी रास्ते लौट आया। कुछ फर्लांग पर ही उसका क्लब पड़ता था। कार उसने अपने क्लब के सामने रोकी।

वह दोस्त, जिससे उसने गाड़ी माँगी थी, बाररूम में एक ऊँचे मोढ़े पर बैठा हुआ ह्विस्की पी रहा था। हरिश्चन्द्र ने गाड़ी की चाभी उसको दिखाकर उसकी बुशशर्ट की जेब में डाल दी और मुसकराकर कहा, "थैंक्यू।" यह देखकर कि दोस्त का गिलास खाली हो रहा है, उसने दो गिलासों में ह्विस्की का आर्डर दिया और एक दूसरे मोढ़े पर बैठते हुए थकी आवाज में कहा, "लगता है, सड़ी हुई गर्मी का मौसम आज से शुरू हो गया है।"

जैसे मौसम को छोड़कर उसकी जिन्दगी के भीतर-बाहर कुछ भी न बचा हो।

दो

शाम के छह बजनेवाले थे। दुकानें बन्द होने में अभी दो घण्टे की देर थी। उसी दिन दो ट्रकों पर रेफ्रिजरेटरों की नयी खेप आयी थी। उन्हें दुकान के सामने ही उतरवा लिया गया था। वे क्रेटों में करीने के साथ जकड़े हुए थे। एक की पैकिंग टूट गयी थी। कागज की कतरनें, मोटी दफ्तियों के चीथड़े और लकड़ी के टुकड़े उसके इर्द-गिर्द बिखरे पड़े थे। हरिश्चन्द्र ने अपने मैनेजर से कहा, "इन बाकी रेफ्रिजरेटरों को पीछे के गोदाम में रखवा देना, मैं जा रहा हूँ।"

पर हरिश्चन्द्र एकदम से गया नहीं। उठकर थोड़ी देर दुकान के दरवाजे पर खड़ा रहा और सामने फैले हुए माल को खोयी-खोयी निगाहों से देखता रहा। फिर लम्बे कदम रखता हुआ टेलीफोन के पास आया और एक नम्बर मिलाने लगा।

उधर से उस घर का नौकर बोला। उसने बताया, "मेम साहब पाँच बजे के करीब गयी हैं, लौटनेवाली होंगी।"

"कहाँ गयी हैं?"

"कोई नुमाइश चल रही है।"

हरिश्चन्द्र ने आवाज पर काबू रखकर कहा, "जाना था तो गाड़ी मँगा लेतीं।"

"गाड़ी से ही गयी हैं।"

"किसकी गाड़ी से?"

"यह नहीं मालूम, साहब! मैं भीतर किचन में था।"

हरिश्चन्द्र ने रिसीवर रख दिया। बहुत धीरे-धीरे बाहर निकलकर वह अपनी कार के पास पहुँचा। गाड़ी स्टार्ट करके वह बँगले की ओर बढ़ा। उसके चेहरे पर इस वक्त एक अजीब-सा खोखलापन था, जैसे किसी खूबसूरत तसवीर को धूल की हल्की पर्त ने ढँक लिया हो। गाड़ी बहुत धीमी रफ्तार से चलती रही।

बँगले के अन्दर घुसते ही नौकर ने पूछा, "चाय बाहर लॉन में लगा दूँ।"

"नहीं, मैं पी चुका हूँ।" उसने जैसे अपने-आपसे कहा।

अपने सोने के कमरे में वह वार्डरोब में थोड़ी देर तक कुछ तलाश करता रहा। उसके माथे पर लकीरें उभर आयी थीं और चेहरे पर उलझन ने अपने पंजे के निशान छोड़ दिये थे।

वार्डरोब के एक खाने से उसने एक पिस्तौल निकाली। उसी के पास रखे हुए दफ्ती के एक डिब्बे से उसने कारतूस निकाले। फिर वार्डरोब बन्द करके उसने पिस्तौल की मैगजीन में चार कारतूस भरे। सेफ्टी-कैच लगाकर पिस्तौल उसने पतलून की जेब में डाल ली।

वह फिर अपनी गाड़ी में आ बैठा और ललित कला अकादमी की इमारत की ओर बढ़ चला। सड़कों पर चहल-पहल जरूर थी, पर उसे एक अजीब-सी वीरानी का अहसास हुआ।

आज वहाँ कल की अपेक्षा ज्यादा भीड़ थी। स्थानीय यूनिवर्सिटी के होस्टल से लड़कियों का एक जत्था चित्र-प्रदर्शनी देखने आया था। उन्हीं के साथ लड़कों के एक जत्थे ने भी प्रदर्शनी के हॉल पर हमला बोल दिया था। भीड़ थी और उससे भी ज्यादा शोर था।

हॉल में वह काफी देर घूम-घूमकर रूबी को खोजता रहा। पीछे के बरामदे में आकर भी उसने चारों ओर देखा। वह वहाँ नहीं थी। हॉल में वापस आकर उसने एक किनारे से तसवीरें देखनी शुरू कर दी। ज्यादातर अमूर्त शैली की तसवीरें थी, जो उसकी समझ के बाहर थी। उन्हें तेजी से देखता हुआ वह एक ओर से दूसरी ओर तक चला गया। दूसरे कोने पर पहुँचते-पहुँचते उसने अपने-आपको लड़कियों के जत्थे से घिरा पाया।

वे चीख-चीखकर आपस में बात कर रही थी और एक ऐसी जबान में बोल रही थी जिसे सोलह से उन्नीस साल तक की खुशमिजाज लड़कियाँ ही समझ सकती हैं। चित्रकला की दुनिया से बेगाने-अनजाने कितने किस्से वे एकसाथ एक-दूसरे को सुना रही थीं :

···उसने कहा···उसने उससे कहा था···वह पहले ही कहनेवाली थी कि···वगैरह-वगैरह।

एक ही वाक्य, जो खत्म नहीं हो रहा था।

रंग-बिरंगे कपड़ों और उड़ते हुए रूखे बालों में, ढीले कुर्तों और चुस्त चूड़ीदार या बेल-बाटम पायजामों और निहायत सादगी से सिली हुई कमीजों के माहौल में वे पूरे हॉल को एक बिलकुल ही अनूठे किस्म की प्रदर्शनी में बदले दे रही थी। हरिश्चन्द्र के आसपास कई तरह के मिले-जुले सेण्ट की भीनी खुशबू उड़ रही थी और उसे लगा वह ईथर में तैर रहा है। अचानक उसे अफसोस हुआ—रूबी! मैं रूबी को खो चुका हूँ।

लड़कियों की भीड़ को मुलायमियत से एक किनारे करके वह फिर बरामदे में पहुँच गया। नीचे झाँकते हुए उसने एक सिगरेट सुलगायी। उसके

कन्धे के पास किसी ने बड़ी मीठी आवाज में कहा, "नमस्कार, भाई साहब ।"

उसने घूमकर देखा—अशोक उसके पास खड़ा था। हरिश्चन्द्र ने कहा, "हलो ! तुम कैसे ?"

अशोक स्थानीय संगीत कॉलिज में सितार सिखाता था। कुछ साल पहले वह बम्बई में था। वहाँ उसने दो-चार फिल्मों में संगीत के असिस्टेण्ट डायरेक्टर का काम भी किया था। सभी जानते थे कि बम्बई में उसका और अजीतसिंह का साथ था। बाद में, किस्मत अच्छी न होने या किसी और वजह से, वह लखनऊ चला आया और उसने सितार सिखाने की नौकरी कर ली। सितार वह बहुत अच्छा बजाता था। उसे किसी भी जल्से में, और किसी भी शराबखाने में, किसी भी समय पाया जा सकता था। लोग उसे देखकर साँसें भरते और कहते—इतना ऊँचा आर्टिस्ट ! शराब इसको पिये जा रही है !

"मैं भी प्रदर्शनी देखने आया था।" अशोक ने कहा। फिर कुछ रुक-कर बोला, "भाभीजी भी तो अभी यहीं थीं।"

सुनकर हरिश्चन्द्र कुछ कहने को हुआ, पर उसने अपने को रोक लिया। एक सेकिण्ड रुककर उसने पूछा, "तो क्या रूबी यहाँ से चली गयी ? उसे तो मुझसे यहीं मिलना था।"

अशोक बोला, "अजीत भाई भी आये थे। उनकी कार थी ही। इसी-लिए शायद इन्तजार नहीं किया।"

"ठीक है। ठीक है।" हरिश्चन्द्र ने कहा और कहते ही सोचा, इतने जोर से बोलने की जरूरत नहीं थी। उसने कोशिश करके आवाज में खुशी पैदा की, "अच्छा भाई अशोक, तब हम भी चले !"

उसे ख्याल नहीं कि वह कितनी जल्दी अजीतसिंह के घर पर पहुँच गया। सामने जनक्रान्ति प्रेस खुला हुआ था और एक थका हुआ कम्पोजीटर एक टूटी हुई आरामकुर्सी पर लुढ़का पड़ा था। उस तक पहुँचते-पहुँचते हरिश्चन्द्र ने दो-तीन बार जोर-जोर की साँस ली और इधर-उधर की दुकानों पर निगाह दौड़ायी। इससे उसे यह समझने में मदद मिली कि वह वास्तविक दुनिया में चल रहा है। कम्पोजीटर से उसने पूछा, "अजीत साहब ऊपर हैं ?"

कम्पोजीटर ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा, "इतने वक्त कभी वह घर पर रहते भी हैं !"

"कहाँ गये हैं ?"

"गये होंगे कहीं !"

"ऊपर इस वक्त कौन है ?"

"होगा कोई !"

हरिश्चन्द्र प्रेस से लगे हुए जीने की ओर बढ़ा, तब तक कम्पोजीटर ने पूरी आँखें खोलकर देख लिया था कि बात करनेवाला कोई सफेदपोश है। उसने पीछे से कहा, "नौकर होगा। घण्टी बजा लें।"

ऊपर की मंजिल पर जाकर वह रुक गया। घण्टी का बटन दबाने के पहले वह लगभग एक मिनट खड़ा रहा। बाद में घण्टी बजने पर, चुस्त पतलून और बुश्शर्ट पहने हुए एक नौजवान ने दरवाजा खोला। हरिश्चन्द्र को उसने सवाल-भरी निगाह से देखा।

"अजीत साहब हैं ?"

उसने होंठ दबाकर 'नहीं' कहने के लिए सिर हिलाया।

हरिश्चन्द्र एक क्षण चुप रहा। फिर कुछ सोचकर बोला, "ताज्जुब है। मुझे तो इसी वक्त यहाँ आने को कहा था। हम लोग साथ ही बाहर निकलनेवाले थे।"

नौजवान पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। हरिश्चन्द्र ने पूछा, "तुम्हें पता तो होगा ही, वह कहाँ गये हैं ?"

नौजवान ने सिर हिलाकर 'नहीं' का इशारा किया और बड़े साफ ढंग से कहा, "सॉरी, मुझे बिल्कुल पता नहीं कि वह कहाँ हैं।"

वह दरवाजा बन्द करने जा रहा था, पर हरिश्चन्द्र ने अपना पैर आगे बढ़ाकर उसे रोक दिया। धीरे से कहा, "देखो, हमें साथ ही एक जगह जाना था। उन्होंने मेरा इन्तजार भी किया होगा। हमें खाना भी बाहर ही खाना था।"

नौकर के चेहरे पर एक मुसकराहट का बुलबुला-भर हुआ। बोला, "अगर आप साहब के दोस्त हैं तो जानते ही होंगे वह कहाँ मिलेंगे।"

"नहीं, उन्होंने यहीं आने को कहा था।" फिर उसने लापरवाही से कहा, "एक हमारी दोस्त भी यहीं आनेवाली थीं।"

नौजवान थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा। अचानक उसने मुसकराकर कहा, "आप लोगों की दोस्त तो साहब के साथ ही आयी थीं। यहाँ से वे अभी आध घण्टा हुआ बाहर गये हैं। डायमण्ड होटल—आप तो जानते ही होंगे ?"

"डायमण्ड होटल···" हरिश्चन्द्र ने बड़ी आत्मीयता से कहा और

कन्धे के पास किसी ने बड़ी मीठी आवाज में कहा, "नमस्कार, भाई साहब।"

उसने घूमकर देखा—अशोक उसके पास खड़ा था। हरिश्चन्द्र ने कहा, "हलो! तुम कैसे?"

अशोक स्थानीय संगीत कॉलिज में सितार सिखाता था। कुछ साल पहले वह बम्बई में था। वहाँ उसने दो-चार फिल्मों में संगीत के असिस्टेण्ट डायरेक्टर का काम भी किया था। सभी जानते थे कि बम्बई में उसका और अजीतसिंह का साथ था। बाद में, किस्मत अच्छी न होने या किसी और वजह से, वह लखनऊ चला आया और उसने सितार सिखाने की नौकरी कर ली। सितार वह बहुत अच्छा बजाता था। उसे किसी भी जल्से में, और किसी भी शराबखाने में, किसी भी समय पाया जा सकता था। लोग उसे देखकर साँसें भरते और कहते—इतना ऊँचा आर्टिस्ट! शराब इसको पिये जा रही है!

"मैं भी प्रदर्शनी देखने आया था।" अशोक ने कहा। फिर कुछ रुककर बोला, "भाभीजी भी तो अभी यहीं थीं।"

सुनकर हरिश्चन्द्र कुछ कहने को हुआ, पर उसने अपने को रोक लिया। एक सेकिण्ड रुककर उसने पूछा, "तो क्या रुबी यहाँ से चली गयी? उसे तो मुझसे यहीं मिलना था।"

अशोक बोला, "अजीत भाई भी आये थे। उनकी कार थी ही। इसीलिए शायद इन्तजार नहीं किया।"

"ठीक है। ठीक है।" हरिश्चन्द्र ने कहा और कहते ही सोचा, इतने जोर से बोलने की जरूरत नहीं थी। उसने कोशिश करके आवाज में खुशी पैदा की, "अच्छा भाई अशोक, तब हम भी चले!"

उसे ख्याल नहीं कि वह कितनी जल्दी अजीतसिंह के घर पर पहुँच गया। सामने जनक्रान्ति प्रेस खुला हुआ था और एक थका हुआ कम्पोजीटर एक टूटी हुई आरामकुर्सी पर लुढ़का पड़ा था। उस तक पहुँचते-पहुँचते हरिश्चन्द्र ने दो-तीन बार जोर-जोर की साँस ली और इधर-उधर की दुकानों पर निगाह दौड़ायी। इससे उसे यह समझने में मदद मिली कि वह वास्तविक दुनिया में चल रहा है। कम्पोजीटर से उसने पूछा, "अजीत साहब ऊपर हैं?"

कम्पोजीटर ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा, "इतने वक्त कभी वह घर पर रहते भी हैं!"

"कहाँ गये हैं?"

"गये होंगे कहीं !"

"ऊपर इस वक्त कौन है ?"

"होगा कोई !"

हरिश्चन्द्र प्रेस से लगे हुए जीने की ओर बढ़ा, तब तक कम्पोज़ीटर ने पूरी आँखें खोलकर देख लिया था कि बात करनेवाला कोई सफ़ेदपोश है। उसने पीछे से कहा, "नौकर होगा। घण्टी बजा लें।"

ऊपर की मंजिल पर जाकर वह रुक गया। घण्टी का बटन दबाने के पहले वह लगभग एक मिनट खड़ा रहा। बाद में घण्टी बजने पर, चुस्त पतलून और बुसशर्ट पहने हुए एक नौजवान ने दरवाजा खोला। हरिश्चन्द्र को उसने सवाल-भरी निगाह से देखा।

"अजीत साहब हैं ?"

उसने होंठ दबाकर 'नहीं' कहने के लिए सिर हिलाया।

हरिश्चन्द्र एक क्षण चुप रहा। फिर कुछ सोचकर बोला, "ताज्जुब है। मुझे तो इसी वक्त यहाँ आने को कहा था। हम लोग साथ ही बाहर निकलनेवाले थे।"

नौजवान पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। हरिश्चन्द्र ने पूछा, "तुम्हें पता तो होगा ही, वह कहाँ गये हैं ?"

नौजवान ने सिर हिलाकर 'नहीं' का इशारा किया और बड़े साफ़ ढंग से कहा, "सॉरी, मुझे बिल्कुल पता नहीं कि वह कहाँ हैं।"

वह दरवाजा बन्द करने जा रहा था, पर हरिश्चन्द्र ने अपना पैर आगे बढ़ाकर उसे रोक दिया। धीरे से कहा, "देखो, हमें साथ ही एक जगह जाना था। उन्होंने मेरा इन्तजार भी किया होगा। हमें खाना भी बाहर ही खाना था।"

नौकर के चेहरे पर एक मुसकराहट का शुबहा-भर हुआ। बोला, "अगर आप साहब के दोस्त हैं तो जानते ही होंगे वह कहाँ मिलेंगे।"

"नहीं, उन्होंने यहीं आने को कहा था।" फिर उसने लापरवाही से कहा, "एक हमारी दोस्त भी यहीं आनेवाली थी।"

नौजवान थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा। अचानक उसने मुसकराकर कहा, "आप लोगों की दोस्त तो साहब के साथ ही आयी थीं। यहाँ से वे अभी आध घण्टा हुआ बाहर गये हैं। डायमण्ड होटल—आप तो जानते ही होंगे ?"

"डायमण्ड होटल···" हरिश्चन्द्र ने बड़ी आत्मीयता से कहा और

वाभाविक चाल से जीने के नीचे उतर आया। पर गाड़ी में बैठते-बैठते
ासे लगा मानो जिस्म का सारा खून सिमटकर उसके सिर में पहुँच गया है।
ााड़ी का स्टार्टर खींचने के बजाय उसने वाइपरों की स्विच खींच ली। बाद
में किसी तरह गाड़ी स्टार्ट करके झटके से उसे चलाया और सड़क की भीड़
में अपने को डाल लिया। बड़ी कोशिश के बाद उसने यह अहसास किया कि
वह भीड़ से होशियारी के साथ गाड़ी निकालता हुआ डायमण्ड होटल की
तरफ बढ़ रहा है।

डायमण्ड होटल शहर के सबसे ज्यादा घने बाजार में था और औसत दर्जे के होटलों में माना जाता था। बाहर से आनेवाले मामूली सेल्समैन और पुराने ढंग के व्यापारी ही वहाँ आकर रुकते थे और उसे किसी भी तरह आधुनिक फैशनेबुल होटलों में शुमार नहीं किया जा सकता था। होटल बाजार की सड़क से हटकर एक छोटे-से पार्क के सामने था। उसकी तिमंजिली इमारत की नीचे की मंजिल में रसोईघर से उड़नेवाली गन्धों के फैलने का बराबर अहसास होता रहता था।

उसने अपनी गाड़ी होटल से लगभग सौ गज पहले ही खड़ी कर ली और होटल के पास आ गया। अजीतसिंह की कार उसे इमारत के सामने, सड़क के दूसरी ओर खड़ी मिली।

होटल के पोर्टिको के पास ही बरामदे से लगा हुआ एक छोटा-सा हॉल था जिसमें काउण्टर के पीछे कोई कर्मचारी बैठा था। हरिश्चन्द्र ने उससे पूछा, "मि० अजीतसिंह किस कमरे में हैं ?"

"यहाँ कोई अजीतसिंह नहीं है।"

हरिश्चन्द्र थोड़ी देर चुप रहा, फिर बरामदे में चला आया।

बरामदे में आगे बढ़कर वह उस कमरे के पास पहुँचा जिसके सामने, सड़क के उस पार अजीतसिंह की कार खड़ी थी। दरवाजे के पास वह थोड़ी देर खड़ा रहा। कुछ ही देर में उसके कदम उसे निरुद्देश्य इधर-उधर भट-
काने लगे। वह बरामदे का चक्कर लगाता ऊपर की मंजिल में चला गया
लगभग दस मिनट वह ऊपर के बरामदों में टहलता रहा, फिर बिना किसं
से कोई बात किये नीचे उतर आया। टहलते हुए वह फिर उसी कमरे ं
पास पहुँचा जिसके सामने कुछ दूरी पर अजीतसिंह की कार खड़ी थी। लेकि
एक बैरे को अपनी ओर आता देख कुछ आगे बढ़ गया।

बैरा एक ट्रे पर दो प्लेटों में खाने का सामान, अनन्नास के रस

एक गिलास, एक गिलास में ह्विस्की और सोडे की बोतल लेकर आ रहा था। उसने हरिश्चन्द्र की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक हाथ से ट्रे को मुश्किल से सँभालते हुए, दूसरे हाथ से उसने दरवाजे पर दस्तक दी।

हरिश्चन्द्र का दिल धड़कने लगा। उसने सोचा—अजीतसिंह अब शायद आसानी से मिल जायेगा। किस्मत की खूबी ! तभी उसके मन में एक कराह-सी उठी—"मैं कितना बदकिस्मत हूँ !"

कमरे के अन्दर से किसी ने अंग्रेजी में कहा, "आ जाओ।"

यह सचमुच ही अजीतसिंह की आवाज थी।

इस वक्त सात बज गये थे और दिन की रोशनी खत्म हो चली थी। हरिश्चन्द्र और आगे बढ़कर बरामदे के कोने में पहुँच गया और वहाँ धुँधलके में बैरे के बाहर आने का इन्तजार करता रहा।

थोड़ी देर में बैरा खाली ट्रे लेकर वापस चला गया। उसके बरामदे से गायब होते ही हरिश्चन्द्र तेजी से कमरे के सामने आ गया। उसने आजमाकर देखा, दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था।

अचानक दरवाजा खोलते हुए उसने भर्राई आवाज में कहा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

अन्दर स्त्री एक आरामकुर्सी पर पड़ी हुई थी। उसके हाथ में अनन्नास के रस का गिलास था। अजीतसिंह दरवाजे के पास खड़ा हुआ ड्रेसिंग टेबुल के सामने अपने जिस्म पर पाउडर छिड़क रहा था। ह्विस्की का गिलास ड्रेसिंग टेबुल पर ही था। वह अभी-अभी नहाकर बाहर आया होगा, तभी केवल पायजामा पहने था। तौलिया जमीन पर पड़ा था। कमरे का माहौल कुछ सस्ता-सा, कुछ अजीब-सा था।

हरिश्चन्द्र को दरवाजे पर देखते ही स्त्री की निगाह एक जगह अचल-सी होकर रह गयी। वह जगह हरिश्चन्द्र का दायाँ हाथ थी। उसमें एक पिस्तौल दिखायी दे रही थी। वह चीखी, पर चीख पूरी नहीं निकली। अजीतसिंह ने घूमकर देखा और उछलकर वह स्त्री की तरफ बढ़ा। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "खबरदार ! गोली मत चलाना। पहले मेरी बात…"

पर स्त्री की अधूरी चीख ने ही हरिश्चन्द्र के सोचने की रही-सही ताकत खत्म कर दी थी। उसका सिर घूमने लगा था। उसे कुल इतना दिखायी दिया कि अजीतसिंह एक हाथ से स्त्री को बाथ-रूम में ढकेल रहा है और उसका पैर एक कुर्सी को उसकी ओर उछालने के लिए बढ़ रहा है।

पहली गोली इतने नजदीक होने के बावजूद दीवाल से जाकर टकराया। री गोली के चलते ही अजीतसिंह गिर गया। रूबी बाथरूम का दर-जा मजबूती से पकड़कर खड़ी रही। उसने अपने को बचाने की कोशिश हीं की। सिर्फ चीखकर कहा, "तुमने इसे मार डाला है।"

वह तीसरी गोली नहीं चला सका। बरामदे में दौड़ते हुए पाँवों की ावाजें फैलने लगी थीं और शायद चारों ओर लोगों ने जोर-जोर से चल्लाना शुरू कर दिया था। भड़भड़ करके खुलते हुए दरवाजे। ऊपर की ंजिलों से उठनेवाली पुकारें। अचानक कहीं टेलीफोन की घण्टी बजने लगी। हरिश्चन्द्र को लगा जैसे वह आवाजों के एक उफनते समुद्र में फँस गया है और उसकी लहरें उसे उछाल रही हैं, गिरा रही हैं।

उसने पिस्तौल रूबी की ओर फेंक दी और बोला, "उसमें अभी दो गोलियाँ बाकी हैं। अच्छा होगा, तुम अब मुझे शूट कर दो!"

तीन

दिन के बारह बजे थे। अप्रैल के आखिरी दिन थे और हल्की-सी लू चलने लगी थी।

लखनऊ की कैसरबाग कोतवाली। उसके एक छोटे-से कमरे में एक पुलिस इंस्पेक्टर बैठा था। इंस्पेक्टर के आगे लकड़ी की एक पुरानी मेज पड़ी थी, जिस पर एक बेंत और एक अखबार के अलावा कुछ भी न था। मेज के पास चार कुर्सियाँ रखी थीं। एक ओर दीवार से सटी हुई लकड़ी की एक बेंच। कमरे की दीवारें, एक कैलेण्डर को छोड़कर, बिल्कुल सूनी थीं। कैलेण्डर में एक शेर का फैला हुआ मुँह अपने भयानक जबड़ों और दाढ़ों के साथ कमरे में घुसते ही लोगों का स्वागत करता था।

पुलिस इंस्पेक्टर इस वक्त अपने एक सब-इंस्पेक्टर से बात कर रहा था। सब-इंस्पेक्टर एक कुर्सी का सहारा लेकर खड़ा हुआ था और कह रहा था, "अखबारों ने डायमण्ड होटल के गोलीकाण्ड पर काफी विस्तार से लिखा है और तअज्जुब की बात तो यह है कि लगभग सभी ने डायमण्ड होटल के बारे में राय दी है कि वहाँ व्यभिचार और अपराधों का सबसे बड़ा अड्डा है।"

इंस्पेक्टर के बाल कनपटियों पर सफेद हो रहे थे, उसका चेहरा पतला और आँखें बड़ी-बड़ी थीं। जब वह मुसकराता तब आँखों की चमक बढ़

[illegible] अपनी आँखों से हँसता उसने कहा, "अखबारों की राय शायद गलत भी नहीं है, क्यों बेटे ?" उस आँखों की चमक बढ़ गयी।

सब-इंस्पेक्टर ने गम्भीरता से कहा, "हमें डायमण्ड होटल के बारे में ज्यादा पता नहीं है चचा, वह दूसरे थाने में पड़ता है। पर मेरा ख्याल है, उसका रिकार्ड काफी साफ-सुथरा है।"

इंस्पेक्टर का रिटायरमेण्ट नजदीक था। उसके तजुर्बे की दाद देते हुए, उसके साथवाले और मातहत उसे चचा कहते थे। अपने से छोटों को बेटा कहने की उसे आदत पड़ गयी थी। कभी-कभी वह कम उम्रवाले अपने से ऊँचे अफसरों को भी बेटा बना देता, बाद में माफी माँगता था। हँसी-मजाक के बावजूद उसकी गिनती होशियार इंस्पेक्टरों में थी।

उसने डायमण्ड होटल के रिकार्ड के बारे में कोई राय नहीं दी। कुछ रुककर सब-इंस्पेक्टर ने नीचे से एक अखबार निकालकर उसे दिखाया। पूछा, "यह खबर तो आपने पढ़ ही ली होगी, चचा ?"

चचा ने सिर हिलाकर 'हाँ' कहा। सब-इंस्पेक्टर बोला, "इसने अजीत-सिंह की पिछली जिन्दगी पर बहुत-सी बातें लिखी हैं। साले को धोकर रख दिया है। लखनऊ में आकर बसने के पहले वह बम्बई में क्या करता रहा, इस पर कुछ मजेदार बातें भी बतायी गयी हैं। अगर अजीतसिंह जिन्दा रहता तो मानहानि का मुकदमा चलाने की नौबत आ सकती थी।"

"पर मुर्दे बोल नहीं सकते बेटा, यही गनीमत है।" इंस्पेक्टर ने हँस-कर कहा, "तुम यह अखबार मौज से पढ़कर मजा लेते रहो।"

सब-इंस्पेक्टर कहता रहा, " 'जनक्रान्ति' के नाम से अजीतसिंह जो साप्ताहिक पर्चा निकालता था, उसमें एक बार इस अखबार को खुलकर गालियाँ दी गयी थीं। हो सकता है कि उन्होंने अजीतसिंह के बारे में तभी पूरी जानकारी हासिल की हो। वरना अजीतसिंह की पिछली जिन्दगी के बारे में लोगों को बहुत कम मालूम है।"

इंस्पेक्टर कुछ देर खामोशी से एक अखबार के पन्ने उलटता रहा। फिर पूछा, "पोस्टमार्टम की रिपोर्ट कब तक आ जायेगी बेटे ?"

"लाश साढ़े आठ बजे पोस्टमार्टम के लिए भेजी गयी थी। सर्जन ने ग्यारह बजे आने का टाइम दिया था। घण्टे-दो घण्टे में हमें रिपोर्ट मिल जानी चाहिए।"

ग्रौपचारिक ही है। मामला बिल्कुल साफ है। बाद में चाहे बदल जाये, पर हरिश्चन्द्र अभी तक तो मान ही रहा है कि गोली उसी ने चलायी थी।"

"फिर भी बेटे," इंस्पेक्टर ने कहा,"तुम्हारी दौड़-धूप कम नहीं होती। यह हत्या सोच-समझकर, पहले से तय करके की गयी थी और इसके लिए अलग से पूरा-पूरा सबूत आना चाहिए। समझे ?"

"उसे देख लिया गया है चचा। हत्या का हथियार .२५ बोर का एक इटैलियन पिस्तौल है। हरिश्चन्द्र के पास इसका लाइसेन्स है। वह यह पिस्तौल लेकर होटल तक गया था। ऐसी कोई वजह नहीं कि वह अपने बचाव के लिए इसे लेकर चल रहा हो। वह होटल जाने के पहले अजीतसिंह के घर भी गया था। उसके नौकर का बयान लिया जा चुका है। उसका कहना है कि हरिश्चन्द्र ने उसी से मालूम किया कि अजीतसिंह डायमण्ड होटल में है। इसमें कोई शुबहे की गुंजायश नहीं कि दोपहर के बाद से ही वह अजीतसिंह की हत्या की योजना बना रहा था। यही नहीं, उसने डायमण्ड होटल में अपनी पत्नी रूबी को एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई पाया था। उसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि अजीतसिंह के साथ वह किसी ऐसी हालत में थी कि हरिश्चन्द्र पर एकदम से पागलपन सवार हो जाता और वह गोली चला देता। हरिश्चन्द्र इकबाल न करे तब भी यह दफा ३०२ का बहुत अच्छा केस है। अभियुक्त के बचने का कोई सवाल न उठना चाहिए।"

इंस्पेक्टर ने पूरी बात सुनकर पूछा, "इन दोनों के घरों की तलाशी ली गयी है या नहीं ?"

सब-इंस्पेक्टर ने कुछ हिचककर कहा, "इसकी भी जरूरत होगी चचा ?"

"तुम बेटे, बछेड़ों की तरह कुलाँचें ही भरते रहोगे, कभी कुछ सीखोगे नहीं !" चचा गम्भीर हो गये। बोले, "सुनो बेटे, आकस्मिक उत्तेजना की थ्योरी पर अभियुक्त की ओर से हत्या के आरोप को हल्का कराया जा सकता है। हो सकता है कि कल हरिश्चन्द्र को अपने घर में या और कहीं कोई ऐसी बात मालूम हुई हो—चिट्ठी या फोटो—जिसकी वजह से वह अपना विवेक खो बैठा हो। रूबी और अजीतसिंह के सम्बन्धों की पूरी-पूरी जाँच करना जरूरी है।"

इंस्पेक्टर ने फिर पूछा, "और रूबी का बयान ?"

"अभी नहीं लिया जा सका है। कल रात वह अस्पताल भी गयी थी,

फिर यहाँ थाने पर हरिश्चन्द्र की कोठरी के पास काफी देर खड़ी रही। बाद में वह फिर अस्पताल गयी। वह कुछ भी बोल नहीं रही थी। अब भी वह सदमे की ऐसी हालत में है कि अभी उससे ठीक से बात नहीं की जा सकती। उसके एक रिश्तेदार आधी रात के बाद बड़ी कोशिश करके उसे अपने साथ ले जा पाये हैं।"

इंस्पेक्टर ने धीरे-से सिर हिलाया और अखबार के पन्ने आलस के साथ उलटने लगा।

सड़क पर इतनी गर्मी के बावजूद कोई जुलूस निकल रहा था। लोग नारे लगा रहे थे। सब-इंस्पेक्टर ने भौहें सिकोड़ी और कहा, "अब तो कारपोरेशन के चुनाव के सिर्फ तेरह दिन रह गये हैं। शोरगुल बढ़ता ही जायेगा। साले पूरे शहर को कबाड़ी बाजार बनाये हुए हैं।"

अचानक इंस्पेक्टर ने पूछा, "अजीतसिंह बम्बई छोड़कर कब आया था ?"

"लगभग दस साल हुए।" सब-इंस्पेक्टर ने रुककर बात शुरू की, "इस समय उसकी उम्र, जैसा कि अखबार में दिया है, अड़तालीस साल की थी। वह मेरठ का रहनेवाला था और इक्कीस साल की उम्र में ही बम्बई चला गया था। यह तो आपने भी देखा होगा, वह अब भी काफी खूबसूरत और तन्दुरुस्त था। जवानी के दिनों में तो···"

सब-इंस्पेक्टर ने रुककर फिर अपनी बात शुरू की, "बम्बई में उसने शुरू में आठ-दस फिल्मों में काम भी किया था, दो फिल्मों में तो उसे बाकायदा हीरो का रोल मिला था···आपने तो चचा, वे फिल्में शायद देखी भी हों, आज से पचीस साल पहले की फिल्में। मैं तो तब बहुत ही छोटा था, मेरी उम्र फिल्म देखने लायक नहीं थी···। फिल्मों में उसका नाम अजीत-सिंह नहीं, सन्तोषकुमार हुआ करता था।"

इंस्पेक्टर ने कहा, "सन्तोषकुमार की फिल्में मैंने देखी थीं। कोई ऐसा तो खूबसूरत दिखता नहीं था, पर तुम लोगों के स्टैण्डर्ड से·· बस···ठीक ही था।" उसकी आँखें चमकने लगीं, "उन दिनों तो पृथ्वीराज, चन्द्रमोहन, सुरेन्द्र, अशोककुमार वगैरह का जमाना था। सन्तोषकुमार को कौन घास डालता ?"

"जो भी हो," सब-इंस्पेक्टर ने कहा, "बम्बई में रहते हुए तीन-चार साल बाद उसने ऐक्टिंग छोड़ दी और कुछ सेठों की दोस्ती से फिल्म-प्रोडक्शन का धन्धा शुरू किया था। पर इस काम में भी वह जमकर नहीं

रहा, कुछ दिनों तक उसने वहाँ से सिनेमा की एक मासिक पत्रिका भी निकाली। समझा यही जाता है कि वह बम्बई में बराबर अमीर लोगों की सोहबत में रहा, साले ने खूब शराब पी और रेस के मैदान में जुआ खेला। उसने शादी नहीं की थी, उसका कोई नजदीकी रिश्तेदार भी नहीं है, सिर्फ एक चचेरी बहन को छोड़कर, जो मेरठ में रहती है। अजीतसिंह के नौकर से पता लेकर उसे इस दुर्घटना की खबर फोन द्वारा कर दी गयी है।"

इंस्पेक्टर ने कहा, "अजीतसिंह के बारे में इतना जानना काफी नहीं है बरखुरदार। जरा और गहरे जाकर पता लगाओ!"

"बम्बई का तो इतना ही पता लग सका है। लगभग दस साल हुए वह लखनऊ आ गया था। उसके पास जरूर काफी रुपया होगा, क्योंकि एक साल के भीतर ही उसने एक प्रेस खरीद लिया था। उसके पहले वह डायमण्ड होटल में रहता था, प्रेस ले चुकने पर उसने उसकी इकमंजिली इमारत पर दूसरी मंजिल अपने रहने के लिए बनवा ली थी और आकर वहीं रहने लगा था।

"साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' तो आप भी पढ़ते रहे हैं···" सब-इंस्पेक्टर ने हँसकर अपनी बात खत्म की, "एक बार जब आप चौक थाने में थे, उसने आपकी भी तारीफ की थी।"

"इसमें कौन-सी नयी बात थी?" इंस्पेक्टर ने कहा, "सभी शोहदे मेरी तारीफ करते रहते हैं।"

साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' दरअसल राजनीति के सभी नेता, ऊँचे अफसर और व्यापारी पढ़ते थे। इस पर्चे का जनक्रान्ति से कोई सम्बन्ध न था। इसमें शहर की सिर्फ सनसनीखेज खबरें छपती थीं और प्रायः ऐसा होता था कि एक सप्ताह में जिसके खिलाफ कोई अपमानजनक खबर छपती, फिर उसी के बारे में दो-तीन सप्ताह बाद कोई बहुत अच्छी खबर छप जाती थी। अजीतसिंह को शहर के सभी महत्त्वपूर्ण लोग जानते थे और कोई उसके साप्ताहिक अखबार से उलझना नहीं चाहता था।

सब-इंस्पेक्टर ने फिर कुछ सोचकर कहा, "एक बात और है। आज से दस साल पहले जब अजीतसिंह ने यहाँ आकर अपना प्रेस चलाया तो शुरू-शुरू में सोसाइटी के ऊँचे वर्गों में उसकी बड़ी पूछ हुई थी। तब तक उसके बारे में फिल्म लाइन के काम की हवा बँधी थी। खास तौर से वे लोग, जो उसकी उम्र के थे, उसे एक ऐक्टर या प्रोड्यूसर के रूप में देखते थे। यहाँ की दर्जनों महिलाओं ने उसे हाथों-हाथ लिया था और एकाध

परिवारों में उसे लेकर झगड़े-फसाद भी हुए थे।"

इंस्पेक्टर ने आँखें मूँदे-मूँदे सिर हिलाकर कहा, "मैं जानता हूँ।" फिर उसने आँखें खोलीं और बोला, "रुबी का बयान काफी होशियारी से लेना।"

तब तक एक जीप कोतवाली के अन्दर आयी। ड्राइवर उसे काफी रफ्तार से लाया था। इंस्पेक्टर के कमरे के सामने आकर उसने एकदम से ब्रेक लगाया। जीप रुक गयी, पर उससे हल्की-सी धूल चारों ओर उड़कर फैल गयी। इंस्पेक्टर ने नाक सिकोड़कर दरवाजे के बाहर देखा। जीप में कई झण्डे लगे हुए थे और जाहिर था कि कारपोरेशन के चुनाव-अभियान में उसका इस्तेमाल हो रहा है। उसमें सात-आठ आदमी आलू के बोरों की तरह लदे हुए थे। तीन आदमी उतरकर कमरे के अन्दर आये। उनमें जो सबसे आगे था वह सिल्क का कुर्ता और कीमती धोती पहने था। उसकी अँगुलियों में दो-तीन अँगूठियाँ थीं। आँखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा। होंठों पर पान की लाली। उम्र चालीस के पार हो चुकी होगी। रंग गोरा था, कद छोटा और जिस्म दुबला। कुल मिलाकर एक बड़े ही मधुर और आकर्षक व्यक्तित्व का आभास होता था उसे देखकर। उसके पीछे जो दो आदमी थे वे काफी लम्बे-चौड़े और तन्दुरुस्त थे और शक्ल से बाजारू किस्म के आदमी जान पड़ते थे।

इंस्पेक्टर ने उठकर सबसे आगेवाले आदमी से हाथ मिलाया और कहा, "बैठिए, शान्तिप्रकाश जी! इस धूल-धक्कड़ में कैसे तकलीफ की?"

वे सब कुर्सियों पर बैठ गये। शान्तिप्रकाश ने हँसकर कहा, "चुनाव। आपके हर सवाल का यही जवाब है।"

"आप तो सुना था" मेयर के पद के लिए खड़े हो रहे हैं?"

शान्तिप्रकाश ने कहा, "पर वह तो आगे की बात है, पहले हमारे कारपोरेटर तो शान्ति से चुन लिये जायें।"

"जहाँ शान्तिप्रकाश खुद मौजूद हैं, वहाँ शान्ति तो रहेगी ही।" इंस्पेक्टर ने हँसकर कहा। फिर पूछा, "क्यों, कोई दिक्कत है?"

वह बोले, "अभी ही मेरे एक आदमी ने गोलागंज की चौकी पर रिपोर्ट दर्ज करायी है। चुनाव के प्रचार में वह उधर गया था। आप जानते ही हैं उधरवाले गुण्डों को। मारपीट कर बैठे। अभी कोई गिरफ्तार नहीं हुआ है। इधर से निकल रहा था। सुना, आप इस वक्त यहाँ हैं तो सोचा आपके कान में भी बात डाल दूँ।"

स्पेक्टर ने कहा, "अभी फोन करके चौकी से पूछे लेता हूँ।"

ान्तिप्रकाश और उनके आदमी उठ खड़े हुए। कमरे से बाहर ते-निकलते वे ठिठककर खड़े हो गये। बोले, "सुना है अजीतसिंह खत्म या ?"

इंस्पेक्टर ने कहा, "जी हाँ। डॉक्टरों ने कोशिश तो बहुत की, पर रा बचा नहीं। आज सवेरे उसका देहान्त हो गया।"

शान्तिप्रकाश ने अफसोस के साथ कहा, "कल तो सुना था, ऑपरेशन के गोली निकाल ली गयी थी और उम्मीद थी कि वह बच जायेगा।"

"हाँ, उम्मीद तो हो गयी थी। दरअसल गोली जिगर में नहीं पहुँची , और डॉक्टर का ख्याल था कि मरीज बच सकता है।"

शान्तिप्रकाश ने पूछा, "फिर हो क्या गया ?"

"यह तो भगवान ही बता सकता है।" इंस्पेक्टर ने कहा, "आखिर पेट ं गोली गयी थी। ऐसे मामलों में बचना मुश्किल ही होता है।"

शान्तिप्रकाश कहने लगे, "मैं तो हमेशा से अजीतसिंह की हिम्मत और ईमानदारी का कायल था। उसके साप्ताहिक पत्र 'जनक्रान्ति' को मैं हमेशा पढ़ता था। समाज की गन्दगी और भ्रष्टाचार का इतनी निर्भीकता से मुकाबला करनेवाले पत्रकार कितने हैं ?"

इंस्पेक्टर ने अंग्रेजी में कहा, "एक भी नहीं।" फिर उसने अपने सब-इंस्पेक्टर की ओर देखा। वह अपनी मुसकान छिपाने के लिए पीछे दीवार की ओर देखने लगा।

शान्तिप्रकाश ने उनसे विदा ली।

इंस्पेक्टर ने कलाई की घड़ी देखी, एक बजनेवाला था। कहा, "अभी पोस्टमार्टम रिपोर्ट नहीं आयी !"

"मैंने हेड-कांस्टेबल दाताराम को तैनात कर दिया है। वह उसकी नकल लेकर ही आयेगा।" सब-इंस्पेक्टर ने कहा, "आप चाहें तो कोर्ट हो आयें। मैं वहाँ फोन से बता दूंगा।"

इंस्पेक्टर ने कहा, "हरिश्चन्द्र को हवालात से यहीं बुलवा लो। मैं उससे दो-एक बातें कर लूं, तब जाऊँगा।"

थोड़ी देर में दो कांस्टेबुल हरिश्चन्द्र को लेकर कमरे में आये। उसकी शकल से लगता था, एक दिन में ही उसकी उमर में बीस बरस जुड़ गये हैं पर आँखों से पता चलता था, वह शान्त है और आनेवाली मुसीबतों का सामना करने को तैयार है। इंस्पेक्टर ने उसे कुर्सी पर बैठने का इशा

किया और धीरे-से कहा, "आपको मालूम ही होगा, अजीतसिंह को बचाया नहीं जा सका। वह आज सुबह आठ बजे मर गया।"

हरिश्चन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया, पर उसकी चेष्टा से लगा कि उसे यह खबर मिल चुकी है। इंस्पेक्टर ने ही कहा, "कल की घटना की खबर अखबारों में भी आ चुकी है।" उसने मेज पर पड़े हुए अखबारों की ओर इशारा किया, "आप देखना चाहें तो देख लें।"

हरिश्चन्द्र ने बहुत धीरे-से कहा, "शुक्रिया, उसमें मेरी दिलचस्पी नहीं है।"

इंस्पेक्टर थोड़ी देर हरिश्चन्द्र की ओर देखता रहा, पर उसने अपनी निगाह ऊपर नहीं उठायी। वह जमीन पर आँख गड़ाये रहा। तब उसने पूछा, "आपकी शादी कब हुई थी?"

"सात साल पहले।" कहकर हरिश्चन्द्र ने इंस्पेक्टर की ओर देखा और शान्त स्वर में कहा, "देखिए, जो कुछ हुआ है उसकी पूरी इत्तला आपको है ही। उसके बाद भी क्या इस सवाल-जवाब की कोई जरूरत रह जाती है?"

इंस्पेक्टर ने मुलायमियत से जवाब दिया, "सुनो बेटे," आदत के अनुसार उसे 'बेटा' कहकर वह थोड़ा हिचका, पर उसी लपेट में कहता रहा, "तुम मेरी बातों का जवाब न देना चाहो तो न दो। कानून तुम्हें हक देता है कि तुम न चाहो तो कोई भी बयान न दो।"

कुर्सी पर थोड़ा खिसककर उसने कहा, "तुम्हारी ओर से कोई वकील किया जा चुका है, या नहीं?"

हरिश्चन्द्र ने कहा, 'वकील का इन्तजाम हो चुका होगा, पर मुझे वकील की जरूरत नहीं, और न बयान देने में ही मुझे कोई हिचक है। पर जो बात मैं एक बार कह चुका हूँ, उसे बार-बार कहलाने की क्या जरूरत है?"

कमरे में थोड़ी देर शान्ति रही। फिर इंस्पेक्टर ने कहा, "मैं सिर्फ एक बात जानना चाहता था, तुम्हारी मिसेज से अजीतसिंह की पहली बार मुलाकात कब हुई थी?"

हरिश्चन्द्र ने कुर्सी पर बैठने का ढंग बदला। थोड़ी देर वह सोचता रहा। फिर बोला, "आज से दो साल पहले वह मेरे घर आया था—रत्ना के साथ। रत्ना उसकी चचेरी बहन है और मेरठ में लड़कियों के एक कालिज में पढ़ाती है, शादी के पहले रूबी भी उसी कालिज में पढ़ाती थी।

रत्ना से उसकी बड़ी गहरी दोस्ती थी, और शायद अब भी है। अजीतसिंह को मैं खुद ज्यादा घनिष्ठता से नहीं जानता। रत्ना कुछ दिनों के लिए लखनऊ आयी थी और उसके साथ रुकने के बजाय रूबी के कारण वह हमारे यहाँ रुकी। तभी अजीतसिंह पहली बार हमारे घर आया था। उसके बाद वह बराबर हमारे यहाँ आता-जाता रहा, शायद मेरी गैरमौजूदगी में भी आता रहा।

"लगभग साल-भर से उसने हमारे यहाँ आना-जाना काफी कम कर दिया था, शायद यह समझकर कि मैं उसे बहुत पसन्द नहीं करता। पर मुझे मालूम है कि रूबी उससे बराबर मिलती रहती थी।" फिर कुछ रुक-कर हरिश्चन्द्र ने पूछा, "आप कुछ और जानना चाहते हैं ?"

इंस्पेक्टर के कुछ कहने के पहले ही एक कांस्टेबुल हाथ में टेलीफोन लिये कमरे के अन्दर दाखिल हुआ। उसने फोन का कनेक्शन दीवार के एक सॉकेट में लगाकर उसे मेज पर रख दिया और रिसीवर उसके हाथ में देकर बोला, "आपका फोन है। हेडकांस्टेबुल दाताराम बोल रहे हैं।"

वह सेल्यूट करके कमरे के बाहर चला गया। इंस्पेक्टर ने फोन पर अपनी चुस्त आवाज में कहा, "हलो।" उधर हेडकांस्टेबुल दाताराम ने कुछ कहना शुरू किया। अचानक इंस्पेक्टर ने तीखेपन से पूछा, "हलो···हलो··· यह क्या मामला है ? फिर से बताओ ?"

सब-इंस्पेक्टर भी यह समझकर कि फोन पर कोई महत्त्व की बात कही जा रही है, अपनी कुर्सी पर आगे बढ़ आया। इंस्पेक्टर का चेहरा गम्भीर हो गया था। हरिश्चन्द्र ने उसे घूरकर देखा। इंस्पेक्टर तीन मिनट तक उधर की बात सुनता रहा। बीच में 'हाँ'—'ठीक'···'अच्छा' के अलावा उसने कुछ भी नहीं कहा। पूरी बात सुनकर वह बोला, "ठीक है दाताराम, अब तुम्हें रिपोर्ट की नकल के लिए वहाँ रुकने की जरूरत नहीं। तुम सीधे यहीं आ जाओ।"

रिसीवर को फोन पर रखकर वह कुछ देर चुप रहा। फिर उसने जेब से रूमाल निकाला और अपना चेहरा पोंछा।

सब-इंस्पेक्टर को अपनी ओर देखता पाकर उसने कहा, "पोस्टमार्टम हो चुका है। सर्जन की राय है कि अजीतसिंह की मृत्यु पिस्तौल की गोली से नहीं हुई है।"

सब-इंस्पेक्टर ने चुपचाप इस सूचना को समझने की कोशिश की। हरिश्चन्द्र ने चौंककर उसकी ओर देखा। कुछ रुककर सब-इंस्पेक्टर ने

पूछा, "फिर···मौत की कौन-सी वजह हो सकती है? हार्टफेल? हैमोरेज?···" वह भौंहें उठाकर उसकी ओर देखता रहा।

इंस्पेक्टर होंठ दबाकर कुछ सोच रहा था। उसने मेज की ओर देखते हुए कहा, "अजीतसिंह को जहर दिया गया है।"

"जहर!" हरिश्चन्द्र और सब-इंस्पेक्टर ने चौंककर लगभग साथ-साथ इस शब्द को दोहराया।

"हाँ, जहर! जिन्दगी इसी को कहते हैं बेटे।" थोड़ी देर सन्नाटा रहा। "उसे अस्पताल में ही किसी ने जहर दिया होगा। डॉक्टर जहर की किस्म के बारे में कोई राय नहीं कायम कर सका है। उसके लिए 'केमीकल एनालिसिस' जरूरी होगा। पर उसका ख्याल है कि उसे अफीम-टिंक्चर पिलायी गयी है।"

"चचा, अब तो हमें···"

"तुम्हें अब कुछ नहीं करना है, बेटे। मुकदमा तुम्हारी हैसियत से ऊपर उठ गया है। यह केस अब सी० आई० डी० के सुपुर्द होगा।"

वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। बोला, "चलो, एस० पी० साहब से इसी वक्त बात करनी होगी। कागजात जल्दी से तैयार कर लो।"

हरिश्चन्द्र कुर्सी पर गुमसुम बैठा हुआ था। इंस्पेक्टर ने उससे कहा, "आप अपने वकील को बुलाकर अपने लिए जमानत की कोशिश कर लें। हो सकता है कि आप पर अब हत्या के बजाय, हत्या की कोशिश का ही जुर्म रह जाये।"

एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर मजाक का पुराना धूप-छाँही रंग फैल गया। "तुम्हारी किस्मत अच्छी है बेटे।"

चार

सी० आई० डी० का दफ्तर। चारों ओर लगभग पाँच फुट ऊँची चहारदीवारी के अन्दर खड़ी हुई यह एक खूबसूरत इमारत थी। सामने चार-पाँच एकड़ जमीन। उसके एक हिस्से में यूकेलिप्टस का एक घना बाग, चहारदीवारी के अन्दर किनारे-किनारे गुलमोहर और अमलतास के पेड़ों की दोहरी कतारें। अप्रैल के अन्तिम दिनों में दोनों ही प्रकार के पेड़ लाल और पीले फूलों से ढके हुए थे। इमारत के पास लगभग एक एकड़ का विस्तृत लॉन था। उसी में दोनों सिरों पर 'टेनिस कोर्ट' बनाये गये थे। इस

दुमंजिला इमारत के सामने के हिस्से की दीवारों पर कई तरह की लताएँ चढ़ायी गयी थीं। पोर्टिको का बहुत-सा हिस्सा बेगनबेलिया के सुर्ख फूलों से ढका हुआ था।

कम्पाउण्ड में आते ही भारतीय महाराजाओं के बीते हुए वैभव की याद आने लगती थी। पर कुछ और अन्दर घुसने पर पोर्टिको में आते ही कमरों से उठनेवाली धीमी आवाजों को सुनकर और सधे हुए कदमों से बरामदों में चलते हुए चुस्त आदमियों को देखकर मालूम हो जाता था, यह किसी रईस का आरामगाह नहीं है, बल्कि वह जगह है जिसकी याद करके बड़े से बड़े अनुभवी अपराधी भी एक बार काँप जाते हैं।

इमारत की दूसरी मंजिल पर सामने की ओर बरामदे से मिला हुआ एक कमरा था। उस पर तख्ती लगी थी—विद्यानाथ सिन्हा, सुपरिण्टेण्डेण्ट ऑफ पुलिस (क्राइम ब्रांच)। विद्यानाथ इस समय फोन पर सेण्ट्रल अस्पताल के सुपरिण्टेण्डेण्ट डा० चटर्जी से बात कर रहे थे। अजीतसिंह की मृत्यु सेण्ट्रल अस्पताल में ही हुई थी। विद्यानाथ के कमरे में अलावा उनके एक और आदमी मौजूद था। वह मँझोले कद का बलिष्ठ व्यक्ति था। उसका चेहरा भरा हुआ था और लगता था, वह हर बात पर आसानी से हँस सकता है। आँखें छोटी, पर असाधारण रूप से तेज। वह विद्यानाथ के सामने मेज के दूसरी ओर एक दफ्तरवाली कुर्सी पर बिलकुल सही ढंग से बैठा था। उसका नाम जे० ए० सिद्दीकी था और वह सी० आई० डी० का मशहूर इंस्पेक्टर था।

विद्यानाथ डॉ० चटर्जी से फोन पर बातें करते रहे, "···आश्चर्य है कि जब अजीतसिंह बेहोशी की हालत में था और उसकी हालत बराबर गिरती जा रही थी, किसी भी डॉक्टर को यह सन्देह नहीं हुआ कि उसे जहर दिया गया है···!"

फिर वह थोड़ी देर तक उधर से डॉ० चटर्जी की बात सुनते रहे, फिर बोले, "यह ठीक है, डॉक्टर। पर मुझे 'टॉक्सिकोलॉजी' का क-ख-ग सीखने की जरूरत नहीं। मैं जानता हूँ कि अफीम और उसके भिन्न-भिन्न रूपों का इन्सान पर क्या असर होता है, पर सुबह होने पर जब अजीतसिंह की नींद नहीं टूटी, तब किसी को तो शक होना ही चाहिए था!"

वह फोन पर थोड़ी देर चुप रहे, फिर हल्के ढंग से हँसकर बोले, "माफ करना डॉक्टर, मैं अभी किसी को दोष नहीं दे रहा हूँ। पर मेरे दिमाग में एक प्रतिक्रिया थी, उसे आपसे बता देना जरूरी समझा।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने फिर कहा, "वह ठीक है। अस्पताल के 'पैरा-मेडिकल स्टाफ' की कहीं न कहीं गलती और असावधानी तो थी ही। उनके खिलाफ आप जरूर कार्रवाई करें, पर मेरी राय है कि इधर चार-छह दिन रुके रहें। तब तक हम लोग शायद असलियत का पता लगा लेंगे। उस आधार पर असावधानी बरतनेवाले स्टाफ पर कार्रवाई करने का मसाला भी आपको मिल जायेगा।"

इस बार डॉ० चटर्जी काफी देर उधर से बोलते रहे। विद्यानाथ उनकी बातें ध्यान से सुनते रहे। अन्त में बोले, "यह ठीक है। इस सिलसिले में हर छोटी से छोटी घटना का और हर टाइम का ब्योरा आप तैयार करा लें। वैसे हमारे इंस्पेक्टर आपके जूनियर डॉक्टरों से मिलकर कुछ बातें नोट कर लाये हैं। उनके बारे में वह आपसे मिलकर जल्दी ही दुबारा बात करेंगे।"

इंस्पेक्टर सिद्दीकी ने इसी बीच एक पैड पर पेन्सिल से कुछ लिखकर विद्यानाथ के सामने रख दिया था। विद्यानाथ ने फोन पर बात करते-करते उस पर नजर डाली और बोले, "एक बात और है डॉक्टर। इंस्पेक्टर सिद्दीकी आपसे आज रात नौ बजे मिलने आयेंगे। आशा है आपको असुविधा न होगी। नहीं, अब तो छह बजनेवाले हैं। आधे घण्टे बाद ही उन्हें कहीं और जाना होगा। ठीक है। वह नौ बजे आपसे मिलेंगे।...शुक्रिया! ...उसे छोड़िए, सनसनी तो ऐसे मामलों में होती ही है। हम सभी भरसक कोशिश करेंगे। आपका स्टाफ निर्दोष है, तो अस्पताल की बदनामी कैसे होगी! अच्छी बात है। थैंक्स अगेन।"

फोन रखकर उन्होंने सिद्दीकी की ओर देखा। बोले, "डॉ० चटर्जी का कहना है कि मरीज सवेरे तक सोता रहा था। रात को एक बार बेहोशी टूटने के बाद उसे जब नींद आयी तब नर्सों को उसके बारे में इत्मीनान हो गया था। इसीलिए उसकी नब्ज आदि की परीक्षा फिर उस तरह नहीं हुई जैसे बेहोशी की हालत में की जा रही थी। सुबह साढ़े सात बजे उन्होंने देखा कि मरीज गहरी नींद में नहीं, बल्कि गहरी बेहोशी में है। उन्होंने उसी वक्त डॉक्टर को खबर की। पर तब तक काफी देर हो चुकी थी। आठ बजे तक वह मर गया। डॉ० चटर्जी खुद कल रात शहर से बाहर थे। वह आज ही दोपहर को लौटे हैं। यह मामला जूनियर डॉक्टरों के हाथों में था। उनका कहना है कि डॉ० मिश्रा को, जो सुबह उस वार्ड में ड्यूटी पर थे, मरीज के मरते-मरते शक हो गया था कि इसकी मृत्यु किसी असाधारण

कारण से हुई है। उसकी आँखों की पुतलियाँ सिकुड़-सी गयी थीं और मरते ही उसके नथनों पर हल्का-सा झाग दिखने लगा था। तभी डॉ० मिश्रा ने लाश को तत्काल पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया, सर्जन दास ने पोस्टमार्टम किया है। उनसे डॉ० मिश्रा ने अपना शुवहा वता भी दिया था। वहरहाल तुम्हें इन सवका वयान वहुत समझ-बूझकर लेना होगा।"

सिद्दीकी ने कहा, "ज्यादातर ये वातें मुझे मालूम हैं, सर ! आज ढाई वजे से पाँच वजे तक मैं अस्पताल ही में रहा हूँ। डॉ० चटर्जी को किसी भी मामले की निजी जानकारी नहीं, क्योंकि वह कल रात और आज सुवह अस्पताल में थे नहीं। मैंने अस्पताल के लगभग उन सभी लोगों से वात कर ली है जिनका इस घटना से सम्बन्ध हो सकता था। सिर्फ दो-तीन लोग छूटे हैं। आपकी इजाजत हो तो मैं शुरू से पूरी स्थिति वयान कर दूं। लिखित रिपोर्ट मैं वाद में पेश करूँगा।"

इसी वीच टेलीफोन का वजर वज उठा। विद्यानाथ ने रिसीवर पर अपने पी० ए० की वात सुनी और वोले, "मैं इस वक्त वात नहीं कर पाऊँगा। आधे घण्टे तक जिन्हें तुम वहुत लाजिमी समझते हो, उनका फोन छोड़कर मुझे कोई भी कॉल मत देना।" उसके वाद उन्होंने सिद्दीकी से कहा, "हाँ···तुम शुरू से वता रहे थे।"

सिद्दीकी ने कहा, "डायमण्ड होटल में कल शाम सात वजे के लगभग हरिश्चन्द्र ने अजीतसिंह पर गोली चलायी। उस पर .२५ वोर के पिस्तौल से हमला किया गया था। उस वक्त हरिश्चन्द्र कमरे के वाहरी दरवाजे पर था, अजीतसिंह कमरे के दूसरे सिरे पर वाथरूम के पास था और दोनों में कम से कम सत्रह फुट का फासला था। गोली अजीतसिंह को सामने से नहीं लगी। नहीं तो वह उसके पेट में घुसकर पीछे से निकल सकती थी। अजीतसिंह उस वक्त मुड़ रहा होगा। तभी गोली एक साइड से उसके पेट में घुसी और दूसरी ओर कूल्हे की हड्डी के पास फँस गयी। अजीतसिंह गोली चलते ही गिरकर वेहोश हो गया था। पर अस्पताल तक आते-आते उसे होश आ गया था। लगभग सात वजे उस पर हमला हुआ था। डायमण्ड होटल के मालिक ने उसी की कार पर रखकर उसे तत्काल सेण्ट्रल हॉस्पिटल भेजा। वहाँ वह सात वजकर पन्द्रह मिनट पर पहुँचा। एमर्जेन्सी में उसी समय प्राथमिक चिकित्सा करके सात पैंतीस पर उसकी स्क्रीनिंग की गयी। उसी वक्त उसका एक्स-रे भी लिया गया।

"एक्स-रे को देखकर सर्जन ने उसका ऑपरेशन करके गोली निकालने

का फैसला किया। ऑपरेशन के पहले डॉक्टर ने अजीतसिंह का बयान भी लिया है, जिसमें अजीतसिंह ने हरिश्चन्द्र को दोषी बताया है। उसे सात बजकर पचपन मिनट पर ऑपरेशन टेबल पर लाया गया। चूंकि वह होश में था और दर्द से कराह रहा था, इसलिए अनीस्थीसिया देकर ऑपरेशन किया गया। आपरेशन के दौरान मालूम हुआ कि उसका जिगर, तिल्ली और किडनी सुरक्षित है। छोटी आँतों को मामूली तौर से घायल करती हुई कूल्हे की ओर वह गयी थी। पर आँतें कई जगह जख्मी हुई थीं। ऑपरेशन में आँतों को सिलकर खून बहने से रोक दिया गया। गोली बाहर निकाल ली गयी। अजीतसिंह को ऑपरेशन थियेटर से सर्जिकल वार्ड में लगभग नौ बजे पहुँचाया गया।

"ऑपरेशन थियेटर से बाहर आकर सर्जन ने आशा प्रकट की कि मरीज बच सकता है। वार्ड में अजीतसिंह अनीस्थीसिया के असर से सवा ग्यारह बजे तक बेहोश रहा। सवा ग्यारह बजे के बाद उसे होश आया, तब कुछ बाहरी लोग उसे देखने भी गये। अस्पताल के नियमों के अनुसार जनरल वार्ड में मरीजों से उस वक्त नहीं मिला जा सकता था। मिलने के घण्टे मुकर्रर हैं। पर नियम का पालन नहीं किया गया। साढ़े ग्यारह बजे अजीतसिंह को फिर झपकी आ गयी, शायद वह आधी बेहोशी की हालत में भी रहा। इस हालत में वह सवेरे साढ़े सात बजे तक रहा। साढ़े सात बजे समझा गया कि वह बराबर डूब रहा है और बेहोशी गहरी होती जा रही है। अतः ड्यूटी से डॉ० मिश्रा को बुलाकर दिखाया गया। डॉ० मिश्रा अभी बिल्कुल ही नये हैं। उन्होंने उसे कोरामिन वगैरह दी और अपने सीनियर को बुलाया। पर उसके आते-आते सात बजकर बावन मिनट पर अजीतसिंह की मृत्यु हो गयी।

"रात को ऑपरेशन थियेटर से वार्ड के लाये जाने के बाद नर्स ने उसके टेम्प्रेचर, नब्ज आदि को आधे-आधे घण्टे पर देखा था और उसका रिकार्ड रखा था। पर लगता है कि उसके होश में आ जाने के बाद उन्होंने ढील डाल दी और उसे पिछली रात चुपचाप बेहोशी में, जिसे वे नींद समझे थे, पड़ा रहने दिया। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में डॉ० दास ने राय दी है कि उसे शायद अफीम टिंक्चर दी गयी थी। इसके बारे में अन्तिम राय लाश के 'विसिरा' की केमिकल अनालिसिस हो जाने के बाद ही कायम की जा सकेगी।

"दरअसल पोस्टमार्टम से प्रकट हो गया है कि ऑपरेशन का घाव

बिल्कुल ठीक था। उससे हैमरेज आदि नहीं हुआ। अनीस्थीशिया से मृत्यु होने का सवाल भी नहीं था। उसे रात को एक बार होश आ ही चुका था। पर लाश का पेट अन्दर से बुरी तरह कन्जेस्टेड था और डॉ० दास की राय में अफीम के जहर के सभी लक्षण लाश में मौजूद थे। मैंने अस्पताल में और उसके आसपास अपने आदमियों द्वारा उसी वक्त उन सभी सुरागों की खोज करायी थी, जिनका सम्बन्ध इस हत्या से हो सकता है। आधे घण्टे के दौरान सर्जिकल वार्ड के पास एक डस्टबिन में हमें एक छोटी-सी कत्थई रंग की शीशी मिली, जिसमें द्रव की एक-आध बूंद बाकी है। सूंघने से उसमें अफीम की गन्ध आ रही है। मैं समझता हूँ कि हत्यारे ने इसी शीशी से अजीतसिंह को ज़हर देकर वापस जाते हुए इसे डस्टबिन में डाल दिया होगा। इस शीशी में एक औंस के करीब द्रव आ सकता है। अजीतसिंह जिस हालत में था, उसमें उसे खत्म करने के लिए आधा औंस भी काफी था।...

"शीशी को हमने बाकायदा कब्जे में लेकर उसके द्रव की जाँच के लिए उसे भी केमिकल एक्जामिनर के पास भेज दिया है। कल सुबह तक शीशी की और विसेरा की जाँच होकर आ जायेगी। शीशी के चारों ओर कागज का एक लेबल चिपका है, जिससे लगता है कि पहले उसमें मल्टी-विटामिन गोलियाँ रखी जाती थीं। कागज की वजह से शीशी पर उँगलियों के कोई निशान नहीं हैं।"

सिद्दीकी बात करते-करते रुक गया। विद्यानाथ ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा, "मेरे टाइम की फिक्र न करो। मुझे अभी एक दूसरे मामले में आठ बजे तक रुकना है। अपनी बात जारी रखो।"

सिद्दीकी ने कहा, "सर्जिकल वार्ड एक इकमंजिली इमारत में है। उसके बीच से एक गैलरी जाती है। गैलरी के दोनों ओर दो बड़े-बड़े कमरे हैं। इन्हीं में दो सर्जिकल वार्ड हैं। पूरबवाला वार्ड मर्दों के लिए है, पश्चिमवाला औरतों के लिए। अजीतसिंह को मेल वार्ड के दक्खिन की तरफवाले कोने के बैड पर रखा गया था। वार्डों में उत्तर की तरफ से ही जाया जाता है। दक्खिन में, जहाँ हॉल खत्म होता है, लेवेटरी है। इस तरह इमारत के दक्खिनी हिस्से में, जहाँ गैलरी खत्म होती है, एक तरफ मर्दाने वार्ड की लेवेटरी है और एक तरफ जनाने वार्ड की। उनका एक-एक दरवाजा गैलरी में खुलता जरूर है, पर वह ज्यादातर अन्दर से बन्द रहता है। इस तरह उनमें कोई सीधे गैलरी से नहीं आ-जा सकता। किसी भी

लेवेटरी में जाने के लिए वार्ड के बीच से होकर जाना पड़ेगा। उस वक्त इसकी महमियत नहीं समझी गयी थी, पर सवेरे जब मेहतर मर्दाने वार्ड की लेवेटरी धोने के लिए आया तब उसे गैलरी की ओर का दरवाजा खुला हुआ मिला। ऐसा लगता है कि हत्यारा रात को किसी समय वार्ड में दाखिल हुआ है और अजीतसिंह को जहर देकर, बजाय उत्तर की ओर से वापस जाने के, लेवेटरी में चला गया है और वहाँ से अन्दर का दरवाजा खोलकर वार्ड के दूसरी तरफ निकल गया है। अस्पताल से बाहर जाते-जाते उसने जहर की शीशी डस्टबिन में फेंकी है।

"उत्तर ही की ओर, बरामदे के एक कोने में···" सिद्दीकी ने कागज पर पेन्सिल से नक्शा बनाते हुए कहा, "ड्यूटी-रूम है जिसमें वार्ड की असिस्टेण्ट मेट्रन या सिस्टर बैठती है। रात को दस बजे से सवेरे छह बजे तक एक सिस्टर और दो नर्सों की पूरे वार्ड में ड्यूटी रही थी। नर्सों को वार्ड के अन्दर रहना था और सिस्टर ज्यादातर ड्यूटी-रूम में रही। मुझे मालूम हुआ है कि सिस्टर, जिसका नाम मिस लायल है, बराबर ड्यूटी पर रही, पर दोनों जूनियर नर्सें साढ़े ग्यारह बजे के बाद, सब मरीजों के सो जाने पर अस्पताल में इधर-उधर गप लड़ाती रहीं। थोड़ी-थोड़ी देर के लिए वे वार्ड में भी आ जाती थीं। वार्ड में थोड़ी देर तक वार्ड ब्वाय भी था। कायदा यह है कि मरीजों से मुलाकात के घण्टों को छोड़कर वार्ड के अन्दर कोई बाहरी आदमी नहीं जा सकता। पर अजीतसिंह की बेहोशी की हालत देखकर कल रात कुछ लोगों को उसे देख लेने का मौका दे दिया गया था। उसका बेड कोने में था। जिन दो दिशाओं में दीवारें नहीं थीं वहाँ पर्दे खींचकर उसके बेड के पास एकान्त कर दिया गया था।

"पूछताछ से मालूम हुआ है कि अजीतसिंह को बेहोशी की हालत में सिर्फ तीन लोगों ने नजदीक से देखा था। एक तो उसका नौकर है—महीपाल। दूसरे, हरिश्चन्द्र की बीवी रश्मी ने उसे देखा है। और तीसरे, जरीना ने। उसका नौकर, महीपाल अपने मालिक के घायल होने की खबर पाते ही साढ़े नौ बजे अस्पताल आ गया था, वह पहले ऑपरेशन थियेटर के पास रहा, बाद में वह सर्जिकल वार्ड में अजीतसिंह को देखने गया। उस वक्त डॉक्टर और स्टाफ के अन्य लोग मरीज के पास ही मौजूद थे। वह अजीतसिंह के पास अकेले एक सेकिण्ड के लिए भी नहीं था। रात-भर वह वार्ड की गैलरी में ही दरी बिछाकर पड़ा रहा है। सवेरे एक बार उसने अजीतसिंह को फिर देखा। पर उस वक्त भी एक नर्स वहाँ मौजूद

थी। फिर सवेरे उसे किस-किस ने देखा, इसकी कोई अहमियत इसलिए नहीं है कि डॉक्टरों का ख्याल है कि मौत जहर देने के आठ-नौ घण्टे बाद हुई होगी। महीपाल को इस समय मैंने नीचे रोक रखा है, क्योंकि उसी के साथ मैं अजीतसिंह के घर की तलाशी लेने जाऊँगा। रूबी अजीतसिंह के पास लगभग तीन मिनट बैठी थी और इस दौरान वहाँ कोई भी नहीं था। रूबी उस वक्त बदहवास हालत में थी और किसी से बोल नहीं रही थी। जैसा कि समझा जा रहा है, उसका अजीतसिंह से प्रेम-सम्बन्ध था और यह बात कयास में नहीं आ पाती कि उसने अजीत को जहर दिया होगा। ···अब बचती है जरीना।···"

विद्यानाथ ने भौंहें ऊपर उठायीं।

"जरीना एक पढ़ी-लिखी लड़की है।" सिद्दीकी ने कहना शुरू किया, "वह अजीतसिंह के पड़ोस में रहती है। उसके बाप की वहीं एक मामूली-सी बिसातखाने की दुकान है। उसके यहाँ पर्दा होता है और जरीना बुर्के में ही घर से बाहर निकलती है। उसने हाईस्कूल फर्स्ट डिवीजन में पास किया था। लड़की बहुत जहीन है और उसे आगे पढ़ाने के लिए उसके बाप के पास पैसा नहीं था। उन दिनों अजीत ने अपना प्रेस नया-नया चालू किया था। पड़ोसी होने के नाते उसे भी जरीना की पढ़ाई का हाल मालूम हुआ। उसने उसे माहवारी वजीफा बाँध दिया। उसकी मदद से जरीना ने इकनॉमिक्स में एम० ए० पास किया। इस वक्त वह अपने मकान के पास ही लड़कियों के एक कालिज में लेक्चरर है। जरीना के घरवाले अजीतसिंह की बड़ी इज्जत करते रहे हैं। वह भी उसे अपना भाई मानती थी। अजीतसिंह उसके घर भी जाने लगा था और वह उसके सामने पर्दा नहीं करती थी। कल रात ग्यारह बजे के लगभग वह अपने पिता के साथ अजीतसिंह को देखने गयी थी। पर उसके पिता को तेज खाँसी आ रही थी, इसलिए वार्ड में वह रुका नहीं, बाहर आकर खाँसता रहा। जरीना अजीतसिंह के पास लगभग चार मिनट तक रही थी।···"

सिद्दीकी की बात खत्म हो गयी थी। विद्यानाथ ने कहा, "रूबी और जरीना—इनके बारे में बहुत जल्दी छानबीन होनी चाहिए। खास तौर से अजीतसिंह से उनके सम्बन्धों की जानकारी जरूरी है। क्या उनमें से किसी का हत्या का इरादा हो सकता है? कोई ऐसी बात है कि उनमें से कोई अजीतसिंह को जहर देना चाहेगी?"

"मेरे आदमी उनके पीछे लग चुके हैं।" सिद्दीकी बोला।

विद्यानाथ ने फिर कहा, "ये तो वे लोग हैं जो अजीतसिंह को वाहर से देखने आये थे। पर तीन बातों का खास ध्यान रखना होगा। एक तो देखना होगा कि कोई बाहरी आदमी किसी दूसरे मरीज को देखने तो नहीं आया। ऐसा आदमी भी अजीतसिंह के बिस्तर के पास जा सकता है। दूसरे, अस्पताल के स्टाफ की भी कहीं जाँच होनी चाहिए। क्या पता, स्टाफ में किसी ने दुश्मनी में, या किसी लालच से उसे जहर दिया हो। और तीसरे, वार्ड के मरीजों को भी देखना होगा। कहीं उन्हीं में तो अजीतसिंह का कोई दुश्मन नहीं छिपा था।"

सिद्दीकी ने अदब से कहा, "मरीजों की बाबत अब देख लूंगा। बाकी के बारे में देख लिया है। दूसरे मरीजों के पास पिछली रात में कोई भी मुलाकाती नहीं आया। जहाँ तक अस्पताल के स्टाफ का सवाल है, सब-इंस्पेक्टर गुरुदेवसिंह उसकी जाँच कर रहे हैं।"

पाँच

उसी दिन शाम को सात बजे एक जीप 'जनक्रान्ति' प्रेस के सामने आकर रुकी। उसमें इंस्पेक्टर सिद्दीकी और अजीतसिंह का नौकर महीपाल नीचे उतरे। सिद्दीकी के साथ वर्दीधारी पुलिस का एक सब-इंस्पेक्टर और पाँच सिपाही थे।

एक दुबला आदमी, मैली कमीज और धोती पहने, लगभग तीन दिन की दाढ़ी बढ़ाये, 'जनक्रान्ति' प्रेस से मिले हुए जीने के पास खड़ा था। जीना ऊपर अजीतसिंह के मकान को जाता था। यह आदमी सिद्दीकी के पास आकर भिखमंगों की तरह खड़ा हो गया। सिद्दीकी ने उससे धीरे-से पूछा, "तुम यहाँ कब से हो?"

"दोपहर के डेढ़ बजे से।"

"कोई ऊपर गया तो नहीं?"

"नहीं।"

उस आदमी ने रुककर कहा, "जो ताला महीपाल कल रात लगा गया था, वह अब तक वैसे ही लगा है।"

सिद्दीकी ने सिर हिलाकर यह सूचना स्वीकार की और उसे अलग जाने का इशारा किया, फिर सब-इंस्पेक्टर से कहा, "चलिए, ऊपर की तलाशी ले ली जाये!"

पुलिस ने तब तक कायदे के अनुसार मुहल्ले के एकाध लोगों को गवाही के लिए बुला लिया था। सिद्दीकी और महीपाल जीने पर आगे-आगे चले। ऊपर पहुँचकर सिद्दीकी ने महीपाल से कहा, "ताला खोलो।"

दरवाजे की कुण्डी से एक लोकप्रिय डिजाइनवाला ताला लटक रहा था। महीपाल ने जेब से चाभी निकालकर ताले में लगायी। वह उसमें फिट नहीं हुई। चाभी खींचकर उसने फिट करने की दुबारा कोशिश की पर इस बार भी वह असफल रहा।

महीपाल ने उसकी ओर घूमकर निगाहों से दया की भीख जैसी माँगी और फिर ताले और चाभी की लड़ाई में उलझ गया। अचानक उसने पीछे हटकर ताले को गौर से देखा और सिद्दीकी से कहा, "यह मेरा ताला नहीं है।"

सिद्दीकी ताले को हिलाकर देख रहा था। उसने महीपाल को तीखी निगाह से देखते हुए पूछा, "क्या मतलब है?"

महीपाल ने घबराकर कहा, "मैं कुछ नहीं जानता, हुजूर! पर यह मेरा ताला नहीं है। मैं इसी तरह का ताला लगाकर गया था, पर यह वह ताला नहीं है। मेरा ताला इससे छोटा था। यह कोई दूसरा ताला है।"

सिद्दीकी ने जोर से साँस खींची। सब-इंस्पेक्टर ने कहा, "इसे तुड़वाना होगा।"

एक सिपाही नीचे जीप के ड्राइवर से स्पैनर माँग लाया। उसने ताले पर दो-तीन कड़ी चोटें कीं, ताला टूट गया।

दरवाजा ड्राइंगरूम के एक कोने में खुलता था। उसके पास ही अन्दर की दीवार में एक दूसरा दरवाजा था जो एक बरामदे और खुली छत की ओर था। ड्राइंगरूम के दूसरे छोर पर एक परदा खिंचा हुआ था। उसके पीछे का दरवाजा पूरा-पूरा खुला था। ड्राइंगरूम में घुसते ही खुले दरवाजे से भीतर बेडरूम का दृश्य दिखायी पड़ता था।

मकान में पहले सब-इंस्पेक्टर घुसा, उसके पीछे सिद्दीकी। अन्दर आते ही वे थमकर खड़े हो गये।

बेडरूम का जो हिस्सा उन्हें बाहर से दीख पड़ता था, उसमें कपड़े, कागज और कई चीजें फर्श पर बिखरी हुई थीं। सिपाहियों और महीपाल को वहीं रुकने का इशारा करके वे दोनों बेडरूम में पहुँचे।

ऐसा लगता था, किसी ने जल्दबाजी में पूरे घर की तलाशी ली है। एक चेस्ट आफ ड्राअर के ड्राअर खुले पड़े थे और उनका सामान इधर-

उधर बाहर छितरा पड़ा था। दो-तीन सूटकेस थे, उन्हें भी बेतरतीबी से देखा गया था। बेडरूम से मिला हुआ ड्रेसिंगरूम और बाथरूम था। ड्रेसिंगरूम में वार्डरोब के पूरे सामान को बाहर उलटकर फेंक दिया गया था।

पहली निगाह में ही सिद्दीकी ने देख लिया कि जिस सूटकेस और ड्राअर में कागज और फाइलें थीं, उन्हें खास तौर से तितर-बितर किया गया है। ड्राइंगरूम में ज्यादा उत्पात नहीं हुआ था, पर रेडियोग्राम के ड्राअरों में रखे रिकार्डों को उलटा गया था और खास तौर से, तसवीरों के सात-आठ एलबम उल्टी-सीधी हालत में छोड़ दिये गये थे। सिद्दीकी ने इस पर कोई राय नहीं दी, पर सिपाही आपस में बात करने लगे थे। उसने एक सिपाही से कहा, "नीचे जीप में कैमरा होगा। उसे उठा लाओ।"

कैमरा आ जाने पर उसके साथ के सब-इंस्पेक्टर ने सभी कमरों के कुछ फोटोग्राफ अलग-अलग कोणों से लिये। उसके बाद सिद्दीकी ने कुछ सोचते हुए चारों ओर निगाह दौड़ायी।

फिर उसने ड्राइंगरूम से ही काम की शुरुआत की। वहाँ पड़े हुए एलबम अजीतसिंह की बम्बईवाली जिन्दगी की यादगार पेश करते थे। पहले एलबम के पहले पृष्ठ पर ही दो नौजवान लड़कियों की लगभग नंगी तसवीरें समुद्र की पृष्ठभूमि में दिखीं। सिद्दीकी ने सब-इंस्पेक्टर से कहा, "तुम इधर बम्बई की सीनरी देखो, तब तक मैं अन्दर की तलाशी लिये लेता हूँ।"

दरवाजे के पास रुककर उसने फिर कहा, "ये एलबम हम अपने साथ ले जायेंगे पर तब तक सरसरी तौर से देख जाओ। शायद कोई दिलचस्पी की चीज निकल आये।"

अन्दर कागजों, कमीजों, मोजों, टाइयों और दूसरी तरह की चीजों का अम्बार फर्श पर पड़ा था। उन्हें एक-एक करके देखने में काफी समय लगा। बेडरूम में एक अटैचीकेस भी खुला पड़ा था। उसमें सिर्फ कागज थे जिनका सम्बन्ध बीमे और प्रेस के कारोबार से था। उसी में कई एक चिट्ठियों के बण्डल भी थे जो काफी पुराने जान पड़ते थे। सिद्दीकी ने सोचा—उनकी छानबीन इत्मीनान से बाद में की जायेगी।

वार्डरोब के निचले खाने में पुराने अखबारों की एक गड्डी रखी थी। उसे भी छितरा गया था। सिद्दीकी ने उन अखबारों को उलटना-पुलटना शुरू किया। अचानक उसकी निगाह एक बड़े लिफाफे पर पड़ी। वह अखबारों से छिटककर दूर चला गया था। लिफाफा खुला हुआ था। सिद्दीकी ने झाँक कर देखा—उसमें सौ-सौ रुपये के कई नोट भरे थे। उसने

लिफाफा उठाकर नोट गिनने शुरू किये। नोट बिल्कुल नये थे और चरमरा रहे थे। गिनने पर वे संख्या में अस्सी निकले। आठ हजार रुपये ! किस-लिए ?—सिद्दीकी ने सोचा। इसके पहले एक ड्राअर में उसे अजीतसिंह की बैंकवाली चेकबुक और लगभग सत्तर रुपये के नोट और रेजगारी रखी हुई मिली थी। उसने उस ड्राअर को दोबारा खोलकर चेकबुक का निरीक्षण किया। उसमें किसी भी चेक से आठ हजार या उससे ज्यादा रुपये नहीं निकाले गये थे। दरअसल, पिछला चेक सिर्फ तीन सौ रुपये का था और उसे 'सेल्फ' के नाम एक हफ्ते पहले काटा गया था।

ड्रेसिंगरूम में वार्डरोब के भीतर उसे एक छोटा टेप-रिकार्डर और उसके टेपों के कई डिब्बे रखे हुए मिले। उसने महीपाल को बुलाकर पूछा, "इनमें क्या है ? जानते हो ?"

महीपाल ने कहा, "साहब को गाना सुनने का शौक था। बड़ी पुरानी-पुरानी फिल्मों के गाने इनमें उतारकर रखे हुए थे।"

सिद्दीकी ने उन टेपों को गौर से देखा। महीपाल की बात शायद सही थी। प्रत्येक टेप के डिब्बे पर लेबुल था। उनमें कुछ का सम्बन्ध शास्त्रीय रागों से था, कुछ में बीस-पचीस साल पहले की फिल्मों के गाने थे। टेपों को एक बड़े डिब्बे में रखकर साथ ले चलना जरूरी समझा गया।

ड्रेसिंग-रूम के एक कोने में जूतों का रैक रखा हुआ था, उस पर लगभग डेढ़ दर्जन जूते और चप्पलें थीं। वार्डरोब से ही पता चलता था कि अजीतसिंह अच्छे कपड़े पहनने का शौकीन था। जूतों से भी इस धारणा की पुष्टि होती थी। रैक के निचले खाने में दफ्ती के तीन डिब्बे रखे थे, जिनमें यकीनन नये जूते बन्द करके लाये गये होंगे। इन डिब्बों पर हल्की-सी धूल जम रही थी और जाहिर था कि जिस किसी ने भी घर की तलाशी ली हो, उसकी निगाह इन डिब्बों पर नहीं गयी थी।

सिद्दीकी ने उन्हें खोलकर देखा—दो में तो पुरानी चप्पलें थीं, तीसरे में कुछ रसीदें, जिनका सम्बन्ध प्रेस के कारोबार से था। रसीदों के नीचे लगभग पचीस फोटोग्राफ रखे हुए थे जो बहुत पुराने नहीं जान पड़ते थे। जूते का यह डिब्बा पुराना और मटमैला था और जाहिर था कि इन तसवीरों को छिपाने की गरज से ही उसमें रखा गया था। सिद्दीकी ने इन तसवीरों को ध्यानपूर्वक देखना शुरू किया। उनमें प्रायः अजीतसिंह की ही तसवीरें थीं जो किसी पहाड़ी जगह पर भिन्न-भिन्न लड़कियों के साथ खिचायी गयी थीं। उनमें से एक तसवीर की लड़की तो उम्र से बहुत छोटी

—सत्रह-अठारह साल की ही—दीख पड़ती थी। तसवीरें फिल्मी रोमांस के वजन पर थीं और उनमें अजीतसिंह ज्यादातर चुस्त और शोख कपड़ों में था। पाँच तसवीरें अजनबी स्त्री-पुरुषों की थीं। एक में कोई आदमी बुशशर्ट और काले चश्मे में कार की अगली सीट पर एक लड़की के गाल से अपना गाल सटाये हुए बैठा था। सिद्दीकी ने देखा, तसवीर में कार का सिर्फ ऊपरी हिस्सा आया है, उसके रजिस्ट्रेशन नम्बर की प्लेट नहीं आयी है। वह होंठों ही में बुदबुदाया—बास्टर्ड!

एक तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी और पूरे संग्रह में शायद वही एक ऐसी थी, जिसे मासूम समझा जा सकता हो। उसमें एक चार साल का लड़का एक महिला से सटकर खड़ा हुआ था। उसके गाल फूले हुए थे, कुछ दूरी पर एक दूसरी स्त्री उस लड़के को मनाने की कोशिश में हाथ आगे बढ़ाकर उसे अपनी ओर बुला रही थी। तसवीर की पृष्ठभूमि में एक बाग था और कोने में एक इमारत का बरामदा दीख रहा था।

पहली बार सिद्दीकी इस तसवीर को जल्दी से देखकर पलट गया था, पर दुबारा देखते समय उसकी आँखें उस स्त्री पर, जिससे सटकर बच्चा खड़ा हुआ था, अटकी रह गयीं। वह स्त्री असाधारण सुन्दरी थी और सिद्दीकी को लगा कि उसने उसे कहीं देखा है।

अचानक उसने अपनी जाँघ पर हाथ मारकर अंग्रेजी में कहा—माई एम हैन्ड! उसे सहसा याद आ गया था कि इसी औरत की तसवीर आज उसने सवेरे के अखबारों में देखी है। यह रूबी की तसवीर है।

उसने ये सब तसवीरें समेट लीं और ड्राइंगरूम में आकर महीपाल को अपने पास बुलाया। रूबीवाली तसवीर उसे दिखाकर दूसरी औरत के बारे में उसने पूछा, "इन्हें पहचानते हो?" उसकी आवाज बड़ी सहज थी, जैसे मौसम के बारे में बात की जा रही हो।

महीपाल थोड़ी देर तक उसे देखता रहा। फिर दूसरी स्त्री की ओर इशारा करके कहा, "मैं इन्हें जानता हूँ। ये साहब की बहन हैं, और मेरठ में रहती हैं। वहाँ शायद कहीं पढ़ाती हैं।"

"रत्ना?"

"जी हाँ, इनका यही नाम है।"

सिद्दीकी ने रूबी की ओर इशारा करके पूछा, "और ये?"

"इनको तो मैं पहचानता नहीं।" वह थोड़ी देर सोचता रहा। उसके होंठ कुछ कहने के लिए काँपे, पर वह फिर सहज ढंग से चुप हो गया।

सिद्दीकी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर धीरे-से कहा, "छिपाओ नहीं। जितना जानते हो बता दो। याद रखो, हम तुम्हारे मालिक के खूनी को तलाश कर रहे हैं। बोलो, तुम हमारे साथ हो या खूनी के ?"

महीपाल वैसे ही चुपचाप खड़ा रहा। फिर धीरे-धीरे बोला, "मैं इन्हें सचमुच नहीं पहचानता। पर इन्हें मैंने कल ही देखा है। शाम को यह साहब के साथ कार पर आयी थीं।"

सिद्दीकी ने पूछा, "यहाँ कितनी देर रुकी थीं ?"

"मुश्किल से दो मिनट।" उसने बताया, "वह तो नीचे कार पर ही बैठी रही थीं। साहब ऊपर आकर दो-चार मिनट रुके, फिर बोले—मेम साहब को यहाँ बुला लाओ। मैं बुलाने गया तो वे बोलीं— मैं यहीं ठीक हूँ। पर फिर अपने-आप गाड़ी से उतरकर यहाँ चली आयीं।"

"फिर वे लोग कहाँ गये ?"

"साहब ने कहा—मैं मकान पर जा रहा हूँ। देर से लौटूंगा।"

"मकान ?"

महीपाल ने, न जाने क्यों, सिसकना शुरू कर दिया। बोला, "वह डायमण्ड होटल को 'मकान' ही कहते थे हुजूर।"

अचानक सिद्दीकी ने तसवीर को महीपाल के सामने करते हुए फिर से पूछा, "और यह बच्चा कौन है ?"

"बच्चा ? मैं नहीं जानता हुजूर।"

सिद्दीकी बिना बोले वह तसवीर महीपाल के सामने किये खड़ा रहा। उसने अपनी बात दोहरायी, "मैं नहीं जानता हुजूर।" और फूट-फूटकर रोने लगा।

अचानक ड्राइंगरूम से सब-इंस्पेक्टर ने पुकारकर कहा, "यहाँ आइ-एगा, सर !"

"क्यों ? क्या है ?" कहता हुआ वह ड्राइंग-रूम में पहुँच गया।

सब-इंस्पेक्टर हाथ में एक मुर्झाई हुई गुलाब की कली लिये हुए था। बोला, "यह रेडियोग्राम के पास पड़ी थी।"

सिद्दीकी ने भौंहें सिकोड़कर कली की ओर गौर से देखा। सब-इंस्पेक्टर ने उसे सूंघकर कहा, "आजकल तो कोट पहनने का मौसम नहीं है। इसे लगाया कहाँ गया होगा ?"

सिद्दीकी कुछ नहीं बोला। सब-इंस्पेक्टर ने कहा, 'किसी लड़की के बालों से···"

"ठीक कहते हो।" सिद्दीकी ने कहा, "रूबी कल इस कमरे में आयी थी। यह शायद उसी के बालों से गिरी हो। इसे भी साथ ले लो।"

तलाशी के बाद पूरे सामान की फेहरिस्त बनाने और कई कानूनी जरूरतें पूरी करने में एक घण्टे के करीब लग गया। जब वे लोग उतरकर सड़क पर जीप के पास आये तो लगभग नौ बज चुके थे।

जीप के पास सिद्दीकी का एक सहायक नन्दलाल अस्थाना खड़ा था। वह सी० आई० डी० में सब-इंस्पेक्टर था। सिद्दीकी ने उसे देखकर बड़ी आत्मीयता से पूछा, "तुम कितनी देर से खड़े हो?"

"आधे घण्टे से। आपके नीचे आने का इन्तजार कर रहा था।" उसने कहा, "हरिश्चन्द्र के यहाँ की तलाशी हो चुकी है। उसका विवरण आप कब सुन सकेंगे?" -

"पेट की पुकार सुन लेने के बाद। आओ, मेरे साथ चलो।" कहकर सिद्दीकी ने उसे अपने साथ बैठा लिया। जीप चल पड़ी। करीब दो मील चलने के बाद जब वह एक होटल के सामने से गुजरी तब सिद्दीकी ने गाड़ी रुकवायी और अस्थाना के साथ नीचे उतर पड़ा। पुलिस सब-इंस्पेक्टर से उसने कहा, "मैं यहाँ खाने के लिए रुक रहा हूँ। आप थाने पर पूरे सामान को कायदे से जमा करा दीजिएगा। बाद में मिलेंगे।"

वे दोनों होटल के सामने फैले हुए लम्बे-चौड़े लॉन में आ गये। वहाँ हल्की रोशनी फैली हुई थी और कुछ दूर-दूर पड़ी मेजों पर दो-दो, चार-चार लोग बैठे थे। शाम ठण्डी हो चली थी और यहाँ लॉन पर और भी ज्यादा ठण्डक थी। होटल के लाउन्ज में रिकार्ड पर कोई नाच की धुन बज रही थी जिसका असर पूरे लॉन में आखिरी बसन्त के फूलों की भीनी खुशबू की तरह फैल रहा था।

अस्थाना ने खुश होकर कहा, "ग्रेट! बड़े-बड़े जासूसों के लिए ही ऐसी जगहें बनायी जाती हैं। आइए, हम लोग उस कोनेवाली मेज पर जाकर बैठें, जहाँ हमारी और आपकी बात खुद भी नहीं सुन पायेगा।"

सिद्दीकी ने उस मेज की ओर बढ़ते हुए कहा, "बातों का राज इन्सानों से ही छिपाना जरूरी है। खुदा के सुन लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठ गये। एक वेटर के नजदीक आने पर सिद्दीकी ने पूछा, "क्या लोगे? बियर या ह्विस्की?"

"ह्विस्की तो आप ही लें।" अस्थाना ने कहा, "आप ऊँचे दर्जे के जासूस हैं, 'जेम्स बाण्ड' के मौसेरे भाई! पेरी मैसन आपके यहाँ क्लर्की

करता था, प्वायरट आपका बावर्ची रह चुका है। मुझे जैसे टटपुंजिए सी० आई० डी० इंस्पेक्टर के लिए कोकाकोला काफ़ी है।"

दोनों का यह आपसी मजाक था। सिद्दीकी ने नकली अकड़ के साथ कहा, "ओ० के०, ओ० के।" फिर वेटर को हुक्म दिया, "मेरे लिए ह्विस्की लाओ और साहब के लिए कोकाकोला।"

दोनों के सामने जब दो रंगों के गिलास आ गये तब सिद्दीकी ने अस्थाना से कारोबारी जबान में कहा, "अब शुरू से बताओ।"

अस्थाना ने कहा, 'हरिश्चन्द्र की आज जमानत हो गयी है। पोस्ट-मार्टम के बाद जिले की पुलिस ने यह स्वीकार कर लिया कि उसके ऊपर ज्यादा से ज्यादा दफा ३०७, पेनल कोड का आरोप बन पाता है। फिर, यह भी स्पष्ट था कि उसने अजीतसिंह और रूबी के सम्बन्धों के कारण उत्तेजना में उस पर गोली चलायी है। इसलिए उसकी जमानत की दरख्वास्त पर कोई गम्भीर ऐतराज नहीं किया गया। उसे आज शाम को साढ़े पाँच बजे जमानत पर छोड़ा गया था।

"हम लोग उसके बँगले पर सात बजे के करीब पहुँचे थे। उस वक्त वह वहाँ अकेला ही था। बँगले में सिर्फ एक माली मौजूद था जो कभी-कभी बावर्चीखाने में भी काम करता है। रूबी अभी तक अपने रिश्तेदार के घर से, जो शायद रेलवे स्टेशन के पास रहता है, लौटी नहीं थी। हमने उससे कहा कि हमें उसके घर की तलाशी लेनी है। इस पर उसने कोई भी ऐतराज नहीं किया। दरअसल, वह अपनी जगह से हिला भी नहीं और बोला—मकान खुला हुआ है। आप जो चाहें, अन्दर जाकर देख लें।··· उसने माली को पुकारकर हमारे साथ कर दिया। हमें तलाशी में ज्यादा देर नहीं लगी। उसका घर बड़े करीने से रखा गया है और पहले से ही देखा जा सकता है कि कौन चीज कहाँ होगी। हम खास तौर से यह देखना चाहते थे कि अजीतसिंह से सम्बन्धित कोई चीज—जैसे कोई खत या उसकी कोई निशानी, वहाँ मौजूद है या नहीं। हमें ऐसी कोई चीज नहीं मिली।

"लेकिन रूबी के कमरे में हमें दो चीजें ऐसी मिलीं जिनकी छानबीन होनी चाहिए।

"पहली चीज तो उसकी 'चेकबुक' है। वह उसकी ड्रेसिंग टेबल की ड्राअर में थी। मैंने पहले ही कहा कि उस घर में किसी चीज के गलत जगह होने की बात ही नहीं सोची जा सकती थी। अतः चेकबुक को हमने ध्यान से देखा। उसमें कल की तारीख में आठ हजार रुपया एक चेक से निकाला

गया है।"

सिद्दीकी का गिलास होंठों से लगा हुआ था। जल्दी मे उसने पूरा गिलास खाली कर दिया और वेटर को पुकारकर अस्थाना से पूछा, "तुमने चेक की काउण्टरफायल देखी ? उसे किसके नाम···?"

"मिस्टर सेल्फ, या यह कहिए कि मिसेज सेल्फ के नाम," अस्थाना ने कहा, "रूबी ने यह रकम अपने नाम से ही निकाली है। मगर घर में कही भी यह रुपया नही मिलता।"

सिद्दीकी ने लापरवाही से कहा, "फिक्र न करो। मुझे वह रुपया अजीतसिह के घर मे मिल गया है।"

"ओह !" अस्थाना के मुँह से निकला। वह थोड़ी देर चुप बैठा रहा। उसने फिर कहना शुरू किया, "ऐसा लगता है कि रूबी ने यह रुपया कल दोपहर के बाद बैंक से निकाला था। माली से मालूम हुआ कि खाना खाने के बाद उसने एक रिक्शा मँगाया था और धूप में ही कही बाहर गयी थी। करीब पौन घण्टे बाद वह वापस आयी और सीधे अपने बेडरूम मे चली गयी। वहाँ वह शाम को छह बजे तक रही। उसके बाद अजीतसिह उसे अपनी कार पर वहाँ से ले गया। जाहिर है, इस पौन घण्टे के दौरान वह बैंक से रुपया निकालने गयी थी। हरिश्चन्द्र से मालूम हुआ है कि शादी के पहले उसका अपना बैंक बैलेंस था, जब वह एक कालेज मे पढाती थी। वह अब भी उसी के नाम से है। शादी के बाद उसका और हरिश्चन्द्र का मिला-जुला बैंक-अकाउण्ट भी है। इसके अलावा हरिश्चन्द्र के दो अकाउण्ट अलग से हैं पर उनका सम्बन्ध उसके व्यवसाय से है।"

सिद्दीकी पूरी बात गौर से सुन रहा था। जब वेटर आँर्डर लेने के लिए पास आया तब उसका ध्यान टूटा। उसने अपने लिए दूसरी ह्विस्की मँगायी और पूछा, "अजीतसिह हरिश्चन्द्र के घर कितनी देर रुका था ?"

"माली का कहना है कि वह गाडी से नीचे नही उतरा। उसने माली से रूबी को अपने आने की खबर भिजवायी और उसके दो मिनट बाद ही वह बाहर निकल आयी।"

थोडी देर दोनों चुप रहे। फिर सिद्दीकी ने पूछा, "दूसरी चीज कौन-सी थी ?"

"कत्थई रंग की शीशियाँ !"

सिद्दीकी तनकर सीधा बैठ गया।

अस्थाना ने कहा, "रूबी के कमरे में कत्थई रंग की तीन शीशियाँ पायी गयीं। वे मल्टी-विटामिन टिकिया की शीशियाँ हैं। वे अलग-अलग कम्पनियों की जरूर हैं पर उन सबका साइज करीब-करीब एक ही है। हर-एक में एक औंस से ज्यादा ही पानी आ सकता है और आज अस्पताल के बाहर डस्टबिन में जहरवाली जो शीशी पायी गयी है वह भी उन्हीं शीशियों के साइज की है।"

सिद्दीकी ने तत्काल कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप ह्विस्की की चुस्कियाँ लेता रहा। कुछ रुककर उसने पूछा, "ये शीशियाँ और 'चेकबुक' कब्जे में तो कर ही ली गयी होंगी।"

"जी हाँ।"

सिद्दीकी ने सहसा पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है, अस्थाना ? शायद शुरू-शुरू में रूबी को निर्दोष समझकर हमने भूल की है। उसने अजीत-सिंह को कल आठ हजार रुपये दिये, उसके साथ डायमण्ड होटल तक गयी, और बाद में, इतनी बदनामी के बावजूद, वह उसे अस्पताल में रात को दस-ग्यारह बजे देखने आयी। इसी के साथ यह भी है कि किसी ने अजीत-सिंह के मकान का ताला तोड़कर वहाँ उसमें कोई चीज खोजने की कोशिश की है। मकान में घुसनेवाले के पास समय की कमी थी और जल्दबाजी में उसने तलाशी ली है; मुझे कुछ फोटोग्राफ मिले हैं जो अजीतसिंह ने जान-बूझकर ऐसी जगह रखे थे जहाँ उन्हें छिपाने के लिए ही रखा जा सकता है। क्या इस तलाशी का सम्बन्ध इनमें से किसी फोटोग्राफ से है ? तलाशी लेनेवाले की दिलचस्पी रुपये में शायद नहीं थी, क्योंकि उसने आठ हजार के नोटों को वहीं पड़ा रहने दिया है। या हो सकता है, रुपयों का लिफाफा उसके हाथ में पड़ा ही न हो।

"और, ताज्जुब यह है कि उनमें एक फोटो रूबी की भी है। वह वह पर क्यों है ? वह रूबी से प्यार करता था। पर वह ऐसा फोटो नहीं है जि कोई प्रेमी अपने पास रखना पसन्द करेगा। उसमें वह अकेली नहीं है।

"पर एक बात साफ है। अजीतसिंह गन्दा आदमी था। उसके फ्लै में मिली हुई तस्वीरें जाहिर करती हैं कि उसका कोई भी दुश्मन हो सक था। दुश्मनी की वजह प्रेम का वही स्थायी 'त्रिकोण' हो सकती है—कि माशूका के पीछे दुश्मनी। जिस वजह से हरिश्चन्द्र ने उस पर गो चलायी थी, उसी वजह से ऐसे कई लोग हो सकते हैं जो उसको जह सकते थे। पर रूबी उसे क्यों जहर देगी, यह समझ में नहीं आता।

इतना चाहते हुए भी आखिर वह उसे क्यों जहर देगी?···"

वह थोड़ी देर खामोशी से सोचता रहा।

फिर कुछ रुककर वह कहने लगा, "एक और भी बात हो सकती है। रूबी कल अजीतसिंह के कमरे में गयी थी। उसके जूड़े का फूल रेडियोग्राम के पास पड़ा मिला है। कम-से-कम फिलहाल मैं मानकर चल रहा हूँ कि वह रूबी ही का फूल था। पर रेडियोग्राम के पास उसके गिरने की क्या वजह थी? वह वहाँ दो-तीन मिनट ही रुकी थी। कोई रिकार्ड सुनने के लिए उसने लगाया नहीं।"

वह सोचता रहा। अचानक उसने अपना गिलास मेज पर रख दिया और बोला, "एक और भी बात हो सकती है। अजीतसिंह के घर की तलाशी किसने ली? क्या वह रूबी नहीं हो सकती? उसके रुपये अजीत-सिंह के फ्लैट में थे। शायद जल्दबाजी में तलाशी के दौरान उसके जूड़े का फूल वहाँ गिर गया हो।"

"इसका मतलब यह होगा," अस्थाना ने कहा, "कि रूबी उसके मकान में कल दो बार आयी। एक बार खुले दरवाजे से और एक बार महीपाल का लगाया हुआ ताला तोड़कर। यही न?"

सिद्दीकी ने कुछ नहीं कहा। वह सोचता रहा और ह्विस्की के गिलास से चुस्कियाँ लेता रहा।

छः

शहर के बाहरी भाग की इस अकेली सड़क पर किनारे-किनारे छायादार पेड़ थे। पेड़ों की कतार के पीछे, सहन के लिए काफी जगह छोड़कर, नवीन-तम ढंग के बँगले बने हुए थे। शहर का यह हिस्सा अभी नया-नया विक-सित हुआ था और भीड़-भाड़ से बचने के लिए बहुत-से व्यापारियों तथा दूसरे सम्पन्न आदमियों ने यहाँ बँगले बनवाये थे। इस समय सवेरे के सात बजे थे। दिन को भी यहाँ जिन्दगी के बहुत कम लक्षण दिखायी देते थे। लगता था शहर का यह भाग अभी सो ही रहा है।

एक बँगले में लॉन के एक कोने पर खूब घने पेड़ के नीचे दो महिलाएँ बैठी चाय पी रही थीं। अचानक बँगले के सामने एक मोटर-साइकिल आकर रुकी। उसकी फटफट ने वहाँ की खामोश फिजा पर जैसे छापा मार-कर कब्जा कर लिया हो। मोटर-साइकिल से सिद्दीकी उतरा और उसने

क के पास आकर उन महिलाओं की ओर देखा। वे उसी की ओर देख थीं। सिद्दीकी ने हाथ उठाकर उन्हें सलाम जैसा किया और फाटक लकर अन्दर चला आया। लॉन के बीच से निकलता हुआ वह उनके स पहुँचा और बोला, "इस तरह आने के लिए माफी चाहता हूँ, पर मुझे सेज रत्ना से कुछ जरूरी बात करनी है।"

यह बात उसने रत्ना से ही कही थी। अजीतसिंह के यहाँ उसे दो हिलाओं और बच्चेवाला जो फोटो मिला था, उससे रत्ना को पहचानने उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। रत्ना ने उसे आश्चर्य से देखा और हिचकते हुए बोली, "आप!"

सिद्दीकी उन्हीं के सामने एक खाली कुर्सी पर इतमीनान से बैठ गया और बोला. "मैं सी० आई० डी० इंस्पेक्टर हूँ। मेरा नाम सिद्दीकी है। अजीतसिंह के बारे में मुझे आपसे दो-एक बातें मालूम करनी थीं। मुझे अफसोस है कि इस मौके पर भी मुझे आपको तकलीफ देनी पड़ रही है।"

अजीतसिंह का नाम सुनते ही रत्ना का चेहरा उदास हो गया। उसे सहानुभूति के साथ देखते हुए वह चुपचाप बैठा रहा। रत्ना के पास बैठी हुई महिला ने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। फिर उसने सिद्दीकी की ओर मुड़कर पूछा, "आपके लिए चाय बनाऊँ?"

सिद्दीकी ने चाय न पीने के लिए माफी माँगी। वास्तव में दोनों महिलाएँ अपनी चाय पहले ही खत्म कर चुकी थीं। सिद्दीकी ने दूसरी महिला से कहा, "अगर आपको ऐतराज न हो तो मैं मिसेज रत्ना से कुछ देर अकेले में बात कर लूँ?"

"मुझे क्या ऐतराज हो सकता है?" उसने कहा और वह उठकर बँगले के अन्दर चली गयी। थोड़ी देर में नौकर चाय के बर्तन समेटने के लिए आया। तब तक सिद्दीकी ने रत्ना से बातें शुरू कर दी थीं। उसने पूछा, "अजीतसिंह तो आपका चचेरा भाई था न?"

रत्ना ने सिर हिलाया।

सिद्दीकी ने फिर पूछा, "यानी आपके पिता और अजीतसिंह के पिता सगे भाई थे?"

इस बार उसने फिर स्वीकृति में सिर हिलाया।

सिद्दीकी ने पूछा, "रहनेवाले आप लोग क्या मेरठ के हैं?"

रत्ना ने कहा, "हाँ, पिछली दो पीढ़ियों से हम लोग मेरठ ही में रह रहे हैं, पर अजीत बहुत पहले बम्बई चला गया था। वहाँ काफी समय बिता-

कर वह यहाँ लखनऊ में रहने के लिए चला आया था।"

सिद्दीकी ने पूछा, "आप इस समय मेरठ में क्या कर रही हैं?"

"मैं एम० जी० गर्ल्स कालिज में लेक्चरर हूँ।"

"और आपके पति?"

'वह वहाँ मिलिट्री एकाउण्ट्स में काम करते हैं।"

"आपके परिवार में आप दोनों के अलावा और कौन हैं?"

रत्ना ने एकदम से जवाब नहीं दिया। कुछ रुककर बोली, "हमारा एक बच्चा है, पर वह हमारे साथ नहीं रहता। शेरवुड में पढ़ता है।··· नैनीताल में!" उसने अपनी बात समझायी।

"बच्चे की उम्र क्या होगी?"

"दस साल।"

सिद्दीकी ने अपनी जेब से एक फोटो निकाल ली थी। उसे रत्ना की निगाह के सामने रखते हुए उसने पूछा, "बच्चे की यही तसवीर है न?"

रत्ना उसे काफी देर तक देखती रही, फिर धीरे से बोली, "जी हाँ।"

सिद्दीकी ने पूछा, "आपकी बगल में यह रूबी है न?"

रत्ना ने बहुत धीमी आवाज में कहा, "हाँ।"

कुर्सी पर आगे झुककर उसने तेजी से पूछा, "यह बच्चा किस साल पैदा हुआ था?"

रत्ना ने कहा, "१९५९ में।"

"पैदा यह मेरठ ही में हुआ है?"

"जी हाँ।" कहकर रत्ना ने कुर्सी पर बैठने का ढंग बदला।

"आपकी शादी कब हुई थी?"

"१९५९ में।" उसके मुँह से अनायास निकला।

"और यह बच्चा भी १९५९ में ही हुआ था?"

रत्ना के चेहरे पर उलझन-सी झलकने लगी थी। कुछ रुककर उसने गहरी साँस खींची और कहा, "देखिए इंस्पेक्टर साहब, मैं एक बात साफ कर देना चाहती हूँ। सदीप को हमने गोद लिया है। यह हमारा अपना बच्चा नहीं है। पर इसे अब हम अपना ही कहते हैं।"

सिद्दीकी ने साधारण बातचीत के अन्दाज में पूछा, "तो इसके असली माँ-बाप कौन हैं?"

जवाब देने के पहले रत्ना फिर एक बार हिचकिचायी, पर उसके बाद जल्दी-जल्दी बोलने लगी, "हमने इसे अनाथालय से लिया था। तब यह

साल-भर का था। इसके माँ-बाप का पता नहीं है। कोई इसे अनाथालय के बरामदे में ही छोड़ गया था। माँ-बाप का पता लगाने की बहुत कोशिश की गयी, पर···।"

सिद्दीकी रत्ना की बात सुनते समय उसे गौर से देख रहा था। उसे शक हुआ कि कोई ऐसी बात है जिसे वह बताने में हिचक रही है। उसकी बात पूरी होने से पहले ही वह उठ खड़ा हुआ। बोला, "देखिए मैडम, आप यह जानती ही हैं, मैं एक खून के मामले की जाँच कर रहा हूँ। खून आपके भाई का ही हुआ है। मैं आपसे मदद पाने की पूरी उम्मीद लेकर आया था, पर आप मुझे किस्से-कहानियाँ सुना रही हैं। सुबह के वक्त मेरे पास बहुत जरूरी काम होते हैं। इस वक्त मैं यह किस्से नहीं सुन सकता। मैं जा रहा हूँ। अब दुबारा हमारी बातचीत थाने में होगी। तब तक शायद आप सही वाकियत बताने के बारे में अपनी राय भी कायम कर लेंगी।"

रत्ना भी खड़ी हो गयी। उसने बिगड़कर कहा, "आप मुझे झूठा समझ रहे हैं।"

अचानक सिद्दीकी की आवाज मुलायम हो गयी। उसने कहा, "जी हाँ। और इसके बाद सिर्फ एक बात कहनी है। आपको शायद पता नहीं है, हमसे सच छिपाने की कोशिश न करनी चाहिए। हम जो जानना चाहते हैं, वह चौबीस घण्टे के अन्दर जान लेंगे। पर यह तब होगा जब आप अपने को झूठा साबित कर चुकी होंगी।"

इतना कहकर वह रुका, और चलने को हो रहा था कि ठिठका और बड़ी नर्मी से बोला, "मिसेज रत्ना, आप अब भी नहीं बतायेंगी कि इस बच्चे के···संदीप के···माँ-बाप कौन हैं?"

रत्ना थोड़ी देर अनिश्चय के साथ खड़ी रही। फिर बोली, "आप बैठ जाइए। अजीत के खूनी का पता लगाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ।" उसने साँस खींचकर कहा, "पर आप मुझसे एक ऐसी बात पूछ रहे हैं जिसका जवाब मेरे पास नहीं है।"

सिद्दीकी इतमीनान से फिर कुर्सी पर बैठ गया। उसने सिर हिलाया, जैसे वह रत्ना की स्थिति समझ रहा हो। उसकी आवाज सहज हो गयी। कुछ सोचते हुए उसने कहा, "ठीक है। आपने जितना बताया है उतना काफी है। बहुत-बहुत शुक्रिया। पर आखिर में मैं सिर्फ एक और सवाल पूछना चाहता हूँ, यह तसवीर अजीतसिंह के पास कैसे आयी?"

रत्ना कुछ याद करने की कोशिश करती रही। बोली, "इंस्पेक्टर

साहब, निश्चित रूप से कुछ भी बताना मुश्किल होगा। पर दो साल पहले जाड़ों की छुट्टियों में संदीप शेरवुड से घर आया था। उन्हीं दिनों रूबी भी दिल्ली लौटते वक्त मेरठ में हमारे यहां दो-तीन दिन के लिए रुकी थी। रूबी संदीप को बहुत प्यार करती है। शायद इसलिए भी कि उसके कोई बच्चा नहीं है। वह उसकी फोटो अपने पास रखना चाहती थी और अलग से उसे न लेकर उसने यह बेहतर समझा था कि हम लोगों का एक ग्रुप ले लिया जाये। यह फोटो तभी मेरे पति ने खींची थी। रूबी के जाने के पहले ही अजीत हमारे यहां एक सप्ताह तक रहने के लिए आ गया था। वहीं उसकी रूबी से पहली मुलाकात हुई थी। उसने यह फोटो बाद में वहीं देखी थी और इसकी काफी तारीफ भी की थी। उसका ख्याल था कि हम तीनों का पोज बहुत अच्छा आया है।"

सिद्दीकी ने कहना चाहा कि उसका ख्याल सही था। खास तौर से रूबी इस तसवीर में बहुत ही आकर्षक दीख रही थी। पर उसने अपने को रोक लिया।

रत्ना कहती रही, "इस फोटो के दो-तीन प्रिण्ट हुए थे। एक रूबी अपने साथ ले आयी थी। हो सकता है अजीत भी एक प्रिण्ट अपने साथ लेता आया हो।"

सिद्दीकी चुप होकर थोडी देर जमीन की ओर देखता रहा। रत्ना ने कहा, "अगर आपको कुछ और न पूछना हो तो मैं चलूं। कुछ जरूरी काम है।"

सिद्दीकी ने ऐसे सिर हिलाया जैसे उसे कोई ऐतराज न हो। रत्ना उठकर खड़ी हो गयी। वह भी उठ खड़ा हुआ। पर जैसे ही रत्ना ने जाने के लिए पीठ फेरी, सिद्दीकी ने कहा, "मैडम···!"

वह चौंककर घूमी। सिद्दीकी ने कहा, "प्लीज। हमारा काम न बढ़ाइए। हमारा एक आदमी अभी मेरठ गया है। आपके पति से भी वह वहाँ मिलेगा। हमें पता लग ही जायेगा। इससे अच्छा होगा कि आप ही बता दें संदीप किसका लड़का है···?"

"मैंने कह तो दिया···" उसने तेजी से कहना शुरू किया, पर अचानक सिद्दीकी की सधी हुई निगाह के सामने वह अचकचा गयी। कुछ रुककर उसने मजबूरी से दोनों होंठ दबाये, जैसे वह किसी निश्चय पर पहुँच रही हो। सिद्दीकी ने कडी, पर धीमी आवाज में कहा, "अजीतसिंह का खून बड़ी निर्दयता के साथ हुआ है। आपको इस वक्त हमारे साथ रहना चाहिए,

अजीतसिंह के लिए···। हमें हर हालत में खूनी का पता लगाना है।"

वह साँस खींचकर फिर कुर्सी पर बैठ गयी। सहज आवाज में बोली, "आप बैठ जाइए···मैं बता रही हूँ। संदीप की माँ का नाम रूबी है।"

"रूबी ?" सिद्दीकी शायद किसी अचम्भे के लिए पहले से तैयार था, "पर उसकी शादी तो १९६२ के लगभग हुई थी।"

"जी हाँ। पर संदीप शादी के पहले पैदा हुआ था।"

वह उसे देखता रहा जैसे किसी और बात का अभी इन्तजार कर रहा हो। पर रत्ना चुप हो गयी थी। सहसा उसने पूछा, "आपके पति ने या किसी और ने क्या अजीतसिंह को बताया था कि रूबी संदीप की माँ है ?"

"नहीं। मैंने कभी नहीं कहा। पर शायद मेरे पति ने···मैं कह नहीं सकती।"

सिद्दीकी ने पूछा, "रूबी जब आपके कालिज में थी, क्या संदीप तभी पैदा हुआ था ?"

"जी हाँ ?"

"इसका पिता कौन है ?"

रत्ना चुप रही। फिर तमककर बोली, "मुझसे रूबी को कितना धोखा दिलाइगा ? अब आप खुद रूबी से ही क्यों नहीं पूछते ?"

सात

फूटपाथ पर आकर सिद्दीकी ने चारों ओर देखा। सूरज ने हवा की रही-सही ठण्डक सोख ली है। छाया से बाहर आते ही उसे एक तिलमिलाहट का अनुभव हुआ।

मोटर-साइकिल स्टार्ट करके वह सड़क पर आ गया। लगभग तीन फर्लांग आगे उसे एक पुलिस चौकी मिली। वहाँ एक हेड-कान्स्टेबुल से उसने कागज पर एक पता लिखकर कहा, "इस नम्बर पर हमारे सब-इंस्पेक्टर अस्थाना होंगे। उन्हें इसी वक्त यह खबर पहुँचा दो कि वह मिसेज रूबी को अपने साथ लेकर जितनी जल्दी हो सके, कैसरबाग कोतवाली पर आ जायें। उन्हें बता देना, मैं मिसेज रूबी से थाने पर ही बात करना चाहूँगा।"

हेड कान्स्टेबुल ने पूरी बात पचाकर पूछा, "ये मिसेज रूबी कौन हैं ?"

"तुम्हारी माँ है !" सिद्दीकी ने बिगड़कर जवाब दिया, फिर सधकर बोला, "तुम पुलिस में काम करते हो या भाड़ झोंकते हो ? आज के अख-

चार की शक्ल नहीं देखी ?"

हेड कान्स्टेबुल की अक्ल भाड़ झोंककर वापस आ गयी। बोला, "ओह ! अरे वो···!"

"जी हां ! वो···"

चौकी से बाहर आकर वह सी० आई० डी० से सुपरिटेंडेंट विद्यानाथ सिनहा के बंगले पर पहुंचा। वहां लगभग घण्टे-भर उनसे सलाह-मशविरा करता रहा। जब वह बाहर आया तब दस बजनेवाले थे। वहां से वह सीधा कोतवाली पहुंचा। थोड़ी देर वहां दफ्तरवाले कमरे पर जाकर रुका रहा और बातचीत करता रहा। कोतवाली पर निचली मंजिल के कोने में एक कमरे के पास एक कार खड़ी हुई थी। यह वही कमरा था जहां 'चचा' इंस्पेक्टर ने अजीतसिंह के पोस्टमार्टम की रिपोर्ट टेलीफोन पर पायी थी और जिससे उसकी हत्या के मामले की पूरी शक्ल ही बदल गयी थी। इस समय उस कमरे में सब-इंस्पेक्टर अस्थाना के साथ रूबी और एक दूसरा व्यक्ति बैठा हुआ था। सिद्दीकी ने बिना पूछे ही समझ लिया कि यह व्यक्ति रूबी का वही रिश्तेदार होगा जिसके यहां वह पिछली दो रातों से रह रही है। वही उसे अपनी कार में वहां लाया था। सिद्दीकी के कमरे में आकर बैठ जाने के बाद, एक-दूसरे का परिचय हो चुकने पर उसने कहा, "मिस्टर सिद्दीकी, यह बड़े ताज्जुब की बात है कि हमसे बात करने के लिए आपने हमें यहां बुलाया है। शायद यह कहने की जरूरत नहीं कि मिसेज हरिश्चन्द्र को इस समय आप सबकी हमदर्दी की जरूरत है। मैं समझता हूं कि यह ज्यादा स्वाभाविक होता कि आप खुद इस समय हमारे यहां तशरीफ लाये होते !"

सिद्दीकी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, पर चुप हो गया। अचानक उसने कड़ी आवाज में कहा, "आप बगल के कमरे में जाकर बैठिए। जब जरूरत होगी, मैं आपको यहां बुला लूंगा।"

सिद्दीकी की बात से उस व्यक्ति को एक झटका-सा लगा। उसने कहा, "यह सब क्या है ? थर्ड डिग्री ?"

सिद्दीकी ने कहा, "आप चाहे जो समझें, पर हम एक खून की जांच कर रहे हैं। उसमें एक गोली से घायल और बेहोश इन्सान को जहर देकर मारा गया है। अब आप बाहर तशरीफ ले जायें।"

रूबी अब तक चुपचाप बैठी हुई थी। उस आदमी के चले जाने के बाद उसने सिद्दीकी से स्पष्ट स्वर में कहा, "जहां तक मेरा ताल्लुक है, मेरे

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप मुझसे मेरे घर पर बात करें हाँ पर। आप बतायें, मैं इस मामले में क्या मदद कर सकती हूँ।"

सिद्दीकी उस पर अपनी निगाह जमाये रहा। फिर धीरे-धीरे, एक-क शब्द को स्पष्ट करते हुए उसने कहा, "मिसेज रूबी, हमें सब कुछ लूम है। आप हमारी यही मदद कर सकती हैं कि आपने जो कुछ किया है, हमें सच-सच बता दीजिए। उसमें हम दोनों को आसानी होगी।"

अब रूबी ने सिद्दीकी को शक की निगाहों से देखा। उसका गोरा चेहरा तमतमा उठा था। उसने धीरे-से पूछा, "मैंने क्या किया है?"

सिद्दीकी बड़े नाटकीय ढंग से अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। मेज के कोने पर टिकते हुए उसने इतमीनान से सिगरेट सुलगायी और धीरे-धीरे कहता गया, "लगभग दस साल पहले—१९५९ की बात है—आप मेरठ में एम० जी० गर्ल्स कालेज में लेक्चरर थीं। तब आपकी शादी नहीं हुई थी। उस वर्ष आपका एक बच्चे से परिचय हुआ था। बच्चे का नाम संदीप है। उसकी उम्र अब दस साल से ज्यादा हो चुकी है और वह नैनीताल के एक पब्लिक स्कूल में पढ़ रहा है। वह आपकी दोस्त मिसेज रत्ना का दत्तक पुत्र है। क्या आप बता सकती हैं, संदीप और आपका क्या रिश्ता है?"

रूबी का चेहरा पीला पड़ गया था। वैसे भी इस वक्त उसके चेहरे पर कोई मेकअप नहीं था। सवेरे के स्नान की ताजगी ही उसकी सहज सुन्द रता को बढ़ाने में मदद कर रही थी। पर इस सवाल ने एकदम से उस चेहरे की कान्ति छीन ली। उसने कहा, "आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं

उसके होंठों के कोने काँपने लगे थे। सिद्दीकी उसे बराबर घू रहा। फिर अपने बैठने का ढंग बदलकर बोला, "देखिए, मैं आपको ज पसोपेश में नहीं डालना चाहता। आपके बारे में मुझे जितना मालू वह मैं खुद बताये देता हूँ। आप सुनकर सिर्फ इतना बता दें, यह या गलत।"

उसकी निगाहों से लगता था, वह एक ऐसे जाल में फँस गयी तोड़कर निकला नहीं जा सकता। थोड़ी देर सन्नाटा रहा। फिर ने, जैसे वह कोई फैसला सुना रहा हो, सधी आवाज में रुक-रुक शुरू किया, "मुझे मालूम है कि संदीप आपका ही लड़का है आपकी शादी के पहले पैदा हुआ था।"

कहकर वह चुप हो गया, जैसे वह किसी पत्थर के टुक

स्विमिंग-पूल में डूबता हुआ देख रहा हो और उसके तह में जाकर बैठ जाने का इन्तज़ार कर रहा हो। रूबी की आँखें फटी-सी रह गयीं। मिट्ठी ने कहा, "मुझे यह सब कहते हुए अफ़सोस होता है। पर अब असलियत का छिपना नामुमकिन है।"

थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा, "संदीप और आपके रिश्ते की बात दो-तीन लोगों को छोड़कर और कोई नहीं जानता। यक़ीनन आपके पति मिस्टर हरिश्चन्द्र भी इसे नहीं जानते। पर यही बात अजीतसिंह के बारे में नहीं कही जा सकती। वह जानता था कि संदीप की माँ आप हैं···

"अजीतसिंह के घर में एक फ़ोटो मिला है। इसे आप देख सकती हैं।" कहकर उसने अपनी जेब से फ़ोटो निकाला और अपनी दो उँगलियों से थामकर उसे रूबी की आँखों के सामने हिलाया। वह कहता रहा, "इसमें आप अपने बच्चे के साथ मौजूद हैं। इसमें मिसेज रस्ता भी हैं। अजीतसिंह ने यह फ़ोटो बड़ी होशियारी से छिपाकर रखा था। अजीतसिंह से आप पिछले दिनों काफ़ी मिलती रही हैं। पर वह आपके घर पर ज़्यादा नहीं बैठता था। ज़्यादातर आप ही उसके साथ बाहर जाती थीं। परसों आपने आठ हज़ार रुपये बैंक से निकालकर अजीतसिंह को दिये। वह रुपया अजीतसिंह के घर में बरामद हुआ है। उसी शाम को किसी ने अजीतसिंह के घर का ताला तोड़कर वहाँ की बड़ी जल्दबाज़ी में तलाशी ली है। शायद तलाशी ही के दौरान उसके जूड़े में लगी हुई गुलाब की एक कली उसके रेडियोग्राम के पास गिर गयी थी, जो बाद में हमें मिली है। वह किसी फूलदान की कली नहीं हो सकती, क्योंकि उस फ्लैट में और सब कुछ है, सिर्फ़ ताज़े फूलों के लिए फूलदान ही नहीं हैं।

"परसों की ही रात ११ बजे अजीतसिंह को अस्पताल में किसी ने ज़हर दे दिया। उसकी मृत्यु उसी ज़हर से हुई। ज़हर की शीशी अस्पताल के कम्पाउण्ड में एक डस्टबिन में पायी गयी है। वह एक छोटी-सी कत्थई रंग की शीशी है जिसमें एक औंस से ज़्यादा पानी आ सकता है। वैसी ही कुछ शीशियाँ आपके घर पर, आपके अपने कमरे में भी हैं।

"मिसेज रूबी, परसों रात ११ बजे के लगभग आप अजीतसिंह को अस्पताल में देखने भी गयी थीं और आप उसके पास तीन मिनट तक अकेली रही थीं। इन सब बातों को एकसाथ देखने से कुछ नतीजे निकले हैं। पूरे मामले की सचाई उन्हीं नतीजों में छिपी हुई है। मैं चाहता हूँ कि आप ख़ुद वह सचाई हमारे सामने प्रकट कर दें। इसी में आपकी भलाई है।"

कि रूबी बेहोश होने जा रही है। वह कुर्सी से पीठ टिकाकर बैठ गयी। उसने आँखें बन्द कर लीं और कुछ देर तक कुछ नहीं बोली। आखिर आँखें खोलीं और अपने पर काबू पाने की पूरी कोशिश करके बोली, "इंस्पेक्टर साहब, आप क्या कहना चाहते हैं? यही न कि अजीतसिंह मेरे और संदीप के रिश्ते को जानकर मुझे ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहा था और मैंने मौका मिलने पर उसे जहर देकर मार डाला। बोलिए, आपका यही मतलब है न?"

सिद्दीकी कुछ नहीं बोला। चुपचाप सिगरेट पीता रहा। उसकी निगाह से ऐसा लगा कि वह खुद रूबी के बोलने का इन्तजार कर रहा है। अन्त में रूबी ने ही कहा, "आपने जितने नतीजे निकाले हैं, सब गलत हैं।"

सिद्दीकी के कुछ कहने के पहले ही रूबी का रिश्तेदार आँधी की तरह कमरे में घुस आया। उसे देखते ही सिद्दीकी उठ खड़ा हुआ। रिश्तेदार रूबी की बेंच के पीछे खड़ा हो गया, जैसे रूबी के लिए वह सिद्दीकी के सभी वार झेलने के लिए तैयार हो। सिद्दीकी ने कड़ी आवाज में कहा, "आपको बाहर रहने के लिए कहा गया था?"

"मालूम है। पर इन्हें बरगलाकर आप इनका उल्टा-सीधा बयान नहीं ले सकते।"

सिद्दीकी ने उसकी ओर तीखी निगाह से देखा। बोला, "आप बाहर चले जायँ। वरना मैं आपको कमरे के बाहर फेंक दूँगा। उससे आपको तकलीफ होगी।"

वह रूबी के पीछे पहले ही की तरह खड़ा रहा। बोला, "यह आपका घर नहीं है। सरकारी जगह है।" कहकर वह रूबी से बोला, "रूबी, तुम यहाँ कोई भी बयान मत दो। बिल्कुल खामोश रहो। यह तुम्हें कुछ भी कहने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। मैं वकील को बुलाने जा रहा हूँ।"

रूबी ने बैठे ही बैठे उसका हाथ थपथपाया और कहा, "नहीं, मुझे इनसे कुछ भी नहीं छिपाना है। सुनिए..." वह सिद्दीकी से कहने लगी, "यह सरासर झूठ है कि मैं अजीतसिंह के फ्लैट पर कभी तलाशी लेने के लिए गयी थी। परसों शाम मैं दो-एक मिनट के लिए उसकी मौजूदगी में जरूर गयी थी। और यह हो सकता है तभी मेरे बालों से वह फूल वहाँ गिर गया हो। और यह सरासर झूठ है कि मैंने अजीतसिंह को अस्पताल में जहर दिया है।"

उसका रिश्तेदार चीखकर बोला, "तो अब आप लोग रूबी को फँसाने की कोशिश में हैं। आपको कोई और नहीं मिला?"

सिद्दीकी धीरे-धीरे फिर पहले की तरह अपनी जगह बैठ गया था। संयत होकर बोला, "आप ठीक समझे हैं। अब तक हमें जितना सबूत मिला है, उससे मिसेज रूबी का ही जुर्म प्रकट होता है।"

"तो क्या आप इन्हें गिरफ्तार कर रहे हैं ?"

सिद्दीकी कुछ सोचता रहा। फिर बोला, "आप यह भी ठीक ही समझे हैं।"

रूबी को जैसे विश्वास नहीं हो रहा हो। उसने कहा, "क्या सचमुच आप अब मुझे घर न जाने देंगे।"

"मुझे अफसोस है। पर मुझे अब आपको थाने पर ही रखना होगा। हो सकता है, अजीतसिंह को जहर आपने न दिया हो। पर पूरे वाकिआत आपके खिलाफ पड़ते हैं और मामले की जांच पूरी होने तक आपको हमें गिरफ्तारी में रखना पड़ेगा। इसकी सूचना आपके पति को या जिसे बतायें उसे दे दी जाये।"

उसने रूबी के रिश्तेदार से कहा, "आप जायें। अपने वकील को बता दें।" पर ये शब्द सहजता से कहे गये थे। इनमें मखौल नहीं था। थोड़ी देर कमरे में शान्ति रही। अब तक रूबी ने अपने को पूरी तौर में संयत कर लिया था। बोली, "कृपया इसकी इत्तिला मेरे पति को इसी वक्त भेज दें। बल्कि मैं चाहूँगी कि आप मुझे इजाजत दे दें कि मैं उन्हें फोन कर दूं।"

सिद्दीकी ने अस्थाना को उस कमरे में फोन ले आने का इशारा किया। अस्थाना बाहर चला गया। रूबी थोड़ी देर सिर झुकाये बैठी रही। उसकी आंखों के आगे अगले दिन के अखबार की सुर्खियाँ नाच रही थीं, जिनमें कहा जायेगा कि पति ने पहले अजीतसिंह को गोली चलाकर मारना चाहा और बाद में पत्नी ने उसे जहर देकर खत्म कर दिया। उसको गले में जकड़न-सी महसूस हुई। पर उसने कमरे के चारों ओर, और दरवाजे के बाहर देखकर अपने को इतमीनान दिलाया कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। बाहर वैसे ही हवा बह रही है, सूरज वैसा ही चमक रहा है।

जब वह बोली तब उसकी आवाज सधी हुई थी, "अपने पति के अलावा मैं अपने परिवार के एक मित्र को भी बुलाना चाहती हूँ। शायद आपको इसमें कोई एतराज न होगा।"

"क्या नाम है उनका ?"

"उमाकान्त।"

"उ मा का न्त ।" सिद्दीकी ने एक-एक अक्षर अपने होंठों से धीरे-धीरे निकाला। कुछ देर वह छवी की ओर देखता रहा।

आठ

शेविंग ब्रुश का हैण्डिल टूटा हुआ था। इसलिए, शेविंग-क्रीम का फेना दाढ़ी पर फैलने के बजाय उमाकान्त की उँगलियों पर फैलकर कुहनी तक बहने लगा था। शीशे में अपने चेहरे को घूरते हुए उमाकान्त ने चालीसवीं बार अपने को हुक्म दिया, "नया ब्रुश खरीदना आज मत भूलना।"

उमाकान्त एक पत्रकार था। पहले वह दिल्ली में एक प्रसिद्ध अखबार के विशेष संवाददाता का काम करता था। अपराधों की रिपोर्टिंग करने में वह बड़ा होशियार समझा जाता था। अपराध और अपराधियों के बारे में उसकी गहरी जानकारी थी।

पिछले कई दिनों से वह इसी वक्त अपने को यह हुक्म सुनाता आ रहा था। पर घर से बाहर निकलते ही रोज अपने हुक्म की तामील करना भूल जाता था। सवेरे दाढ़ी बनाने के लिए फिर वही टूटा ब्रुश उसके हाथ में होता था। किसी तरह दाढ़ी खरोंचकर गैस के स्टोव पर उबलते हुए दो अण्डों की ओर उसने ध्यान दिया—जाहिर था कि वे पत्थर की तरह कड़े हो गये होंगे। उसने स्टोव के दूसरे रिंग पर चाय का पानी रख दिया और बाथरूम में घुस गया। थोड़ी देर में बाथरूम के फव्वारे से पानी गिरने की आवाज ने फ्लैट की सभी आवाजों को चित कर दिया।

पर फोन की घण्टी की आवाज ऐसी आवाजों को हमेशा ही मात देती रहती है। सामने के कमरे में फोन बड़ी जिद के साथ बजा और तब तक बजता रहा जब तक कि उमाकान्त ने साबुन से पुते हुए जिस्म पर तौलिया लपेटकर, एक झपट में बाथरूम से निकलकर रिसीवर अपने कान में नहीं लगा लिया, "हलो, मैं उमाकान्त···"

उधर से किसी की बात पूरी होने के पहले ही वह चीखा, "मेरे कमरे में बाढ़ आ रही है। अपनी बात जल्दी खत्म कीजिए।"

सचमुच ही उसके जिस्म से गिरी हुई पानी की बूंदों ने मिलकर कमरे में दो-तीन पतली नदियाँ फर्श पर बहा दी थीं।

वह थोड़ी देर कान पर रिसीवर लगाये सुनता रहा, फिर बोला, "वे कहते हैं छवी ने खून किया है? तब तो मुझे उसका दर्शन करने आना ही

पड़ेगा। ऐसी शक्ल-सूरतवाले खूनी आजकल कहाँ मिलते हैं ?"

दो मिनट में जिस्म पर पुता हुआ साबुन शावर के नीचे बहाकर, खूब कड़े अण्डे, खूब काली कॉफी और खूब जले हुए टोस्टों का दिन के ग्यारह बजे नाश्ता करके, वह स्कूटर पर तेजी से कोतवाली की ओर चल दिया।

अपराधों की रिपोर्टिंग करते-करते उमाकान्त में तीन विषयों की दिलचस्पी पैदा हुई—उसने समाज-शास्त्र का नियमित अध्ययन किया, अपराध-शास्त्र के बारे में लेख लिखने शुरू किये, और अपराधों की, खास तौर से खून के मामलों की, निजी तौर से जाँच-पड़ताल करने लगा। इससे बाद में कई आश्चर्यजनक परिणाम निकले। खून के कई ऐसे मामले, जिन्हें पुलिस यह समझकर खत्म कर चुकी थी कि अपराधी का पता नहीं चलेगा, उसकी कोशिशों से सुलझ गये। यही नहीं, कई ऐसे मामलों में जिनमें पुलिस एक रास्ते से चल रही थी, उसने दूसरे रास्ते से चलना शुरू किया और बाद में साबित हुआ कि पुलिस गलत आदमी को अपराधी समझ रही थी। इससे पुलिस के ऊँचे वर्गों में उमाकान्त की हैसियत बढ़ी। पर नीचे के वर्गों में उसका पुलिस से प्रेम और घृणा का मिला-जुला रिश्ता बनता गया। अपराधों की दुनिया में जिसे 'अण्डरवर्ल्ड' कहा जाता है, उससे उसका अजब-सा सम्बन्ध बन चुका था। बहुत-से अपराधी, खास तौर से वे जो उस दुनिया से हटकर साधारण जीवन बिताने लगे थे, उसे अपना साथी समझते थे और उसका आदर करते थे।

उधर जनसाधारण में उमाकान्त को धीरे-धीरे क्राइम-रिपोर्टर के बजाय एक 'प्राइवेट जासूस' गिना जाने लगा। पर अभी हमारे यहाँ प्राइवेट जासूसों का वर्ग विकसित नहीं हुआ है, इसलिए अपनी ओर से वह क्राइम-रिपोर्टर ही रहा, पेशेवर जासूस नहीं।

पिछले पाँच वर्षों से उमाकान्त लखनऊ आ गया था और अब बम्बई के एक अखबार का संवाददाता था। पर उसके लिए ज्यादा काम नहीं था। इससे उसे अपराधों की जाँच-पड़ताल करने का काफी समय मिल जाता था। इस वक्त, दिन के साढ़े ग्यारह बजे, वह कोतवाली के एक कमरे में बैठा हुआ था। कमरे में उसके अलावा रूबी और हरिश्चन्द्र थे। कमरा बहुत छोटा था और चार-पाँच कुर्सियों को छोड़कर उसमें कुछ भी नहीं था। उसने रूबी से कहा, "आपकी मदद करने के पहले मैं एक मामूली-सा सवाल पूछना चाहता हूँ।" उसने पूछा, "अजीतसिंह को आपने जहर दिया था या

नहीं ?"

यह सवाल उसी लहजे में किया गया जैसे पूछा गया हो कि आज आपने चाय पी या नहीं ?

रूबी ने लगभग चीखकर कहा, "मैं आपसे पहले ही कह चुकी हूँ···"

उमाकान्त ने उसकी बात बीच ही में काट दी। बोला, "इस बारे में आपने मुझसे पहले कुछ नहीं कहा है। अभी तक आपने मुझे जितनी बातें बतायीं उनसे सिर्फ यह पता चलता है कि पुलिस आपके खिलाफ क्या-क्या सोच रही है और क्या करने जा रही है। खुद आपने मुझे अपने बारे में साफ तौर से कुछ नहीं बताया। मैं सब कुछ जानना चाहूँगा। और कुछ और जानने के पहले पहली बात यही जानना चाहूँगा कि अजीत-सिंह को आपने जहर दिया है या नहीं ?"

रूबी ने जोर से कहा, "नहीं, नहीं, नहीं।" लगा कि अब वह रो देगी।

उमाकान्त ने यह बात चुपचाप सुन ली। फिर बिना किसी आवेग के कहने लगा, "सिर्फ एक ही 'नहीं' काफी है।"

थोड़ी देर कमरे में शान्ति रही। फिर उमाकान्त ने कहा, "अब आप मुझे अपने और अजीतसिंह के सम्बन्धों के बारे में पूरी-पूरी बात बतायें।"

अब तक रूबी अपने को संयत कर चुकी थी। उसने हरिश्चन्द्र की ओर गम्भीरता के साथ देखा और बोली, "मैं अपनी बात खास तौर से तुम्हें सुनाना चाहती हूँ। तुमने पहले भी कई बार अजीतसिंह के साथ मेरे मेल-जोल को लेकर अपनी नाराजगी दिखायी थी। तुम यही समझते रहे कि मेरा और उसका प्रेम-सम्बन्ध है। मैंने पहले भी कई बार तुम्हारा सन्देह मिटाने की कोशिश की थी। अब आज शायद आखिरी बार, मैं यह दोहराना चाहती हूँ कि तुम्हारा शक बिल्कुल गलत था। मेरा अजीत-सिंह से ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं था।"

हरिश्चन्द्र चुपचाप उसकी बात सुनता रहा। उमाकान्त ने एक अखबार के पन्ने उलटने शुरू कर दिये थे, मानो इन घरेलू बातों से उसका कोई सरोकार न हो। रूबी कहती रही, "मैंने अपनी यह मुसीबत अपने हाथों पैदा की है। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि तुमसे शादी के पहले या उसके बाद सच बात बता देती। अजीतसिंह मेरी इसी कमजोरी का फायदा उठाता रहा।"

इसके बाद वह उमाकान्त की ओर मुखातिब हुई। वह कुर्सी पर निश्चल बैठी हुई थी और सधी आवाज में बात कर रही थी। उसके मन में अगर कोई आवेग था तो वह उसके हाथों की उँगलियों से ही प्रकट हो रहा था। वह बराबर अपनी कुर्सी के हत्थे पर उँगलियाँ फेरती जाती थी। उसने कहना शुरू किया, "बात १९५८ के शुरू के दिनों की है। तब मैं लगभग चौबीस साल की थी और•••" यहाँ वह उदास ढंग से मुसकरायी, "बदसूरत नहीं थी। हमारे माँ-बाप दिल्ली में थे। उन्हें छोड़कर मैं मेरठ के एम० डी० गर्ल्स कालेज में लेक्चरर होकर आयी थी। रत्ना भी वहीं पर लेक्चरर थी। उसकी शादी हो चुकी थी। मेरी-उसकी बड़ी घनिष्ठ मित्रता थी। जब मैं यूनिवर्सिटी में थी तभी मेरी मित्रता आनन्द से हो गयी थी। आनन्द लुधियाना का रहनेवाला था और फौज में सेकिण्ड लेफ्टिनेंट की हैसियत से दिल्ली में नियुक्त हुआ था। मेरठ में मेरे आ जाने के बाद वह मेरठ आकर मुझसे मिलता रहा। कभी-कभी उससे मिलने के लिए मैं दिल्ली भी जाती थी। आनन्द की ज्यादा प्रशंसा करके मैं इनको (यहाँ उसने हरिश्चन्द्र की ओर देखा) उलझन में नहीं डालना चाहती। शायद इतना कहना काफी है कि वह बड़ा ही सभ्य, बड़ा ही शरीफ इन्सान था। हमने काफी पहले तय कर लिया था कि हम शादी करेंगे। पर शादी करने के पहले वह कैप्टेन हो जाना चाहता था और उसकी इच्छा थी कि उसकी नियुक्ति किसी ऐसे स्टेशन पर हो जाये जहाँ वह मुझे लेकर रह सके।

"१९५७ के अन्त में वह कैप्टेन बन गया और उसकी नियुक्ति उत्तर-पूर्वी सीमान्त क्षेत्र में हुई। वहाँ जाने के पहले वह चार दिन के लिए मेरठ आया और हम लोग साथ-साथ रहे। उसी के दो महीने बाद उसे अपनी बहन की शादी में भाग लेने दो-चार दिन के लिए वापस आना था। हमने तय किया कि उसी समय हम लोग भी अपनी शादी कर लेंगे। पर नेफा में जाने के बाद वह वापस नहीं आया। दो महीने के भीतर ही एक एक्सिडेण्ट में वह मारा गया। उसकी जीप सड़क से फिसलकर एक गहरे खड्ड में गिर गयी थी और उस दुर्घटना में कोई भी नहीं बचा था। आनन्द को बहुत पहले ही मैं अपना पति बना चुकी थी। कानून की निगाहों में वह भले ही मेरा कोई न हो, पर मैं उसे अपना सब कुछ समझती थी। नेफा में उसके नियुक्त होने के कुछ दिनों बाद ही मुझे पता चला, मैं माँ बननेवाली हूँ। पर उस वक्त मुझे कोई घबराहट

नहीं हुई। मैंने आनन्द को खत भेजकर पूरी बात बता दी थी और उसने जवाब भी भेजा था कि वह जल्दी ही वापस आकर शादी की रस्म पूरी कर जायेगा। उसके खत आज भी मेरे पास मौजूद हैं। पर आनन्द के न रहने से मेरी हैसियत एकदम से बदल गयी थी। मेरी ओर से कल तक जो एक स्वाभाविक व्यवहार की बात थी, वही अब अचानक अपराध बन गयी और मेरे लिए लाजमी हो गया कि मैं झूठ का सहारा लूं।

"रत्ना को यह सभी घटनाएं शुरू से मालूम थीं। विपत्ति के उन दिनों में उसने मेरा बड़ा साथ दिया। मैंने कालेज से छुट्टी ले ली। संदीप के पैदा हो जाने पर कुछ दिनों तक उसे हमने दिल्ली के एक बालगृह में रखा और साल-भर बाद ही रत्ना ने उसे अपने दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। उसके बाद वह रत्ना के यहां रहने के लिए आ गया। वह रत्ना को ही अपनी मां समझता है और उसके नाते मुझे भी अब तक बहुत प्यार करता है। अब आगे वह मेरे बारे में क्या सोचेगा, यह मैं सोच भी नहीं पा रही हूं। यह सब नौ-दस साल पहले की बातें हैं। धीरे-धीरे जिन्दगी फिर अपने पुराने ढर्रे पर चलने लगी। पर मुझे लगता रहा, मेरा सब-कुछ खो गया है और मुझे सारा जीवन इसी तरह चारों ओर से वंचित रहकर बिताना पड़ेगा। पर दो साल बाद ही अचानक मेरी तुमसे मुलाकात हुई।"

यह बात उसने हरिश्चन्द्र से कही। वह उसे कुछ देर उदासी के साथ देखती रही। कमरे में खामोशी थी। उमाकान्त और हरिश्चन्द्र में से किसी ने भी उसे तोड़ने की कोशिश नहीं की। कुछ देर बाद रूबी ने ही कहना शुरू किया, "उसके बाद ही मुझे लगा, अभी मेरे लिए सब-कुछ खत्म नहीं हुआ है। यह बात सुनने में भले ही खोखली मालूम दे, पर सही है कि तुम्हें जितनी गहराई से मैंने चाहना शुरू किया उसमें पिछले दिनों का सारा दुख डूबकर खत्म हो गया था। मैं जानती थी, कभी न कभी वे पिछले दिन मुझसे बदला जरूर लेंगे। पर तुमसे मिलने के चार महीने बाद ही मुझे लगने लगा कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं रह सकती। मजबूरन मुझे झूठ का सहारा लेना पड़ा। पहले मैं रोज सोचती थी कि तुमसे शादी करने के पहले तुम्हें पूरी बात बता दूं। पर मेरी हिम्मत मुझे हमेशा धोखा देती रही और आखिर में, शादी के बाद, मैं बिलकुल ही कमजोर हो गयी। तुम्हें संदीप के बारे में सब-कुछ बता देने की रही-सही ताकत भी जाती रही। मैं अपने को इस धोखे में रखने लगी कि इसे छिपाकर

ही हम दोनों अपने विवाहित जीवन में सुखी रह सकते हैं। अफसोस यही है कि मैं तब भी भीतर से यही जानती थी कि मैं गलत सोच रही हूँ। उसके बाद जो कुछ हुआ, शायद उसकी तुम्हें जानकारी हो ही गयी हो। अजीतसिंह रत्ना का चचेरा भाई था। वह एक बार मेरठ ऐसे मौके पर आया जब वहाँ संदीप भी मौजूद था। रत्ना और संदीप के साथ मेरा एक फोटो लिया गया था जिसकी एक कॉपी अजीतसिंह ने रत्ना के यहाँ से किसी तरह पा ली थी। उसे शायद रत्ना के पति से ही यह मालूम हो गया कि संदीप मेरा लड़का है। यह जानकारी उसने शायद अब से दो साल पहले पायी थी, क्योंकि तभी मेरठ से लौटते हुए, जब वह एक बार रत्ना के साथ हमारे घर आया, उसने मुझसे एकान्त में बात करने की इच्छा प्रकट की। मैंने उससे पूछा कि वह कौन-सी जरूरी बात हो सकती है जिस पर आप इस तरह बात करना चाहते हैं। तब उसने कहा कि मैं 'जनक्रान्ति' का सम्पादक हूँ। उसमें मुझे एक लेख निकालना है, जिसके लिए मुझे आपसे मदद लेनी है।

"···और उसके बाद ब्लैकमेल का दौर शुरू हुआ। उसने मुझे बताया था कि संदीप के बारे में सिर्फ फोटो ही नहीं बल्कि और कई तरह के प्रमाण भी उसने इकट्ठे कर लिये हैं। आनन्द के परिवारवालों से उसने यह जानकारी ले ली थी कि वह मुझसे शादी करनेवाला था। नेफा जाने जाने से पहले मेरठ में जब आनन्द मेरे पास चार दिन के लिए आया था तब उसके मेरे साथ रहने के कई प्रमाण भी उसने शायद खोज लिये थे। वह मुझे बराबर भय दिखाता था कि 'जनक्रान्ति' में वह मेरे पिछले जीवन के बारे में, बिना मेरा नाम दिये, एक कहानी छापेगा। उस कहानी के सिलसिले में हमारा और संदीप का फोटो भी उसी के साथ ही प्रकाशित करेगा। मैं जानती थी कि मेरे सामाजिक और विवाहित जीवन को खत्म कर देने के लिए इतना बहुत काफी होगा। यह भी सही है कि वह मुझसे सिर्फ रुपया ही नहीं चाहता था, अगर मैं उसकी बात मानती तो वह मुझे अपनी प्रेमिका भी बनाकर रखता। इस बात का कई बार वह इशारा भी कर चुका था। शायद इसीलिए वह जिद करता था कि मैं उससे अपने घर से बाहर मिलूँ। वह पहले भी मुझे अपने साथ डायमण्ड होटल ले जा चुका था। वहाँ उसका अलग से एक कमरा था जिसमें वह अपनी गन्दी लिखा-पढ़ी का काम मौके-बेमौके आकर करता रहता था। वह प्रायः यही चाहता कि डायमण्ड होटल में मैं उसके कमरे में आकर

… । उसकी बातें सुनूं, उसे रुपया दूं और यदि हो सके तो उसकी दूसरी …च्छाओं को भी पूरा करूँ ।

"…पर उसका जोर ज्यादातर रुपये ही पर था । रुपये की एक किस्त …कर वह सन्तुष्ट हो जाता था और फिर मुझसे किसी दूसरी प्रकार की …आशा नहीं करता था । कुछ दिनों के बाद ही वह मुझे फिर परेशान करना …शुरू करता । इन आठ हजार रुपयों के अलावा वह मुझसे अलग-अलग मौकों पर सात-आठ हजार रुपये अलग से ले चुका होगा । आखिर में मेरे बहुत खुशामद करने पर वह इस बात के लिए तैयार हो गया था कि वह मुझे फोटो वापस करके हमेशा के लिए छुट्टी दे देगा । पर इसके लिए उसने मुझसे एक भारी रकम मांगी थी और आखिर में बात आठ हजार पर तय हुई थी ।

'उसके बाद की घटनाएँ तुम्हें मालूम ही हैं ।" उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "अब तुम्हें सब-कुछ मालूम हो गया है । अजीतसिंह खत्म हो गया है । मैंने उसकी हत्या नहीं की है, पर उसकी हत्या हो जाने पर मैं बहुत खुश हूँ ।"

यहाँ उमाकान्त ने, जैसे वह किसी मीटिंग में अपने दोस्त का समर्थन कर रहा हो, कहा, "मैं भी !"

रूबी ने आंख उठाकर उसकी ओर देखा, एक गहरी सांस ली और हरिश्चन्द्र से कहती रही, "पर यह दूसरी बात है कि हम दोनों उसकी हत्या के साथ ही भारी मुसीबत में पड़ गये हैं । मगर मैं इससे भी बड़ी-… बड़ी मुसीबतें झेल सकती हूँ । पर यह तभी हो सकेगा जब मुझे यकीन हो जाये कि तुमने मुझे माफ कर दिया है ।"

वह चुप हो गयी और खामोश निगाहों से जमीन की ओर देखने लगी… हरिश्चन्द्र ने हिचकिचाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया और धीरे-से उसक… उँगलियों पर अपनी उँगलियाँ रख दीं ।

सहसा उमाकान्त ने कहा, "इंस्पेक्टर सिद्दीकी ने मुझे बताया है … वह अपने सुपरिंटेंडेण्ट से पहले ही राय ले चुके हैं । वे मानते हैं कि ह… के आरोप पर अभी वे एकदम से आपका चालान नहीं कर सकते । … आपको हिरासत में लेने के लिए उनकी निगाह में काफी सबूत मौजूद … आज आपको यहाँ हवालात में रहना होगा और शाम तक शायद वे आ… जेल भेज देंगे ।"

उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "पति-पत्नी के आपसी मामलों में को…

राय देना खतरनाक है। खास तौर से मुझ जैसे आदमी के लिए, जिसके न कभी कोई पत्नी रही और जो न खुद कभी पति ही बन पाया। फिर भी अपने पुराने सम्बन्धों के नाते मैं एक सलाह देना चाहता हूँ, और वह यह है कि आप पर धारा ३०७ का मुकदमा चलने जा रहा है। बहुत मुमकिन है कि रूबी पर भी पुलिस धारा ३०२ का मुकदमा चलाने का पूरा-पूरा सबूत इकट्ठा कर ले और इनका भी चालान हो। सही घटना मालूम करने की मैं पूरी कोशिश करूँगा, पर उसका क्या नतीजा होगा, यह बताना मुश्किल है। इसलिए आप यही मानकर चलें कि आप दोनों अभी इन भारी मुसीबतों के नीचे दबे हुए हैं और आपका सारा ध्यान इन्हीं से लड़ने में रहना चाहिए। रूबी की पिछली जिन्दगी और आपके विवाहित जीवन के भविष्य का सवाल मेरी निगाह में बहुत ही मामूली है। रूबी ने कोई गलती भी की थी या नहीं, और की थी तो उसे आप माफ कर सकेंगे या नहीं, यह सब फिलहाल फालतू मसले हैं जिन पर इस वक्त तो आपको बिल्कुल ही नहीं सोचना चाहिए।"

फिर वह मुसकराता हुआ खड़ा हो गया और बोला, "तो लीजिए, यह उपदेश तो पति-पत्नी के आगे काम आयेगा। फिलहाल आप रूबी की जमानत की दरख्वास्त आज ही अदालत में पेश करा दें। मैं जानता हूँ कि वह खारिज हो जायेगी। फिर भी अदालत में उसका पहुँच जाना जरूरी है।"

उन दोनों को कमरे के अन्दर छोड़कर वह बाहर आया। दरवाजे पर दो कान्स्टेबिल खड़े थे। उन्हें नजरअन्दाज करते हुए वह आगे बढ़ा।

कुछ दूरी पर बरामदे में सिद्दीकी खड़ा हुआ था। उसने हाथ हिलाकर उमाकान्त का अभिवादन किया। वहीं से बोला, "कहिए भाई साहब, क्या नतीजा निकला? असली खूनी का आपने पता लगा लिया हो तो मिसेज रूबी को इसी वक्त छोड़ दिया जाये।"

कुछ दिनों पहले अखबारों में एक शब्द बहुत ही लोकप्रिय हो गया था—पारकलाम्। उस जमाने के कांग्रेस-अध्यक्ष कामराज से पत्रकार लोग जब किसी पेचीदा समस्या के बारे में पूछते तब उन्हें तमिल में जवाब मिलता—पारकलाम्। इसका मतलब था—देखते रहिए, इन्तजार कीजिए।

जैसे कोई चोटी का नेता विदेशी पत्रकारों की भीड़ में वक्तव्य दे रहा हो, कुछ उसी अन्दाज में उमाकान्त ने मुसकराकर सिद्दीकी से कहा, "पारकलाम्।"

दशाह को दफा ४२० के जुर्म में पहली बार पाँच साल जेल की सजा
ई तो पुलिस ने चैन की साँस ली। उसके बाद वे बराबर चैन की ही साँस
ते रहे क्योंकि जेल से बाहर आकर बादशाह ने चार सौ बीस का धन्धा
ी छोड़ दिया।

पर जब तक वह उस धन्धे में था उसकी अच्छी-खासी धाक थी। उसका नाम उत्तर प्रदेश से बाहर के कई राज्यों में भी फैला हुआ था और कई जगहों की पुलिस उसके आने की भनक तक पाकर अपने कान खड़े कर लेती थी। उसके कई किस्से मशहूर हो गये थे और बहुत-से लोग उससे सावधान रहने की कोशिश में ही गच्चा खा जाते थे।

बादशाह की सबसे बड़ी खूबी थी उसके स्वभाव की मिलनसारी और भलमनसाहत की बातचीत। जेल जाने के पहले, जेल के भीतर, और जेल के बाद किसी भी समय उसके स्वभाव का मीठापन खत्म नहीं हुआ था। जिन्दगी को वह इस तरह देखता था जैसे वह कोई मजेदार नाटक हो। इसीलिए उसे कभी दोस्तों और हितैषियों की कमी नहीं हुई।

किस्सा मशहूर है कि बादशाह जब दुलीचन्द उर्फ दीपंकर बोस उर्फ सैमुअल डिकुन्हा उर्फ सन्तोपसिंह उर्फ 'बादशाह' के नाम से गिरफ्तार हुआ तो उसे बड़ी इज्जत से बरेली के जेल में रखा गया। पुलिस को डर था कि वह चकमा देकर हवालात से किसी भी वक्त भाग सकता है। इसलिए अदालत में उसे न ले जाकर पुलिस ने इन्तजाम कराया कि जज जेल ही में जाकर उसका मुकदमा सुन लें। जज साहब उसके लिए जेल ही में इजलास लगाने लगे।

जज साहब की उम्र ज्यादा न थी और बादशाह में उनकी दिलचस्प पैदा हो गयी थी। इसलिए मुकदमे की सुनवायी खत्म हो जाने पर बादशाह से उसके बारे में थोड़ी देर बात कर लिया करते। वे उस अनुभव सुनने के लिए उतावले थे। पर बादशाह भगवान और भाग्य नाम लेकर उनकी बात टाल दिया करता था।

एक दिन बादशाह को जब वार्डर जज साहब के आगे से बैरक और ले जाने लगे तो उन्होंने उसे रोक लिया। बोले, "बादशाह, आज कोई करिश्मा दिखा ही दो। मैं जानना चाहता हूँ कि तुममें ऐसी क्या है कि बात की बात में तुम लोगों की जेब खाली कर देते हो।"

बादशाह ने मुसकराकर कहा, "हुजूर का ख्याल मेरे बारे में पहले ही से खराब हो चुका है।"

उन्होंने कहा, "उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे सामनेवाला मुकदमा तो इस बैंक के किस्से को लेकर है। पुरानी घटनाओं से मेरा कोई मतलब नहीं।"

बादशाह जज साहब के सामने फर्श पर बैठ गया। बोला, "हुजूर, मेरे पास कोई भी करिश्मा नहीं है। दोस्तों की मेहरबानी है, पब्लिक भी मुझे अपना समझती है। इसीलिए लोग अपने-आप मुझे अपना रुपया दे जाते हैं। वरना मैं किस लायक हूँ।"

"पर अजनबी लोग तुम्हें इस तरह अपना रुपया क्यों देंगे?"

"उनकी मेहरबानी है हुजूर, या ज्यादा से ज्यादा मेरी किस्मत कह लीजिए।"

जज साहब ने जिद की, "फिर भी, कोई एक करिश्मा तो दिखा ही दो।"

बादशाह ने मजबूरी से कहा, "मेरे पास कोई करिश्मा नहीं है, हुजूर। पर आपका हुक्म है, तामील करनी ही पड़ेगी।"

कहकर उसने जादूगरों की तरह चुस्त आवाज में कहा, "तो हुजूर, एक रुपया तो दीजिएगा जरा।"

जज साहब ने एक रुपये का नोट निकालकर बादशाह को दे दिया। उसने नोट को गौर से देखा। फिर उलट-पलटकर उसे मोड़ा और अपने दायें हाथ की मुट्ठी में लेकर बैठ गया।

जज साहब उत्सुकता से उसे देखते रहे। बादशाह नोट को मुट्ठी में लिये बैठा रहा। लगभग पाँच मिनट हो गये।

जज साहब ने पूछा, "अब?"

"अब क्या, हुजूर?"

"अब इसके बाद क्या होगा?"

बादशाह ने कहा, "अब इसके बाद होना ही क्या है हुजूर। आपसे पहले ही अर्ज किया था, लोगों की मुझ पर मेहरबानी रहती है। खुद मुझे अपना रुपया-पैसा सौंप जाते हैं। आपने भी मुझे अपना एक रुपया सौंप दिया है।"

जज साहब का चेहरा लाल हो गया। बोले, "वह रुपया वापस करो।"

बादशाह ने गिड़गिड़ाकर कहा, "हुजूर, मुझे क्या आप एक रुपये के पीछे जलली करेंगे? मैं तो हुजूर, इसे अपना ही समझ बैठा था। अब बिना

जब के यह रुपया तो मेरे पास से कोई ले नहीं पायेगा ! आप क्या
ा कि इसी के पीछे जेल में एक तमाशा खड़ा हो ?"

जज साहब चलने के लिए कुर्सी से उठ खड़े हुए। बोले, "तुम अव्वल दर्जे
हरामजादे हो !"

बादशाह ने इत्मीनान से रुपया अपनी जेब में रख लिया। सलाम करके
हा, "हुजूर की मेहरबानी है। वर्ना, मैंने पहले ही कहा था, मैं कोई
रिश्मा करना नहीं जानता।"

यही बादशाह उमाकान्त का साथी था और उसके इशारे पर नाचता
था।

बादशाह के कई नामों में पुलिस को 'दुलीचन्द' का नाम खास तौर से
याद था, परन्तु पुलिस जानती थी कि यह भी उसका असली नाम नहीं है।
अपने जमाने में 'अण्डरवर्ल्ड' के चोर-उचक्कों में उसे 'श्री चार सौ बीस'
कहा जाता था। पुलिस अफसर, इन्कमटैक्स अफसर, किसी बड़ी विदेशी
फर्म का प्रतिनिधि या कलकत्ता या बम्बई का एक बड़ा व्यापारी बनकर
वह लोगों को सैकड़ों बार उनकी रुपये की थैलियों से फुर्सत दे चुका था।
वह कहाँ तक पढ़ा था, बताना मुश्किल है। पर उसे कई भाषाएँ आती थीं
और बड़े-से-बड़े होशियार लोग उसके चकमे में आ जाते थे। बादशाह उर्फ
दुलीचन्द उर्फ 'श्री चार सौ बीस' सच्चे अर्थों में चार सौ बीस था।

बाद में उसको बरेली में एक बैंक से जाली चैक देकर रुपया निकालने
के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी भी उसके एक बहुत
प्यारे दोस्त की दगाबाजी के कारण हुई। बहुत-से अपराधों के आरोप में
उसका चालान किया गया, पर ज्यादातर मुकदमे बहुत जल्द खत्म हो गये
क्योंकि उनमें सबूत काफी नहीं थे। बादशाह के पास काफी रुपया था और
वह अच्छे से अच्छा वकील कर सकता था। पर वकीलों से बात करके उसे
यकीन हो गया था कि बरेली के इस बैंकवाले मुकदमे में वह बुरा फँस गया
है और उसकी बचत नहीं है। इसलिए उसने अपना जुर्म स्वीकार कर
लिया। बरेली में उसने महमूद हसन के नाम से बैंक में जाली चैक पेश
किया था। महमूद हसन की ही शैली में उसने अपना बयान दिया, "अल्लाह
के करम से और दोस्तों की मेहरबानी से इतने दिनों तक कमाता-खाता
रहा। जमाने ने मेरा बड़ा साथ दिया। अब हुजूर जितने दिनों के लिए
चाहें, जेल भेज दें। वहाँ तो कमाने-खाने के लिए किसी दूसरे की मेहरबानी
की भी जरूरत नहीं। अल्लाह के करम से ही काम चल जायेगा।"

उसे पाँच साल की सजा हुई।

पाँच साल पूरे होने के पहले ही वह छूट गया और छूटते ही कुछ अच्छे सामाजिक कार्यकर्ताओं के हाथों में गया। वे जेल से निकले हुए अपराधियों की भलाई के लिए दिल्ली में एक संस्था चला रहे थे। वहाँ उनको पढ़ाया-लिखाया जाता, तरह-तरह के व्यवसाय सिखाये जाते और बाद में उन्हें काम में लगाने के लिए मदद भी दी जाती थी।

बादशाह इस संस्था में दो साल तक रहा। उमाकान्त उन दिनों दिल्ली में ही था। वहीं उसकी उमाकान्त से जान-पहचान हुई। उमाकान्त ने देखा, वह असाधारण तरीके का होशियार, समझदार और खुशमिजाज आदमी है। वह उसमें कुछ ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा। इन दो सालों में बादशाह उस संस्था के 'मेस' का इन्तजाम देखता रहा था। उमाकान्त ने बादशाह को कई जगहों से आर्थिक सहायता दिलायी और 'मेस' के तजुर्बे के आधार पर उसे एक ढाबा चलाने की सलाह दी। इसके लिए उसे लखनऊ में यह दुकान भी मिल गयी। इस ढाबे का नाम बादशाह ने 'डी-लक्स होटल' रखा।

इसके साथ ही उसने अपराधों की जिन्दगी पूरी तौर से पीछे छोड़ दी। पर वह अपना अनुभव और दिमाग, और अल्लाह का करम, पीछे नहीं छोड़ सका। ढाबे से काफी पैसा आता था और दूसरों के मामलों में दिलचस्पी लेने के लिए समय भी उसके पास काफी था, जिसका उपयोग वह अपराधों की छानबीन में पुलिस को सहायता देने में करने लगा। उसके सम्पर्क चारों ओर फैले हुए थे। उनसे और अपनी काबलियत के सहारे पुलिस के लिए वह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ। कुछ दिनों बाद उमाकान्त भी लखनऊ आ गया। तब से अपराधों के मामले में वह उमाकान्त की ओर से भी दौड़-धूप करने लगा। पुलिस से अब भी उसका साथ था, पर यह रिश्ता 'प्रेमपूर्ण तटस्थता' का था।

बादशाह अपने पैसे का अपने साथियों पर खुलकर इस्तेमाल करता था। उसके प्रभाव में बहुत-से नौजवान लड़के थे और वह शहर के सभी हिस्सों में फैले हुए थे। ये नौजवान बेकार तो थे, पर अपराधी नहीं थे। उन्हें वह जरूरत पड़ने पर अच्छा खाना खिलाता, सिगरेट देता, कभी-कभी रुपये भी देता। उनसे वह इधर-उधर की सूचनाएँ मँगवाता और अपने और दूसरों के काम कराता। प्रायः यह सभी लड़के चुस्त और चौकन्ने थे और अपने को मुसीबत के रास्ते से अलग रखकर काम निकालने की कला में

माहिर थे।

वादशाह का ढावेनुमा होटल शहर की घनी वस्ती में था, जहाँ पैदल मुसाफिरों, साइकिलों और रिक्शों के मारे मोटरवालों को आने की हिम्मत न पड़ती थी। होटल के दरवाजे पर दोनों ओर खाने की सामग्री की फेहरिस्त साइन-वोर्डों पर लिखी हुई थी और उनमें हर चीज की कीमत भी दी गयी थी। उसी से जाहिर था कि यहाँ खाना वहुत सस्ता मिलता है। अन्दर सस्ती वेंचों पर वैठे हुए लोग दोपहर का खाना खा रहे थे और कुछ लोग खाने की कोई वेंच खाली होने का इन्तजार कर रहे थे। खाने का कमरा लगभग चौदह फुट चौड़ा और वहुत काफी लम्वा था। उसके दूसरे सिरे पर खाने की वेंच पर वादशाह कैशमेमो और कुछ कागज फैलाये हुए वैठा था। मैनेजर के वैठने की यही जगह थी।

उमाकान्त को देखते ही वादशाह आदर से उठ खड़ा हुआ। उमाकान्त कुछ वोला नहीं, सिर्फ वहुत हल्के ढंग से मुसकराते हुए वह उसके पास आया और उसी की वगल में वैठ गया। वादशाह भी उमाकान्त से लगभग सटकर वैठ गया। फिर विना किसी प्रस्तावना के वे दोनों आपस में फुसफुसाकर वात करने लगे। दो मिनट वाद ही उसने एक वैरा से कहा, "जाओ, झपटकर वनर्जी को वुला लाओ।"

कुछ मिनटों के वाद एक नौजवान उनके सामने आकर खड़ा हो गया। यह वनर्जी था। वादशाह ने उसे सामने फैले हुए कागजों के पास वैठने का इशारा किया, जिसका मतलव था कि इस वक्त काउण्टर का काम वह सम्हाले। उसके वाद वह उस काउण्टर के पास से थोड़ा खिसककर उमाकान्त की ओर झुका और उसकी वातें सुनने में दत्तचित्त हो गया।

खुद वादशाह का व्यक्तित्व इस ढावे की तरह मटमैला और सस्ता नहीं था। वह निहायत साफ-सुथरा और चुस्त इन्सान था। उसकी उम्र पचपन साल के करीव होगी। रंग गोरा, कद नाटा, चेहरा वहुत खुश और दूसरे को वहुत जल्दी आत्मीयता के साथ अपनी ओर खींचनेवाला। इस समय वह सफेद मक्खनी पतलून और टेरीलीन की सफेद वुश्शर्ट पहने हुए था। मूंछें वड़े करीने और अतिरिक्त नुकीलेपन के साथ तराशी गयी थीं। उसे देखते ही लगता था कि वह मजाक के किसी भी इशारे पर खुले मन से हँस सकता है।

उमाकान्त ने अजीतसिंह की हत्या की सभी वातें वादशाह को धीरे-धीरे वता दीं। थोड़ी ही देर में यह तय हुआ कि वादशाह वड़े-वड़े जाल

लेकर इन्सानियत के तालाब में चार तरह की मछलियों के ऊपर फेंक और देखें कि उनमें सबसे दिलचस्प मछली कौन-सी है ! पर इसके पहले चारों तरह की मछलियों की लिस्ट बनायी गयी। पहली लिस्ट में उनके नाम होते थे जो अजीतसिंह की हत्या की रात उसी के वार्ड में मरीज की हैसियत से पड़े थे। दूसरी लिस्ट अस्पताल के स्टाफ में उन लोगों की होनी थी, जो अजीतसिंह के वार्ड में ड्यूटी पर थे या किसी दूसरी वजह से वार्ड के अन्दर गये थे। तीसरी सूची उन बाहरी लोगों की थी जो अजीतसिंह को ऑपरेशन के बाद वार्ड के अन्दर देखने आये थे। चौथी सूची उनकी थी जो ऑपरेशन के वक्त या उसके बाद, ऑपरेशन थिएटर और वार्ड के बाहर रहकर अजीतसिंह के बारे में पूछताछ करते रहे थे। उनमें भी उन पर विशेष ध्यान देना था जो ऑपरेशन के बाद वहाँ मौजूद थे।

उमाकान्त ने कहा, "चौथी लिस्ट की मछलियों को भी अच्छी इज्जत मिलनी चाहिए। मान लो, अजीतसिंह का कोई दुश्मन है जो उसे दुनिया से हटाना चाहता है। उस पर गोली चलाने के बाद वह बहुत खुश होकर अस्पताल आया होगा। खुद न आया होगा तो उसका कोई आदमी आया होगा, पर उसे यह खबर नहीं मिली होगी कि दुश्मन मारा गया। बल्कि ऑपरेशन के बाद सुना गया होगा कि दुश्मन में जान बाकी है और उसके बच जाने की उम्मीद है। तभी उसे जहर देने की प्लान बनी होगी। सोचा होगा, गोली से नहीं, तो जहर ही से सही। सवाल यह है कि ऑपरेशन के बाद वहाँ कौन-कौन लोग थे जिन्हें यह मालूम हुआ कि अजीतसिंह बच सकता है। उन्हीं में से किसी ने जहर देने में या दिलाने में, या जहर देनेवाले को खबर देने में दिलचस्पी दिखायी होगी ! यह जरूरी नहीं कि वह आदमी वार्ड में गया ही हो, पर पूरे नाटक में उसकी हैसियत हीरो की नहीं तो हीरो से कुछ ही घटकर होगी।

"यह चौथी लिस्ट इसीलिए है। उसमें अजीतसिंह का हत्यारा या उसका कोई न कोई एजेण्ट मौजूद हो सकता है।" उमाकान्त ने अपनी बात पूरी की, "इन सभी सूचियों की छानबीन करने के बाद यह देखना होगा कि इनमें कोई दिलचस्प आदमी हो सकता है या नहीं ?"'

'दिलचस्प आदमी' का मतलब बादशाह अच्छी तरह समझता था। जब किसी ऐसे आदमी का जिक्र आता जिसके बारे में किसी जुर्म को लेकर छानबीन करने की जरूरत होती तो वह दोनों उसे 'दिलचस्प आदमी' कहते थे।

उस वक्त दोपहर का एक बज चुका था। उमाकान्त के जाते ही बादशाह ने बनर्जी को, जो इस समय काउण्टर का काम देख रहा था, बंगाली में कुछ हिदायतें देनी शुरू कीं। ऐसी बंगाली, बंगाल का पैदायशी बंगाली ही बोल सकता था। जाहिर था कि इसी के सहारे बादशाह ने कभी कलकतिया व्यापारी की भूमिका अदा की होगी। उसकी बात का कुल यही मतलब था कि नौजवान को होटल का इन्तजाम आज रात तक देखना पड़ेगा। होटल को बनर्जी के हवाले छोड़कर वह बाहर सड़क पर आ गया। उसके पास एक पचीस साल पुरानी ऑस्टिन थी, जिसके स्टार्ट होते ही एक्ज़ास्ट-पाइप से नीले धुएँ के घने बादल उड़ने लगते थे। उन बादलों को पीछे छोड़ता हुआ बादशाह सीधे अस्पताल पहुँचा।

दिन-भर वह अस्पताल में और स्टाफ-क्वार्टरों के आस-पास चक्कर काटता रहा। उसकी एक पुरानी दोस्त अस्पताल में मैट्रन थी। दोस्त की बुनियाद में भी सिर्फ दोस्ती थी, कोई और बात नहीं। शाम को बादशाह ने उसे एक फैशनेबुल रेस्तराँ में ले जाकर आइसक्रीम खिलायी। फिर दोनों थोड़ी देर तक मौसम की, पुरानी फिल्मों की, मुहब्बत की तकलीफों और उसकी नियामतों की, दंगा-फसाद, खून, जहर और नामाकूल आदमियों की बातें करते रहे। मैट्रन से फुरसत लेकर उसने दो कम्पाउण्डरों को एक 'बार' में ले जाकर रम पिलायी। कुछ 'वार्ड-ब्वायों' पर उनकी याद के कोने उभारने के लिए पाँच रुपये वाले नोटों की नोक इस्तेमाल की। जूनियर डॉक्टरों से हँसी-मजाक किया। दो-चार जाने-पहचाने मरीजों की हालत देखी। फिर इधर-उधर भटकता हुआ, बहुत से लोगों के साथ हँसता और बहुतों को हँसाता, आखिर में एक थका हुआ गम्भीर चेहरा लेकर लगभग ग्यारह बजे रात को वह उमाकान्त के घर पहुँचा।

नंगे बदन, सिर्फ एक पायजामा पहने हुए उमाकान्त ने दरवाजा खोला। बिना किसी प्रस्तावना के, बादशाह ने उससे कहा, "उस्ताद, एक दिलचस्प आदमी का पता लगा है।"

उमाकान्त ने उसे अन्दर आने का इशारा किया, पर वह दरवाजे पर ही खड़ा रहा और बोला, "रम बड़ी खराब चीज है, उस्ताद! अगर अन्दर आकर बैठूंगा तो बैठते ही सो जाऊँगा।"

उमाकान्त ने कहा, "ठीक है, यहीं खड़े-खड़े अपने 'दिलचस्प आदमी' का हालचाल बताओ।"

"आदमी नहीं उस्ताद, वह औरत है। उसका नाम मिस लायल है।"

"मिस्टर लायल ? जिनकी उस रात वार्ड में ड्यूटी थी ?"

"बिल्कुल वही उस्ताद !" बादशाह अपनी कार की ओर बढ़ने लगा। कहता रहा, "दिलचस्पी की बात यह है कि मिस लायल को अफीम खाने का शौक है। अगर उसके घर की तलाशी ली जाये तो मुझे शुबहा है कि वहाँ अफीम बरामद होगी।"

इसके पहले कि उमाकान्त कुछ कह सके, बादशाह ने अपनी पीठ घुमा ली। चलते-चलते बोला, "आज मैं बहुत थक गया हूँ उस्ताद, इसलिए जा रहा हूँ। कल सुबह हाजिर होऊँगा। मिस लायल के बारे में दिलचस्पी की अब जो दूसरी बातें पैदा होंगी, उन पर निगाह रखी जायेगी।"

उमाकान्त ने यह सूचना चुपचाप पचा ली। इसे मालूम था कि मुर्गी सोने का अण्डा दे चुकी है, अब कुछ नहीं देगी। बादशाह को इस समय अगर उलटकर झोले की तरह झटका जाये, तो भी उससे कोई और चीज नहीं निकलेगी, उसके लिए दिन का काम खत्म हो गया है।

तब तक बादशाह अपनी कार के पास पहुँच गया था। दरवाजे से पुकारकर उमाकान्त ने कहा, "शुक्रिया बादशाह !"

पर उसने सुना नहीं, क्योंकि तब तक उसकी ऑस्टिन शोर मचाकर स्टार्ट हो चुकी थी और सड़क पर नीले धुएं में गायब होने लगी थी।

दस

दूसरे दिन उमाकान्त ने मिस लायल से मिलने की कोशिश की। पर उसकी सवेरे से ही अस्पताल में ड्यूटी लगी थी और शाम को छह बजे खत्म होनी थी। वह छह बजे के करीब अस्पताल पहुँचा, पर पता लगा कि वह कुछ पहले ही वहाँ से जा चुकी है। उमाकान्त को मिस लायल के मकान का नम्बर मालूम हो गया था। वह किसी पुराने ताल्लुकेदार की कोठी के किनारे बने हुए कई-एक सस्ते फ्लैटों में से था। मिस लायल का फ्लैट नीचे की ही मंजिल पर था। इसलिए उसे सामने कुछ सहन भी मिल गया था।

बाँस का छोटा फाटक एक किनारे हटाकर, नन्हे-से बाग को पार करके उमाकान्त जैसे ही बरामदे में आया, उसे एक औरत की तेज चीख सुनायी दी। उसने आगे बढ़कर दरवाजा खोला। किवाड़ अन्दर से बन्द नहीं थे, दरवाजा खुल गया। इस मकान पर वह एक बड़े ही नाटकीय मौके पर पहुँचा था। एक साँवली औरत, उटंग और ऊलजलूल ढंग से साड़ी

पहने हुए, कमरे में एक किनारे खड़ी हुई एक फूलदान फेंकने जा रही थी। फूलदान उसके हाथ में था। कमरे के दूसरे किनारे पर एक आदमी आराम-कुर्सी पर बैठा हुआ, अपने को बचाने के लिए नीचे की ओर एक तरफ सिर झुका रहा था।

उमाकान्त ने बड़ी शिष्टता से, जैसे वह किसी ड्राइंग-रूम का, सहज और सभ्य जिन्दगी का दृश्य देख रहा हो, पूछा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?"

औरत फूलदान फेंकते-फेंकते ठिठककर रुक गयी। पर पहले ही की तरह चीखकर बोली, "नहीं, यहां इस वक्त कोई नहीं आ सकता।"

पर तब तक उमाकान्त कमरे के अन्दर आकर खड़ा हो गया था। जेब से सिगरेट निकालते हुए उसने बड़ी बेतकल्लुफी से पूछा, "यह क्या हो रहा है मिस लायल? इससे पब्लिक के आराम में क्या खलल नहीं पड़ेगा ?" दूसरा वाक्य उसने अंग्रेजी में कहा।

सांवली औरत मिस लायल ही थी। वह पहले की तरह ही चीखकर बोली, "आराम जाये जहन्नुम में।"

उमाकान्त ने कहा, "गनीमत है मिस लॉयल, तुमने पब्लिक को जहन्नुम में नहीं भेजा।"

अचानक जैसे पहली बार किसी अजनबी को अपने कमरे में देखा हो, मिस लायल ने अधिकार के लहजे में पूछा, "और तुम कौन हो ? यहां कैसे आये ? फौरन बाहर जाओ।"

उमाकान्त एक कुर्सी पर, पैर पर पैर चढ़ाकर, आराम से बैठ गया। उसके सामने एक अस्तव्यस्त कमरा था, जिसमें एक सस्ते ढंग का बिस्तर लगा था, एक कोने में चाय के कुछ बर्तन मेज पर रखे थे, कुछ सिनेमा की रंग-बिरंगी पत्रिकाएं फर्श पर लोट रही थीं, किसी ऐक्ट्रेस के जिस्म का रंगीन उभार हवा के झोंके में फड़फड़ा रहा था, पत्रिका का पन्ना फटने ही वाला था। तीन-चार कुर्सियां इधर-उधर बेतरतीबी से पड़ी थीं। उसने कहा, "घबराइए नहीं, मैं बता रहा हूं कि मैं कौन हूं। पर बातचीत करने के लिए इतना चीखने की जरूरत नहीं।"

मिस लायल एकदम फौजी ढंग से तनकर खड़ी हो गयी। उसने चिल्लाकर कहा, "मैं क्यों न चीखूं ? यह मेरा घर है। जितना चाहूंगी, चीखूंगी। तुम मुझे रोकनेवाले कौन होते हो ?"

उमाकान्त ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप उसने सिगरेट का एक

कर खींचा।

इस बार वह तेजी से उमाकान्त की ओर बढ़ी और उसी तरह चिल्लाकर बोली, "देखना, मैं अब चीखने जा रही हूँ। हिम्मत हो तो मुझे रोको।"

उमाकान्त ने जैसे यह सुना ही न हो। वह सिगरेट पीता रहा।

अचानक वह पीछे की ओर मुड़ी और चीखने के बजाय एक दरवाजे के अन्दर जाकर गायब हो गयी। उधर शायद बाथ-रूम था। दरवाजे के दूसरी ओर चीजों के उठाने-रखने की खटपट शुरू हो गयी। उमाकान्त ने अब अपने से डेढ़ गज की दूरी पर बैठे हुए आदमी की ओर देखा। अगर मिस लायल की उम्र पैंतीस साल के लगभग थी तो यह आदमी पैंतालीस के करीब होगा। उसने बड़े दयनीय भाव से उमाकान्त की ओर देखा, जैसे वह मिस लायल के व्यवहार की माफी माँग रहा हो। वह बोला, "मेम साहब को बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है।"

उमाकान्त ने इसे अनसुना कर दिया। कड़ाई से पूछा, "तुम कौन हो?"

"मैं!" वह अचकचाकर बोला, "मैं खेती करता हूँ।"

"मुझे यहाँ कोई खेत तो नजर आता नहीं।" उमाकान्त ने उसी तरह कड़ाई से कहा, "या तुम्हारी खेती दरवाजे के उस तरफ होती है?" उसने बाथ-रूम की ओर इशारा किया।

वह आदमी धोती और कुर्ता पहने था, होंठों के कोनों से पान की पीक टपक रही थी। उमाकान्त ने फिर उसी तरह अकड़कर पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस आदमी ने इज्जतदार बनने की कोशिश करते हुए कहा, "मुझसे इस तरह मत बोलिए। मैं कोई ऐरा-गैरा आदमी नहीं हूँ। यहाँ से चालीस मील आगे मेरा फार्म है। मैं वहीं रहता हूँ। ट्रैक्टर से गिर जाने पर मेरा दायाँ पाँव टूट गया था।" उसने हाथ से अपना पैर उठाकर फैलाया। घुटने के नीचे वहाँ अब भी प्लास्टर बँधा था। वह कहता रहा, "अब तो जुड़ गया है, पर आराम के लिए इसे फिर से प्लास्टर में डाल दिया गया है। पन्द्रह दिन मैं यहीं अस्पताल में पड़ा रहा हूँ। कल मुझे यहाँ से छोड़ा गया है। पर अभी कुछ दिन मैं शहर ही में रहूँगा।"

उमाकान्त ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"नाम जानना हो तो पहले अपना नाम बताइए साहब।" उस आदमी ने अब सहज भाव से बात शुरू कर दी।

"मेरा नाम उमाकान्त है।" उमाकान्त ने कहा, "यहाँ अस्पताल में—

घायल आदमी को ज़हर देकर मार डाला गया है। मैं उसी मामले की जाँच कर रहा हूँ।"

प्लास्टरवाले पाँव के वावजूद वह आदमी हड़बड़ाकर कुर्सी से खड़ा हो गया। हाथ जोड़कर वोला, "माफ कीजिएगा। मैंने आपको पहचाना नहीं था। हम आपकी पूरी-पूरी मदद करेंगे।"

उसने अपनी ओर से फिर कहा, "मैं भी तो कल तक उसी वार्ड में था।"

"उसी वार्ड में, जिसमें अजीतसिंह भर्ती हुआ था ?"

"जी हाँ।"

उमाकान्त समझ गया कि उसे इस आदमी ने पुलिस का आदमी समझा है। उसने उसका भ्रम दूर करने की कोशिश नहीं की। उसने फिर पूछा, "अब अपना नाम वताओ।"

"मेरा नाम हरीसिंह है, साहव।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"यहाँ ऐसे ही आया था साहव।"

"ऐसे ही का क्या मतलव ?"

हरीसिंह जवाव देने से हिचका। उमाकान्त ने नर्मी से कहा, "वताओ न ठाकुर साहव, यहाँ क्या कर रहे हो ?"

वह आदमी चुप रहा। कुछ सोचकर वोला, "आपसे क्या छिपाना है सरकार! हम लोग पुराने रईस हैं। जमाना खराव लगा है, इसलिए कुछ कहते-सुनते नहीं वनता। पर कुछ रईस अव भी वाकी हैं। मैं यहाँ अस्पताल में पड़ा था। इन मेम साहव ने वहाँ हमारी बड़ी सेवा की। तभी मेरी इनसे दोस्ती हो गयी। मैं तो यहाँ भी दोस्ती ही में आया था। यह न जाने क्यों नाराज होने लगीं।"···फिर जैसे उसने अपने-आपको समझाते हुए कहा, "अभी फिर दोस्ती हो जायेगी। मैं इनके स्वभाव को समझता हूँ।"

"इसका मतलव है, दोस्ती गहरी हो गयी है।"

हरीसिंह के चेहरे से खुशी टपकने लगी। वह वोला, "मैं जव दोस्ती करता हूँ, तव गहरी ही करता हूँ।"

"क्यों नहीं! क्यों नहीं!" उमाकान्त ने कहा, "यह तो आप लोगों का पुश्तैनी काम है।"

हरीसिंह ने अभिमान के साथ कहा, "नहीं साहव, मैं वह सव नहीं करता। पुश्तैनी काम तो रण्डियाँ रखने का था। मैं यह सव चक्कर नहीं पालता।" फिर कुछ रुककर वोला, "पर दोस्ती की वात और है।"

उमाकान्त ने सिर हिलाया, जैसे उसने कोई बड़ी ऊँची बात सुनी हो। अचानक उसने पूछा, "वार्ड में तुम्हारा पलग अजीतसिंह से कितनी दूर था ?"

"नजदीक ही था, साहब।" बात का रुख बदलने से हरीसिंह कुछ लडखड़ाया, पर अपने को सँभालकर बोला, "जिस कोने में अजीतसिंह था, उसी के सामने एक पलंग हटकर मैं पड़ा था।"

सामने का दरवाजा खुला और मिस लायल कमरे के अन्दर आयी। उसके कपडे अब अस्तव्यस्त नहीं थे। चेहरे पर शान्ति थी और उसका रंग वापस आ गया था। आँखों में एक अजब-सा आकर्षण था। हरीसिंह ने उसे मुग्ध-भाव से देखा और किसी के बोलने के पहले ही कहा, "मेम साहब, ये पुलिस के बड़े भारी अफसर हैं। इनके सामने तुम मुझे मारने जा रही थी, मुझे कुछ हो जाता तो मुसीबत मे पड जाती कि नहीं ?"

और वह अपने ही मजाक पर हँसने लगा।

मिस लायल के स्वभाव का चिड़चिड़ापन खत्म हो गया था। वह बड़ी शिष्टता से बोली, "मुझे पता नहीं था कि आप पुलिस के आदमी हैं। माफी चाहती हूँ।"

उसने हरीसिंह की ओर इशारा करके कहा, "यह मेरा कजिन है।"

यह कहने की कोई जरूरत नहीं थी। फिर भी उमाकान्त ने इस सूचना को खुशी के साथ स्वीकार किया। वह मिस लायल को शुरू से ही देख रहा था। उसके चेहरे और भाव-भंगिमा मे एक अजीब-सी शान्ति और सहजता आ गयी थी। उसने मिस लायल से कहा, "आपसे मैं सिर्फ दो-तीन सवाल पूछने आया था। आप जल्दी से जवाब दे दें तो मैं जाऊँ। फिर आप अपने कजिन पर मनमाने फ्लावर वास तोड़ती रहें, मुझे कोई एतराज न होगा।"

मिस लायल मीठे ढंग से हँसी, पर इस हँसी में शोर न था, एक हल्की-सी लहर-भर थी। उमाकान्त ने कहा, "पहला सवाल अफीम के बारे में है।"

मिस लायल चौंक पडी। वह कहता रहा, "आप चाहें तो मैं बाहर से सिपाहियों को बुला सकता हूँ। पर ज्यादा अच्छा होगा कि आप मुझे ही सारी बात बता दें। मैं जानना चाहता हूँ कि आपके घर मे इस वक्त कितनी अफीम मौजूद है ?"

हरीसिंह घबराकर बोला, "अरे साहब, यहाँ अफीम कहाँ।"

पर मिस लायल ने कोई जवाब नहीं दिया। उमाकान्त ने कहा,

अगर आप मुझे सही बात बता दें तो मैं वादा करता हूँ, अफीम रखने पर कम से कम मैं अपनी तरफ से आपका चालान नहीं करूँगा।"

मिस लायल इस बार कुर्सी पर और आराम से बैठ गयी। उसके चेहरे पर मुसकराहट-सी खेलने लगी। उमाकान्त कहता रहा, "मुझे मालूम है कि आपको अफीम खाने की आदत है और अभी-अभी आप उसके लिए ही अन्दर गयी थीं।"

मिस लायल ने इस बार जबान खोली। बड़ी शिष्टता से कहा, "आपको गलत मालूम हुआ है। मैं अफ़ीम खाती नहीं हूँ। आपको किसने बताया कि मैं अफीम खाती हूँ ?"

उमाकान्त मिस लायल के चेहरे को देखता रहा, फिर उसने बड़ी घरेलू ढंग से पूछा, "खाती नहीं हैं तो फिर किस तरह लेती हैं ?"

मिस लायल बोली, "मैं इस गन्दी, कूड़ अफीम से कोई सरोकार नहीं रखती। अस्पताल में तो कई लोग जानते हैं, आप भी जान लें तो कोई हर्ज नहीं है। मैं हैराइन का इन्जेक्शन लिया करती हूँ। आप चाहें तो अन्दर आकर देख लें। इन्जेक्शन की दो-तीन खुराकों के सिवाय मेरे घर में कहीं भी, किसी तरह की अफीम नहीं मिलेगी।"

उमाकान्त उठकर सीधा खड़ा हो गया। उसने सामने का दरवाजा खोला। अन्दर बाथ-रूम था। वहाँ एक गन्दी-सी मेज पर एक हाइपोडर्मिक सुई और एकाध शीशियाँ रखी थीं। वह अपनी कुर्सी पर वापस आकर बैठ गया।

मिस लायल ने अपनी एक बाँह बड़ी ही आकर्षक अदा से उठायी और बोली, "इसे भी देख लीजिए। इस पर सुइयों के निशान मिल जायेंगे। पर यह न भूलिएगा, आपने वादा किया है, कि आप मेरा चालान नहीं करेंगे।"

उमाकान्त बैठा हुआ कुछ सोचता रहा। मिस लायल ने ही अपनी ओर से बात उठायी, "मैंने आपको आज अस्पताल में देखा था। अगर आप अजीतसिंह के खून की जाँच कर रहे हैं तो मेरे यहाँ आपको कुछ नहीं मिलेगा। उसे अफीम का टिक्चर पिलाया गया था। मैं तो वैसे भी मुसीबत में पड़ गयी हूँ। डिपार्टमेंट मुझे लापरवाही के चार्ज पर मुअत्तल करने जा रहा है। अब रही-सही कमी पूरी करने के लिए आप मुझ पर अजीतसिंह को जहर देने का मुकदमा चला दें। बस, इतना ही रह गया।"

उमाकान्त बड़े गौर से मिस लायल की बातें सुन रहा था। वह मुसकरा रही थी। उसने पूछा, "तो असली खूनी कौन है ?"

"उन्हीं में से कोई एक औरत। एक को तो आपने गिरफ्तार ही कर रखा है। दूसरी वही बुर्कवाली है।"

"बुर्कवाली कौन? क्या जरीना?" उमाकान्त ने पूछा।

"मैं उसका नाम नहीं जानती, पर वह अजीतसिंह को देखने आयी थी। नियम तो यही है कि वार्ड में सुबह और शाम के अलावा कोई मरीज से नहीं मिल सकता। पर खास-खास मामलों में हम कुछ ढील भी कर देते हैं। तभी ये औरतें अजीतसिंह को देखने जा पायी थीं।"

अचानक उसने मुँह बनाकर कहा, "कितना गन्दा आदमी था! औरतें! औरतें! बस उसे औरतें ही घेरे हुई थीं!"

उमाकान्त ने आखिरी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने कुछ याद-सा किया और कहा, "पर जरीना तो अजीतसिंह के पास, सुनते हैं, अकेली रही ही नहीं। वहाँ एक वार्ड-ब्वाय भी मौजूद था।"

मिस लायल ने जोर की जम्हाई ली और कहा, "पर वह बुर्कवाली जब दुबारा वार्ड के अन्दर गयी, तब..."

अचानक हरीसिंह ने उसे टोकते हुए बीच ही में कहा, "क्या बक रही हो मेम साहब? वह दुबारा अन्दर कब गयी?"

मिस लायल ने हरीसिंह की ओर देखकर दायें-बायें दो-चार बार सिर हिलाया और कहा, "आओ ठाकुर साहब, इन्हें अभी से सच बात बता दी जाये। नहीं तो डिपार्टमेण्ट की कारवाई के साथ, यह मुझे खून में भी फँसा देंगे।"

उमाकान्त का चेहरा गम्भीरता से खिंच गया था। उसने पूछा, "यह बुर्कवाली लड़की वार्ड में दुबारा कब गयी थी?"

"वह लगभग साढ़े ग्यारह बजे वार्ड के बाहर आयी थी। उसके करीब दस मिनट बाद ही वह फिर वापस लौटी। मैं वार्ड के बाहर मेज के सहारे कुर्सी पर बैठी थी। मुझे कुछ झपकी-सी आने लगी थी। वह मेरे पास आकर मुझसे फुसफुसाकर कहने लगी—भीतर मैं अपना पर्स भूल आयी हूँ। लेने जा रही हूँ।...मैंने ज्यादा गौर नहीं किया। मैंने कहा—चली जाओ।...उसके बाद मैं ऊँघ गयी। बाद में मुझे पता चला, उस वक्त वहाँ से वार्ड-ब्वाय भी चला गया था।"

कहते-कहते मिस लायल की आँखें झपकने लगीं।

हरीसिंह घबराया हुआ चेहरा लेकर पूरी बात सुनता रहा। मिस लायल की बात खत्म होते-होते उसने जोर-जोर से कहा, "मैंने देखा था।

हरिश्चन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी निगाहें चाय के प्याले पर जमी रहीं। सहसा उमाकान्त ने सामने मैन्टल-पीस पर रखी घड़ी की ओर देखा। छह बज रहे थे। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "यहाँ बहुत सड़ी हुई गर्मी पड़ने लगी है। अगर आप खाली हों तो चलिए, हम लोग नैनीताल हो आयें।"

हरिश्चन्द्र ने चौंककर कहा, "ऐसा कैसे हो सकता है? रूबी को इस हालत में छोड़कर हम लोग वहाँ कैसे जा सकते हैं? कम से कम मैं तो नहीं जा सकता।"

उमाकान्त ने कहा, "अगर आपसे कहा जाये कि मेरे और आपके नैनीताल चलने से रूबी का फायदा होगा तो उस हालत में भी क्या आपका यही जवाब होगा?"

हरिश्चन्द्र की आँखों में एक अजब-सी चमक आ गयी: "उस हालत में तो मैं दुनिया के आखिरी छोर तक चलने के लिए तैयार हूँ।"

उमाकान्त ने घड़ी की ओर दुबारा देखा और कुर्सी पर फैलकर जम्हाई लेते हुए कहा, "तो चलिए। फिलहाल दुनिया के आखिरी छोर तक न सही, हम लोग नैनीताल तक ही हो आयें।"

इसके बाद वह बड़े कामकाजी ढंग से कहने लगा, "हमें सात बजे तक यहाँ से चल देना है। आप अपनी कार लेकर एक घण्टे में यहाँ आ जायें। और देखिए, मेरे साथ चलने की शर्त यह है कि यह बढ़ी हुई दाढ़ी और रूखे बालोंवाला हुलिया बदलकर अपनी पहलीवाली सूरत में आयें। नहीं तो मुझे नैनीताल के लिए कोई दूसरा मोटरवाला साथी खोजना पड़ेगा।"

ठीक सात बजे हरिश्चन्द्र अपनी कार लेकर उसके दरवाजे पर आ गया। उमाकान्त ने अटैची कार की पिछली सीट पर फेंक दी और खुद हरिश्चन्द्र की बगल में बैठ गया। हरिश्चन्द्र ने पूछा, "आपका बिस्तर कहाँ है? उसे ले चलना जरूरी है। रात को काफी सर्दी होगी।"

उमाकान्त ने अन्दर बैठकर कार का दरवाजा बन्द किया और बोला, "बिस्तर की जरूरत नहीं है, क्योंकि रात शायद हम वापस आकर लखनऊ ही में बितायें।"

सड़क अच्छी और साफ-सुथरी थी। मौसम, गर्मी के बावजूद भला था। उनकी कार आसानी से पचपन मील फी घण्टे की रफ्तार से चिकनी सड़क पर खिसक रही थी। एक बजे के लगभग वे नैनीताल पहुँच गये।

कार को नैनीताल झील के किनारे खड़ी करके वे लोग नैनीताल की

प्रमुख सड़क 'माल रोड' पर आ गये। हरिश्चन्द्र अब हल्की-फुल्की बातें कर रहा था और लग रहा था कि पहले की अपेक्षा मन में वह ज्यादा स्वस्थ है। लगभग तीन फर्लांग बाद वे सड़क छोड़कर एक पगडण्डी से पहाड़ी पर चढ़ने लगे। कुछ ऊँचाई पर जाकर उमाकान्त खड़ा हो गया। उसने हरिश्चन्द्र से कहा, "यह तो आप समझ ही गये होंगे कि इस वक्त हम यहाँ सिर्फ आबो-हवा बदलने के लिए नहीं आये हैं। हमें यहाँ कुछ काम भी करना होगा। अब बताइए, क्या आपने जरीना का नाम सुना है?"

हरिश्चन्द्र शायद कुछ इसी तरह की बात सुनने के लिए पहले से ही तैयार था। बोला, "जरीना का नाम अजीतसिंह की हत्या के सिलसिले में ही मेरे सुनने में आया है। वह अजीतसिंह के पड़ोस में रहती है। पुलिस-वालों से मुझे पता चला है कि वह खून की रात बारह बजे के पहले अजीतसिंह को देखने अस्पताल गयी थी।"

करीब तीन सौ फुट की ऊँचाई पर एक मामूली-से मकान की छत दिखायी दे रही है। सामने का हिस्सा पेड़ों के पीछे था। उसकी ओर इशारा करके उमाकान्त ने कहा, "इस वक्त कुमारी जरीना इसी मकान में हैं।" उमाकान्त ने जेब से एक कागज निकालकर उस पर बने हुए एक स्केच को ध्यान से देखा और अपनी बात दुहरायी, "ठीक, वह यहीं रहती है। अजीतसिंह की हत्या के दूसरे दिन ही रात की गाड़ी से यह यहाँ चली आयी है। उसके मामा यहीं के रहनेवाले हैं। हमलोगों को मिस जरीना से बात करनी होगी और चूँकि इस समय आप मेरे साथ हैं, इसलिए कुछ काम आपको भी करना होगा।"

"क्या?"

"कोई खास काम नहीं," उमाकान्त ने कहा, "सिर्फ यही कि आपको हम लोगों से कुछ दूरी पर खड़े रहना होगा। अगर जरूरत पड़ी तो मैं आपको बुला लूँगा।"

"किस तरह की जरूरत पड़ सकती है?"

"मुझे खुद नहीं मालूम। पर किसी अजनबी लड़की से बात करने समय अपने मुल्क में हर बात के लिए तैयार रहना चाहिए। फिर, इस वक्त हमें उसकी मदद की जरूरत है।"

हरिश्चन्द्र ने असमंजस में पड़कर पूछा, "पर मिस जरीना का व्यव-हार तो खुद शुबहे से खाली नहीं है। अजीतसिंह की हत्या होते ही दूसरे

न वह नैनीताल भाग आयी। उसे इस जल्दी में लखनऊ छोड़ने की क्या ज़रूरत थी? मुझे तो आश्चर्य है कि पुलिस ने इसकी ओर ध्यान क्यों नहीं दिया!"

उमाकान्त बोला, "पुलिस ने ध्यान दिया है। यह मालूम हो चुका है कि नैनीताल आने के लिए उसने बहुत पहले से रेल का रिजर्वेशन करा रखा था। इसलिए ऐसा नहीं है कि अजीतसिंह की हत्या के बाद उसने नैनीताल आने का अचानक ही फैसला किया। पर इसके बावजूद दो-चार ऐसी बातें हैं जिनके बारे में जरीना से बात करना जरूरी है।"

मकान के अगले हिस्से में कोई दूसरा परिवार रहता था। जरीना के मामा पिछली ओर रहते थे। वहाँ उन लोगों को मालूम हुआ कि वह झील की ओर गयी है।

वे लोग पहाड़ी से नीचे उतरकर झील के किनारे आये। पर्यटकों की अच्छी-खासी भीड़ थी और उसमें जरीना का पता लगाना असम्भव-सा था। पर उन्हें बताया गया था कि वह नाव पर झील की सैर कर रही होगी। वे झील के उस किनारे पर जहाँ नावें आकर रुकती थीं, एक बेंच के पास बैठ गये और नावों का आना-जाना देखते रहे। एक नाव पर चार-पाँच मुसलमान लड़कियाँ बुर्के में बैठी थीं। उन्होंने नकाब उल[...] रखे थे और उनके गोरे चेहरे धूप में चमक रहे थे। उमाकान्त ने उन[...] और एक बार ध्यान से देखा और फिर उन्हें भुला दिया। जरीना[...] बारे में वह पिछली रात ही बादशाह से काफी बातें जान चुका था।[...] बताया गया था कि वह साँवले रंग की लम्बे चेहरेवाली लड़की है।[...] जानकारी के सहारे वह जरीना के आने का इन्तजार करता रहा।[...] तय कर लिया था कि यदि वह उसे वहाँ नहीं मिली तो अँधेरा हो[...] उन्हें फिर उसके मकान पर जाना होगा।

पर इसकी जरूरत नहीं पड़ी। उसकी निगाह एक छरह[...] की आकर्षक युवती पर पड़ी जो नाव से नीचे उतर रही थी[...] रंग साँवला और चेहरा लम्बा था। बड़ी-बड़ी आँखें बरबस दूस[...] को अपनी ओर खींचती थीं। वह लड़की साड़ी पहने हुए थी[...] हाथ में कपड़े का एक छोटा-सा बण्डल था। उमाकान्त ने दे[...] कपड़ा काले रंग का है और उसे लगा कि वह एक बुर्का है।

लड़की की उम्र बाईस-तेईस साल की होगी। उसके स[...] साल की दो छोटी-छोटी लड़कियाँ थीं। जरीना के मामा[...]

कि वह उनकी बच्चियों को लेकर झील पर गयी है। उमाकान्त ने स
लिया कि यह लड़की जरीना ही है जो नैनीताल के उन्मुक्त वातावरण
बुर्के के बन्धन के बाहर आ गयी है। वह बेंच पर बैठा हुआ जरीना
अपनी ओर आने का इन्तजार करता रहा।

जरीना उसके पास से निकली और वह उसके पीछे-पीछे चलने लगा।
हरिश्चन्द्र भी उसके पीछे चलने लगा। कुछ देर बाद वे सड़क के पास
पहुँच गये। वहाँ पेड़ों के नीचे बेंच पड़ी हुई थी। जरीना के साथ की दोनों
बच्चियाँ उछलकर एक बेंच पर बैठ गयी। जरीना उन्हीं के पास खड़ी
होकर उनसे बात करने लगी।

तभी उमाकान्त ने उसके सामने आकर कहा, 'मिस जरीना ?"

जरीना ने चौंककर उसकी ओर देखा। उमाकान्त ने मुसकराकर उसे
बेंच पर बैठने का इशारा किया। बोला, "मैं आपसे दो मिनट बात करना
चाहूँगा।"

"आप कौन हैं ?" उसने कहा और कुछ पीछे हट आयी।

अपने-आप उसकी निगाहें चारों ओर घूम गयी। सड़क पर बराबर
लोग आ-जा रहे थे। उसके पीछे झील में लोग नावों पर गा रहे थे,
ट्रांजिस्टर से आनेवाले फिल्मी गीत सुन रहे थे, चीख रहे थे। उसे शायद
इत्मीनान हो गया कि उसे किसी भी तरह का खतरा नहीं है। उसने
उमाकान्त को तीखेपन से देखा।

उमाकान्त ने कहा, "मैं अजीतसिंह का दोस्त हूँ और उसके हत्यारे
से बदला लेना चाहता हूँ।"

जरीना ने कुछ दूरी पर खड़े हुए हरिश्चन्द्र की तरफ देखा। उसकी
निगाह थोड़ी देर वहीं अटकी रही। फिर वह बेंच पर बैठ गयी और
उमाकान्त से धीरे-से बोली, "मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ ?"

उमाकान्त ने कहा, "मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने हैं। पहला सवाल
है कि अजीतसिंह की हत्या की रात जब आप उसे वार्ड में देखने गयी
तब उसके पास आपके सिवाय कोई और मौजूद था या नहीं ?"

जरीना की आँखों से चिनगारियाँ-सी निकलने लगीं। उसने कड़ी
आवाज में कहा, "तो इसका मतलब यह है कि आप भी सी० आई० डी०
इंस्पेक्टर हैं। पिछले दो-तीन दिनों से आपके आदमियों ने आकर मुझसे
न जाने कितनी बार यह सवाल पूछा है। आप लोगों को इत्मीनान क्यों
नहीं होता ? अजीतसिंह को जब मैं देखने गयी थी तब एक वार्ड

ज़ूद था। मुश्किल से दस सैकिण्ड के लिए वह वहाँ से दरवाजे की
ड़ा होगा। पर किसी वजह से फिर वापस लौट आया था। मैं
ास एक मिनट के लिए भी अकेली नहीं रही।"
तना कहकर जरीना चुप हो गयी। फिर दाँतों से होंठ काटकर
"अब मैं आपके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दूँगी।" फिर
साथ की बच्चियों से उसने कहा, "चलो।" और वह उठ खड़ी हुई।
उमाकान्त ने कहा, "मिस जरीना, आप गलत समझ रही हैं। मैं सी०
० डी० इंस्पेक्टर नहीं हूँ। वह होता तो यहाँ, रास्ते में, आपके हम-
की तरह बात न करता। तब मैं आपको थाने पर बुला सकता था
र जरूरत पड़ती तो चौबीस घण्टे तक आपको हिरासत में रखकर
तने चाहता उतने सवाल पूछ सकता था। मुझे पता नहीं कि सी० आई०
० के वे कौन-से आदमी हैं, जो आपसे बात करने के लिए आ चुके हैं।
र इतना यकीन मानिए कि मैं उनमें से होता तो न आप मुझे इस तरह
ा जवाब दे सकती थीं और न मैं इस तरह का जवाब सुन सकता
था।"

जरीना ठिठक गयी।

उमाकान्त ने अपनी आवाज में कुछ नाटकीयता भरकर, जो उसकी समझ में नौजवान लड़कियों पर असर डालने के लिए जरूरी थी, कहा, "अजीतसिंह आप लोगों का हितैषी था। आप उसे अपना भाई मानती थीं। मैं भी उसका दोस्त हूँ। मैंने तय किया है कि पुलिस से अलग जाकर हमें अजीतसिंह के हत्यारे का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मैं सिर्फ आपसे मिलने के लिए इतनी दूर आया हूँ। आपको हमारी मदद करनी ही चाहिए।"

जरीना ने एक बार फिर दूर खड़े हुए हरिश्चन्द्र की ओर ध्यान से देखा। पर उसने अपना मुँह झील की तरफ कर लिया था। जरीना ने धीरे-से साँस छोड़ी और कहा, "आप और क्या जानना चाहते हैं?"

उमाकान्त ने उसे बेंच पर बैठने का दुबारा इशारा किया। वह बच्चियों के पास बेंच के दूसरे छोर पर बैठ गयी। बेंच के सिरे पर अपना एक पैर रखकर उमाकान्त, चारों ओर गौर से देखने के बाद बहुत धीरे से बोला, "आप पौने बारह बजे के करीब अजीतसिंह के वार्ड में गयी थीं। तब शायद उसे नींद आ गयी थी। आप वहाँ लगभग तीन मिनट रहीं। यह सही है न?"

"जी हाँ।"

"लगभग तीन मिनट बाद आप वार्ड के बाहर गयीं और दस मिनट बाहर रहकर फिर वार्ड के अन्दर आयीं। यह भी सही है न?"

जरीना ने अपनी भौंहें सिकोड़कर कुछ सोचा। फिर एकदम से घबराकर बोली, "यह आप क्या कह रहे हैं? लगता है, मुझे फँसाने की कोशिश की जा रही है। आपसे किसने कहा कि मैं वार्ड छोड़ने के दस मिनट बाद वापस आयी?"

उमाकान्त ने उसी तरह धीरे-से कहा, "घबराइए नहीं। आपको कोई भी नहीं फँसा रहा है। सिर्फ मेरे सवालों का जवाब 'हाँ' या 'नहीं' में देती जाइए और सिर्फ इतना ध्यान रखिए कि कोई भी जवाब गलत न हो, क्योंकि हो सकता है यही सवाल सी० आई० डी० के आदमी भी आपसे करेंगे और उनके सामने अगर आपने इस तरह की घबराहट दिखायी तो उसका नतीजा बुरा हो सकता है।"

जरीना ने अनावश्यक रूप से जोर देकर कहा, "मैं हलफ लेकर कह सकती हूँ कि वार्ड से बाहर आकर मैं फिर उधर नहीं गयी। बस सीधे अपने घर गयी थी।"

उमाकान्त थोड़ी देर चुप रहा। वह बराबर जरीना की ओर देख रहा था। कुछ देर बाद उसने फिर धीरे से पूछा, "जब आप वार्ड में पहली बार गयी थीं, तब एक सिस्टर वार्ड के बाहर बैठी हुई थी। आपने उसे देखा था?"

"जी हाँ।"

"दुबारा वार्ड में जाते हुए आपने उनसे फुसफुसाकर कहा था कि आप अपना पर्स अजीतसिंह की बेड के पास भूल आयी हैं और उसे लेने जा रही हैं। यह सही है?"

जरीना ने जोर से कुछ कहने के लिए मुँह खोला, पर अपने होंठ बन्द कर लिये। फिर सिर हिलाकर धीरे से कहा, "यह सरासर झूठ है। न मैं अपना पर्स वहाँ छोड़ आयी थी, न मैं दुबारा वार्ड की ओर गयी, न मैंने सिस्टर से ऐसी कोई बात कही। वार्ड से निकलकर मैं सीधे अपने घर गयी थी।"

उमाकान्त चुपचाप सुनता रहा। फिर बोला, "सी० आई० डी० वाले आपसे कब मिले थे?"

"एक आदमी तो परसों मिला था। यानी जिस दिन मैं यहाँ आयी,

उसी दिन। और एक आदमी आज सवेरे आया था।"

"और उसने आपसे वार्ड में पर्स छूटने की बावत भी बात की थी?"

"नहीं।"

"और वार्ड में दुबारा जाने के बारे में?"

"नहीं।"

उमाकान्त फिर थोड़ी देर चुप रहा। आखिर में बोला, "मुझे यकीन है आपने मुझसे जो कहा है, सच ही कहा है। आप एक बार फिर सोच लीजिए। अगर आपने मुझसे झूठ बोला होगा, तो इत्मीनान रखिए, आप कल से ही ऐसी मुसीबत में फँसेंगी कि दुनिया की कोई भी ताकत आपको नहीं बचा पायेगी।"

जरीना ने उसकी ओर सीधे देखते हुए कहा, मुझे "धमकाइए नहीं, इसकी जरूरत नहीं है।" फिर कुछ हिचककर बोली, "आपने मुझे अपना नाम नहीं बताया।"

उसने कहा, "मैं उमाकान्त हूँ और···"

"और" जरीना ने बड़ी सादगी से कहा, "आपके इन दोस्त का नाम, वही जो उधर पेड़ के पास खड़े हैं, हरिश्चन्द्र है। इन्होंने ही शायद अजीतसिंह पर गोली चलायी थी, और शायद इन्हीं की बीवी मिसेज रूबी ने अजीतसिंह को जहर दिया है, और शायद इन्हीं दोनों की मदद के लिए आप नैनीताल तशरीफ लाये हैं, और अजीतसिंह आपके कभी दोस्त नहीं थे, आपके असली दोस्त मि० हरिश्चन्द्र हैं।"

उमाकान्त का मजाक उड़ाते हुए उसने कहा, "क्या यह सही है?"

उमाकान्त ने पूरी बात चुपचाप सुन ली। फिर वह धीरे से मुसकराया और बोला, "आपकी पूरी बात लगभग सही है। बस, इतना गलत है कि अजीतसिंह को रूबी ने जहर दिया है। जो भी हो, आपने मेरी मदद की है तो उसका अफसोस न कीजिए। यकीन रखिए, इसी के सहारे सचाई का पता लगेगा। बहुत-बहुत शुक्रिया।"

जरीना ने व्यंग से कहा, "सचाई का पता पुलिस को लग चुका है, आप अपना वक्त क्यों बरबाद कर रहे हैं। कुछ दिनों यहाँ नैनीताल में आराम कीजिए, तब तक पुलिस को रही-सही सचाई का भी पता लग जायेगा।"

"जो भी हो, आपकी मदद का शुक्रिया।" कहकर वह बड़े प्रसन्न भाव से सड़क की ओर चल दिया। उसके पीछे हरिश्चन्द्र भी चला, पर

उसके चेहरे पर उलझन झलक रही थी। लगभग पचास गज चलते ही किसी ने उसका कन्धा पीछे से छुआ। उसने देखा, सी० आई० डी० इंस्पेक्टर सिद्दीकी खड़ा हुआ है। वह बड़े उत्साह से बोला, "हलो, सिद्दीकी।"

सिद्दीकी ने सिर हिलाते हुए, जैसे उसे कोई खेल दिखाया गया हो पर जमा न हो, कहा, "इतनी मेहनत की जरूरत नहीं थी। आप मुझसे लखनऊ ही में पूछ लेते तो मालूम हो जाता कि जरीना का पीछा करना बेकार है।"

"गर्मी में नैनीताल कौन नहीं आना चाहता ? आप कहीं इस धोखे में तो नहीं हैं कि सीजन की यह सारी भीड़ जरीना के पीछे ही आयी हुई है ?"

सिद्दीकी ने कहा, "मुझे कोई धोखा नहीं है। पर आपका काम आसान कर दूँ। जरीना पर शुबहा करना बेकार है। जिस रात अजीतसिंह पर आपके इन दोस्त ने गोली चलायी थी, जरीना सिनेमा का पहला शो देखने गयी थी। वह पौने दस बजे अपने घर पहुँची और वहीं जनक्रान्ति प्रेस के सामने उसे मालूम हुआ कि अजीतसिंह पर गोली चलायी गयी है। वह अपनी एक सहेली के साथ सिनेमा देखने गयी थी, जो उसके पड़ोस में ही रहती है। उसे छोड़कर वह अपने पिता के साथ सीधे अस्पताल गयी। तब तक अजीतसिंह को होश नहीं आया था। वह वार्ड के बाहर उसके होश में आने का इन्तजार करती रही। अजीतसिंह को सवा ग्यारह बजे होश आया और उसके लगभग आधा घण्टे बाद स्टाफ की इजाजत लेकर वह उसे देखने गयी। अस्पताल पहुँचने के पहले उसे किसी भी तरह यह खबर नहीं मिल सकती थी कि अजीतसिंह के बच जाने की आशा है। इसलिए उसे मारने के लिए जहर भी देना जरूरी होगा, यह बात वह पहले से किसी भी हालत में नहीं जान सकती थी। और यह भी तय है कि अस्पताल जाकर वह और उसके वालिद फिर कहीं गये नहीं। वे अजीतसिंह को देखकर ही वापस लौटे। इसलिए हमारी राय में यह असम्भव है कि जरीना अजीतसिंह को जहर देने का इन्तजाम करके उससे मिली होगी।"

उमाकान्त ने पूरी बात गौर से सुनी। उसने देखा कि सिद्दीकी को यह नहीं मालूम है कि जरीना दस मिनट बाद दुबारा भी वापस आ सकती थी। वह चुपचाप सिद्दीकी की बात सुनता रहा।

सिद्दीकी ने सिर हिलाते हुए अपनी बात पूरी की, "मिस्टर उमाकान्त,

यह सब मैं आपसे इसीलिए बता रहा हूँ कि आप अब इस मामले में ज्यादा टांग न अड़ायें। रूबी को आप बचा नहीं पायेंगे और वह बच भी गयी तो इसका यही मतलब होगा कि एक खूनी कानून के चंगुल से छूट गया है।"

उमकान्त ने सिगरेट का पैकेट निकालकर सिद्दीकी की ओर बढ़ाया और मुसकराते हुए कहा, "इन सूचनाओं के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। पर मेरे दिमाग में इस वक्त अजीतसिंह का खून नहीं, नैनीताल का मौसम घूम रहा है। इजाजत हो तो मैं उधर फ्लैट की ओर हो लूं ?"

दो कदम आगे बढ़कर वह घूम पड़ा और बोला, "मि० सिद्दीकी, आपके काम में मैं दखल नहीं दे रहा हूँ, पर एक सुझाव देना चाहता हूँ कि जब तक आपकी जांच खत्म न हो जाये, जरीना को हाथ से बाहर मत जाने दीजिएगा। उस पर निगाह रखना जरूरी है।"

"शुक्रिया, पर घबराइए नहीं। खूबसूरत लड़कियों को वैसे भी हाथ से बाहर नहीं जाने दिया जाता। आप जब चाहेंगे, उसे आपकी खिदमत में पेश कर दूंगा।" यह बात सिद्दीकी ने उसका मजाक उड़ाते हुए कही थी, पर उमाकान्त को यकीन हो गया कि उसका सुझाव सिद्दीकी के तेज दिमाग में बैठ गया है।

उसी शाम सात बजे के करीब वे नैनीताल से वापस चल दिये। उमाकान्त को यात्रा में बिस्तर की जरूरत नहीं पड़ी।

बारह

बादशाह ने कहा, "उस्ताद, मैं समझता हूँ अब सब सी० आई० डी० को बता दिया जाये। हमारी दौड़-धूप का अब कोई नतीजा नहीं निकलेगा।"

बादशाह के ढाबे से कुछ आगे एक साफ-सुथरा रेस्तरां था। उसमें कूलर लगे थे और अन्दर काफी ठण्डक थी। उसी के एक कोने में बैठे हुए दोनों ठण्डी कॉफी पी रहे थे। उमाकान्त ने भौंहें उठाकर सवाल-सा किया। पूछा, "सी० आई० डी० को क्या बता दिया जाये ? हमारे पास बताने के लिए है ही क्या ?"

बादशाह ने कहा, "उस्ताद, हमारी छानबीन से कुछ बातें बिल्कुल साफ हो जाती हैं। पुलिस ने रूबी को सन्देह के आधार पर गिरफ्तार किया है। अजीतसिंह जब हरिश्चन्द्र की गोली से बच गया तब बहुत मुमकिन है कि रूबी ने उसे अपने निजी झगड़े को लेकर मारना चाहा हो। अजीतसिंह

रूबी को जितना दुह सकता था उसने उतना दुहा था। मैं अगर रूबी की जगह होता तो ऐसे मौके पर उसे छोड़ता ही नहीं। यानी रूबी के खिलाफ हत्या करने की वजह पूरी तौर से साबित है। पर सवाल यह है कि पुलिस के पास हत्या करने का कोई सबूत भी है या नहीं? सिवाय इसके कि वह अस्पताल में कुछ देर उसके पास अकेले में रही, रूबी के खिलाफ जहर देने का कोई भी सबूत नहीं। इस तरह के सबूत का कोई मतलब नहीं है, उस्ताद! कोई भी अच्छा वकील दो मिनट में ऐसे सबूत के चिथड़े उड़ा देगा। रूबी के खिलाफ दूसरा सबूत यह है कि उसके कमरे से बत्तई रंग की वैसी ही छोटी शीशियां बरामद हुई हैं जैसी कि अजीतसिंह को जहर देते समय इस्तेमाल हुई थीं। यह सबूत भी कोई ऐसा सबूत नहीं है। हर भला आदमी आजकल अपने घर में आठ-दस दवाएँ रखता ही है। और उस्ताद, अगर तुम्हारे ही घर की तलाशी ली जाये तो अजब नहीं कि दो-चार उस तरह की शीशियां वहां भी निकल आयें। कम-से-कम मेरे घर में ऐसी माया दर्जन शीशियां होंगी।

"एक और बचकाना सबूत है गुलाब की कली का। पुलिस को वह अजीतसिंह के घर से मिली है। वे समझते हैं कि रूबी गोली-काण्ड के बाद उसके घर गयी थी और उसने वहां की तलाशी ली थी। पर पुलिस को यह भी मालूम है कि वह उसके पहले भी वहां गयी थी। इसी से इस सबूत की कोई कीमत नहीं रहती। पुलिस ने अभी रूबी का चालान नहीं किया है। इसकी यही वजह है कि वह अभी उसके खिलाफ किसी और वजनदार सबूत की खोज कर रही है।"

उमाकान्त बादशाह की बातें ध्यान से सुन रहा था। बोला, "ठीक।"

बादशाह कहता रहा, "दूसरी ओर हमारे सामने दो और मुल्जिम मौजूद हैं—एक है मिस सायल और दूसरी मिस जरीना।"

उमाकान्त ने मुसकराकर कहा, "और एक तीसरा भी हो सकता है—हरीसिंह।"

बादशाह ने गम्भीरता से कहा, "जी हां जनाब। हरीसिंह भी हो सकता है। पर पहले इन देवियों को देख लिया जाये। रूबी के साथ हत्या करने का कारण मौजूद है। पर इनके साथ हमें किसी ऐसे कारण का पता नहीं। पर रूबी के खिलाफ जहर देने का कोई अच्छा सबूत नहीं है जबकि इन दोनों के खिलाफ इसका बहुत अच्छा सबूत मौजूद है। पहले मिस सायल को लीजिए। वह वार्ड में दस बजे रात से छह बजे सुबह तक ड्यूटी

पर रही। अजीतसिंह के पास अकेले में वह किसी भी वक्त पहुँच सकती थी। उसे अफीम खाने की आदत है और उसके घर पर अफीम जरूर रही होगी। वह भले ही इन्जेक्शन लेकर नशा करती हो, पर अजीतसिंह के आसपास जितने आदमी थे, उनमें अकेली वही एक ऐसी है जिसके पास अफीम किसी न किसी शक्ल में मौजूद थी।"

उमाकान्त ने उसे टोककर कहा, "पर केमिकल एक्जामिनर की रिपोर्ट से पता चलता है कि उसे अफीम टिक्चर दी गयी थी। मिस लायल जैसी अफीम लेती है और जिस तरह से लेती है उसका इस हत्या से शायद ही कोई सम्बन्ध हो।"

बादशाह ने कहा, "यहाँ तो हमें सी० आई० डी० की मदद की जरूरत है। वैसे बहुत देर हो चुकी है और मिस लायल के यहाँ तलाशी लेने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा, पर इसमें हर्ज ही क्या है? पुलिस को उसके घर की बाका-यदा तलाशी लेनी चाहिए। जिसे सुई से अफीम लेने की आदत हो वह जरूरत पड़ने पर मुँह से भी ले सकती है। हो सकता है कि मिस लायल के घर पर जहर पिलाने का कोई सबूत निकल आये। मिस लायल की अजीत-सिंह से शायद कोई दुश्मनी नहीं थी। पर हो सकता है कि मौका देखकर किसी ने उसे अजीतसिंह को जहर देने के लिए इस्तेमाल किया हो। आप ही बता रहे थे कि मिस लायल और हरीसिंह ने पूरा ड्रामा खेलकर यह बताने की कोशिश की कि जरीना अजीतसिंह के पास दूसरी बार भी गयी थी और उस समय वहाँ कोई नहीं था। यह हो सकता है कि दोनों मिलकर पुलिस को जरीना के पीछे लगा देना चाहते हों और इस तरह मिस लायल साफ बच जाना चाहती हो!"

उमाकान्त ने कॉफी का गिलास खत्म करके दूर खिसका दिया और इत्मीनान से कहा, "इसी के साथ हरीसिंह को भी दफन करते चलो।"

बादशाह ने कहा, "हरीसिंह भी खूनी हो सकता है, उस्ताद! वार्ड की लम्बाई में दोनों तरफ, बीच में रास्ता छोड़कर, मरीजों की चारपाइयाँ पड़ी थीं। आप बताते हैं कि हरीसिंह की चारपाई अजीतसिंह के सामने एक चारपाई छोड़कर थी। दोनों के बीच मुश्किल से तीन गज का फासला रहा होगा। मिस लायल और हरीसिंह की साँठ-गाँठ है ही। हरीसिंह के बायें पैर में प्लास्टर भले ही बँधा हो पर वह दूसरा प्लास्टर है और उसकी हड्डी काफी पहले जुड़ चुकी है। यह जाहिर है कि अब तक वह उस वार्ड के अन्दर सिर्फ मिस लायल के पास रहने के लालच से पड़ा हुआ था। वह

लँगड़ाता जरूर है, पर आसानी से चल सकता है। जिन वजहों से मिस लायल अजीतसिंह को जहर पिला सकती थी, उन्हीं वजहों से मिस लायल की दोस्ती में हरीसिंह भी वह काम कर सकता था। कम से कम इतना तो साबित है ही कि दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

उमाकान्त ने कहा, "और मिस जरीना ?"

बादशाह बोला, "अगर मिस लायल या हरीसिंह खूनी नहीं हैं तो बहुत मुमकिन है कि जरीना ही ने यह खून किया हो। अगर वे दोनों निर्दोष हैं तो कोई वजह नहीं कि वे झूठ-मूठ ऐसा बयान दें जो जरीना के बिल्कुल खिलाफ पड़ता हो। तब तो हमें यही मानना होगा कि बाड़े से बाहर जाकर दस मिनट बाद जरीना फिर वापस आयी। मिस लायल उस वक्त नशे की झोंक में रही होगी। उसने उससे फुसफुसाकर अन्दर जाने की इजाजत माँगी और फिर अजीतसिंह के पास जाकर उसे जहर पिला दिया। वे दोनों कहते ही हैं कि जब जरीना दुबारा अजीतसिंह के पास गयी तब बाई-ब्वाय वहाँ मौजूद नहीं था। बाई-ब्वाय से आज मेरे चेले ने बात भी की थी। वह कसम खाता है कि उसके सामने कोई भी बुर्केवाली औरत अजीतसिंह के पास दुबारा नहीं गयी, या एक के सिवाय कोई दूसरी औरत बुर्के में उसे देखने के लिए नहीं गयी।"

बादशाह अपनी बात सुनाकर चुप हो गया। उन लोगों की मेज के पास एक कूलर चल रहा था। थोड़ी देर तक वे दोनों उसकी सन्नाहट में खोये-से बैठे रहे। उमाकान्त सिगरेट जलाकर चुपचाप कुछ सोचता रहा। बाद में उसने धीरे से सिर हिलाया और कहा, "नहीं बादशाह, सी० आई० डी० से अभी कुछ कहना बेकार है। उन्हें सभी पर सन्देह है। सन्देह के जवाब में हम उन्हें सन्देह-भर दे सकेंगे, कोई सबूत नहीं। उन्होंने मिस लायल और जरीना से कई बार बात की है। मगर उन्हें उनके बारे में ये बातें नहीं मालूम हो पायी, जो हमें मालूम हैं तो उन्हें कुछ और बताने से कोई फायदा नहीं। उन्होंने एक थ्योरी बना ली है और उसी पर चल रहे हैं। जितनी जानकारी हमारे पास है उसके सहारे उन्हें अपनी थ्योरी से हटाना मुश्किल होगा।

"रही मिस लायल के घर की तलाशी की बात। वह बेकार है। कोई भी खूनी खून का सामान अपने छोटे-से मकान में छिपाकर नहीं रखेगा, खास तौर से ऐसा सामान जो एक छोटी-सी पुड़िया या शीशी में रह सकता हो और उसे बाहर हटा देने का उसको पूरा मौका मिल गया हो। फिर

पर रही। अजीतसिंह के पास अकेले में वह किसी भी वक्त पहुँच सकती थी। उसे अफीम खाने की आदत है और उसके घर पर अफीम जरूर रही होगी। वह भले ही इन्जेक्शन लेकर नशा करती हो, पर अजीतसिंह के आसपास जितने आदमी थे, उनमें अकेली वही एक ऐसी है जिसके पास अफीम किसी न किसी शक्ल में मौजूद थी।"

उमाकान्त ने उसे टोककर कहा, "पर केमिकल एक्जामिनर की रिपोर्ट से पता चलता है कि उसे अफीम टिक्चर दी गयी थी। मिस लायल जैसी अफीम लेती है और जिस तरह से लेती है उसका इस हत्या से शायद ही कोई सम्बन्ध हो।"

बादशाह ने कहा, "यहाँ तो हमें सी० आई० डी० की मदद की जरूरत है। वैसे बहुत देर हो चुकी है और मिस लायल के यहाँ तलाशी लेने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा, पर इसमें हर्ज ही क्या है ? पुलिस को उसके घर की बाकायदा तलाशी लेनी चाहिए। जिसे सुई से अफीम लेने की आदत हो वह जरूरत पड़ने पर मुँह से भी ले सकती है। हो सकता है कि मिस लायल के घर पर जहर पिलाने का कोई सबूत निकल आये। मिस लायल की अजीतसिंह से शायद कोई दुश्मनी नहीं थी। पर हो सकता है कि मौका देखकर किसी ने उसे अजीतसिंह को जहर देने के लिए इस्तेमाल किया हो। आप ही बता रहे थे कि मिस लायल और हरीसिंह ने पूरा ड्रामा खेलकर यह बताने की कोशिश की कि जरीना अजीतसिंह के पास दूसरी बार भी गयी थी और उस समय वहाँ कोई नहीं था। यह हो सकता है कि दोनों मिलकर पुलिस को जरीना के पीछे लगा देना चाहते हों और इस तरह मिस लायल साफ बच जाना चाहती हो!"

उमाकान्त ने कॉफी का गिलास खत्म करके दूर खिसका दिया और इत्मीनान से कहा, "इसी के साथ हरीसिंह को भी दफन करते चलो।"

बादशाह ने कहा, "हरीसिंह भी खूनी हो सकता है, उस्ताद ! वार्ड की लम्बाई में दोनों तरफ, बीच में रास्ता छोड़कर, मरीजों की चारपाइयाँ पड़ी थीं। आप बताते हैं कि हरीसिंह की चारपाई अजीतसिंह के सामने एक चारपाई छोड़कर थी। दोनों के बीच मुश्किल से तीन गज का फासला रहा होगा। मिस लायल और हरीसिंह की साँठ-गाँठ है ही। हरीसिंह के बायें पैर में प्लास्टर भले ही बँधा हो पर वह दूसरा प्लास्टर है और उसकी हड्डी काफी पहले जुड़ चुकी है। यह जाहिर है कि अब तक वह उस वार्ड के अन्दर सिर्फ मिस लायल के पास रहने के लालच से पड़ा हुआ था। वह

तेजवाला ज़हर है, पर आसानी से चल सकता है। जिन वजहों से मिस्टर नायल मनोहरसिंह को ज़हर दिया जा सकता था, उन्हीं वजहों से मिस्टर नायल की दोस्ती में हरीसिंह भी यह काम कर सकता था। कम से कम इतना तो साबित है ही कि दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

रमाकान्त ने कहा, "और मिस जमीला?"

पर रही। अजीतसिंह के पास अकेले में वह किसी भी वक्त पहुँच सकती थी। उसे अफीम खाने की आदत है और उसके घर पर अफीम जरूर रही होगी। वह भले ही इन्जेक्शन लेकर नशा करती हो, पर अजीतसिंह के आसपास जितने आदमी थे, उनमें अकेली वही एक ऐसी है जिसके पास अफीम किसी न किसी शक्ल में मौजूद थी।"

उमाकान्त ने उसे टोककर कहा, "पर केमिकल एक्जामिनर की रिपोर्ट से पता चलता है कि उसे अफीम टिक्चर दी गयी थी। मिस लायल जैसी अफीम लेती है और जिस तरह से लेती है उसका इस हत्या से शायद ही कोई सम्बन्ध हो।"

बादशाह ने कहा, "यहाँ तो हमें सी० आई० डी० की मदद की जरूरत है। वैसे बहुत देर हो चुकी है और मिस लायल के यहाँ तलाशी लेने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा, पर इसमें हर्ज ही क्या है? पुलिस को उसके घर की बाकायदा तलाशी लेनी चाहिए। जिसे सुई से अफीम लेने की आदत हो वह जरूरत पड़ने पर मुँह से भी ले सकती है। हो सकता है कि मिस लायल के घर पर जहर पिलाने का कोई सबूत निकल आये। मिस लायल की अजीतसिंह से शायद कोई दुश्मनी नहीं थी। पर हो सकता है कि मौका देखकर किसी ने उसे अजीतसिंह को जहर देने के लिए इस्तेमाल किया हो। आप ही बता रहे थे कि मिस लायल और हरीसिंह ने पूरा ड्रामा खेलकर यह बताने की कोशिश की कि जरीना अजीतसिंह के पास दूसरी बार भी गयी थी और उस समय वहाँ कोई नहीं था। यह हो सकता है कि दोनों मिलकर पुलिस को जरीना के पीछे लगा देना चाहते हों और इस तरह मिस लायल साफ बच जाना चाहती हो!"

उमाकान्त ने कॉफी का गिलास खत्म करके दूर खिसका दिया और इत्मीनान से कहा, "इसी के साथ हरीसिंह को भी दफन करते चलो।"

बादशाह ने कहा, "हरीसिंह भी खूनी हो सकता है, उस्ताद! वार्ड की लम्बाई में दोनों तरफ, बीच में रास्ता छोड़कर, मरीजों की चारपाइयाँ पड़ी थीं। आप बताते हैं कि हरीसिंह की चारपाई अजीतसिंह के सामने एक चारपाई छोड़कर थी। दोनों के बीच मुश्किल से तीन गज का फासला रहा होगा। मिस लायल और हरीसिंह की साँठ-गाँठ है ही। हरीसिंह के बायें पैर में प्लास्टर भले ही बँधा हो पर वह दूसरा प्लास्टर है और उसकी हड्डी काफी पहले जुड़ चुकी है। यह जाहिर है कि अब तक वह उस वार्ड के अन्दर सिर्फ मिस लायल के पास रहने के लालच से पड़ा हुआ था। वह

लँगड़ाता जरूर है, पर आसानी से चल सकता है। जिन वजहों से मिस लायल अजीतसिंह को जहर पिला सकती थी, उन्ही वजहों से मिस लायल की दोस्ती में हरीसिंह भी वह काम कर सकता था। कम से कम इतना तो साबित है ही कि दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।"

उमाकान्त ने कहा, "और मिस जरीना?"

बादशाह बोला, "अगर मिस लायल या हरीसिंह खूनी नही हैं तो बहुत मुमकिन है कि जरीना ही ने यह खून किया हो। अगर वे दोनों निर्दोष हैं तो कोई वजह नही कि वे झूठ-मूठ ऐसा बयान दें जो जरीना के बिल्कुल खिलाफ पड़ता हो। तब तो हमें यही मानना होगा कि वार्ड से बाहर जाकर दस मिनट बाद जरीना फिर वापस आयी। मिस लायल उस वक्त नशे की झोंक मे रही होगी। उससे उसने फुसफुसाकर अन्दर जाने की इजाजत मांगी और फिर अजीतसिंह के पास जाकर उसे जहर पिला दिया। वे दोनों कहते ही हैं कि जब जरीना दुबारा अजीतसिंह के पास गयी तब वार्ड-ब्वाय वहां मौजूद नही था। वार्ड-ब्वाय से आज मेरे चेले ने बात भी की थी। वह कसम खाता है कि उसके सामने कोई भी बुर्केवाली औरत अजीतसिंह के पास दुबारा नही गयी, या एक के सिवाय कोई दूसरी औरत बुर्के मे उसे देखने के लिए नही गयी।"

बादशाह अपनी बात सुनाकर चुप हो गया। उन लोगों की मेज के पास एक कूलर चल रहा था। थोड़ी देर तक वे दोनों उसकी भन्नाहट मे खोये-से बैठे रहे। उमाकान्त सिगरेट जलाकर चुपचाप कश खींचता रहा। बाद में उसने धीरे से सिर हिलाया और कहा, "नहीं बादशाह, सी० आई० डी० से अभी कुछ कहना बेकार है। उन्हे रूबी पर सन्देह है। सन्देह के जवाब मे हम उन्हे सन्देह-भर दे सकेंगे, कोई सबूत नही। उन्होंने मिस लायल और जरीना से कई बार बात की है। अगर उन्हें उनके बारे मे ये बातें नही मालूम हो पायीं, जो हमें मालूम हैं तो उन्हें कुछ और बताने से कोई फायदा नही। उन्होंने एक थ्योरी बना ली है और उसी पर चल रहे हैं। जितनी जानकारी हमारे पास है उसके सहारे उन्हे अपनी थ्योरी से हटाना मुश्किल होगा।

"रही मिस लायल के घर की तलाशी की बात। वह बेकार है। कोई भी खूनी खून का सामान अपने छोटे-से मकान में छिपाकर नही रखेगा, खास तौर से ऐसा सामान जो एक छोटी-सी पुड़िया या शीशी मे रह सकता हो और उसे बाहर हटा देने का उसको पूरा मौका मिल गया हो। फिर

मिस लायल ने मुझे अपने मकान की तलाशी लेने की खुली छूट दे दी थी। वह मुझे पुलिस का आदमी समझ रही थी। होशियार से होशियार खूनी भी इतना बड़ा ब्लफ खेलने की हिम्मत नहीं करेगा। रही जरीना की बात। तो उसके खिलाफ भी कोई खास सबूत नहीं है। अगर मिस लायल एवं हरीसिंह का कहना सही है तो उससे यही साबित होता है कि जरीना के जाने के दस मिनट बाद एक औरत बुर्के में आयी और अजीतसिंह को देखने गयी। उन दोनों में से कोई भी यह नहीं कह सकता कि यह औरत जरीना ही थी। वह जरीना भी हो सकती है और कोई दूसरी औरत भी।"

थोड़ी देर वे दोनों चुपचाप बैठे रहे। अचानक उमाकान्त ने कहा, "बादशाह, अपनी नोटबुक इधर तो बढ़ाना। उन नामों को मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ।"

बादशाह ने एक मोटी-सी नोटबुक उमाकान्त को दी। मेज पर रोशनी अच्छी नहीं थी, पर उमाकान्त ने उसे वहीं उलटना-पुलटना शुरू किया। उसने खून की रात अजीतसिंह के आसपास रहनेवालों की जो सूचियाँ बनवायी थीं वे इस नोटबुक में दर्ज थीं। पहली सूची में उन मरीजों के नाम थे जो सर्जिकल वार्ड में उस रात मौजूद थे। ऐसे मरीज संख्या में ग्यारह थे। अजीतसिंह तो मर ही चुका था। उसके अलावा तब से अब तक केवल दो आदमी वार्ड से हटे थे। बाकी नौ मरीज अब भी वा में थे। बादशाह का एक साथी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में दिन पहले इन सबसे मिल आया था। उनमें कोई भी ऐसी हालत नहीं था जो अपनी चारपाई से उठ सकता हो। वार्ड से हटे हुए मरी में हरीसिंह को छोड़कर दूसरे मरीज की भी छानबीन की जा चुकी थ उसमें कोई दिलचस्पीवाली बात नहीं थी।

दूसरी सूची अस्पताल के स्टाफ की थी। इस मामले को हा लेने के दिन ही बाहशाह ने उन सबकी छानबीन कर ली थी। उनमें लायल को छोड़कर कोई भी दिलचस्प आदमी नहीं था।

तीसरी सूची में, यानी उन लोगों में, जिन्होंने अजीतसिंह को व अन्दर जाकर देखा, केवल तीन आदमी थे—उसका नौकर महीपाल और जरीना। सी० आई० डी० को रूबी पर शुबहा था और व के बारे में उन्होंने छानबीन करके इत्मीनान कर लिया था कि वे हैं। महीपाल तो अपने मालिक के घायल होने की खबर पाते ही अ गया था और वहाँ वह दूसरे दिन तक बराबर मौजूद रहा था

लिए सम्भव नहीं था कि वह जहर देने की व्यवस्था कर सकता।

चौथी सूची उन लोगों की थी जो ऑपरेशन थिएटर और वार्ड के बाहर रहकर अजीतसिंह के बारे में पूछताछ करते रहे थे। इस सूची में चार-पांच पत्रकार थे, 'जनक्रान्ति' प्रेस का कम्पोजिटर था और एक छोटा-मोटा नेता था जिसे लोग जसवन्त के नाम से जानते थे। उमाकान्त ने उसके बारे में भी काफी छानबीन करा ली थी।

अखबारवाले तो समाचार इकट्ठा करने के उद्देश्य से आये थे; और इसलिए भी कि अजीतसिंह की हैसियत पत्रकार की भी थी। 'जनक्रान्ति' प्रेस का कम्पोजिटर एक वृद्धा और भला आदमी था और अपने मालिक को देखने आया था। जसवन्त उसी क्षेत्र से कारपोरेशन का चुनाव लड़ रहा था जिसमें अजीतसिंह का घर पड़ता था। अजीतसिंह उसका वोटर था और चुनाव में उसकी मदद भी कर रहा था। सभी जानते थे कि दोनों में अच्छी मित्रता थी। यह भी सभी जानते थे कि जसवन्त अपने मुहल्ले का एक बदनाम आदमी है। वह कई बार कारपोरेशन का चुनाव लड़ चुका था और अपनी जनप्रियता के कारण नहीं, बल्कि डराने-धमकाने की शक्ति और अन्धाधुन्ध रुपये के जोर से उसकी जीत होती रही थी। इस बार भी वह इन्हीं ताकतों के भरोसे चुनाव के मैदान में आया था।

नोटबुक के पन्ने लौटते-लौटते उमाकान्त ने कहा, "जसवन्त के बारे में तुमने लिखा है कि वह आठ बजे के करीब अस्पताल पहुँचा। उस वक्त अजीतसिंह का ऑपरेशन हो रहा था। वह आठ से लेकर करीब साढ़े दस बजे तक अस्पताल में ही रहा। लगभग नौ बजे अजीतसिंह को ऑपरेशन के बाद वार्ड में पहुँचाया गया था। तब से जसवन्तसिंह वार्ड के बाहर डॉक्टरों से और स्टाफ के दूसरे लोगों से बातें करता रहा। साढ़े दस बजे जब वह वापस गया तब तक अजीतसिंह को होश नहीं आया था, पर सभी को उम्मीद हो गयी थी कि वह जल्द ही होश में आयेगा। उसके बच जाने की उम्मीद ऑपरेशन के बाद ही हो गयी थी। जसवन्त की चुनाववाली जीप अस्पताल में ही खड़ी थी। उसके साथ चुनाव के दो-तीन कार्यकर्ता भी थे। साढ़े-दस बजे के करीब वह जीप से दो-तीन नेताओं के यहां चुनाव के सिलसिले में गया और फिर अपने घर वापस चला गया।"

बादशाह उसकी बातें चुपचाप सुनता रहा। वह जान-बूझकर कुछ नहीं बोला।

उमाकान्त भी इतना कहकर चुपचाप सिगरेट पीने लगा। उसने धुएं

के छल्ले आसमान की ओर उड़ाये और कूलर के झोंके में धुआँ इधर-उधर बिखर गया। आँखें सिकोड़कर वह कुछ देर धुएँ के मिटते हुए जालों को देखता रहा। फिर बादशाह से बोला, "चलो बादशाह, यहाँ से चला जाये। अभी एक तमाशा देखना बाकी है।"

बिल चुकाकर वे रेस्तराँ से बाहर आये। उमाकान्त के पास अपना स्कूटर था। उसी पर दोनों बैठकर शहर का भीड़वाला रास्ता छोड़ते हुए उस सड़क से निकले, जिस पर मिस लायल का मकान पड़ता था। मकान के अहाते को एक किनारे छोड़ते हुए वे दो-तीन फर्लांग आगे निकल गये। एक पुरानी-सी इमारत के सामने उन्होंने अपना स्कूटर रोका।

इमारत पर धुंधले हरे अक्षरों में लिखा था, 'पैराडाइज होटल एण्ड बार'। उसके नीचे हिन्दी, उर्दू और अँग्रेजी तीनों भाषाओं में लिखा गया था, 'यहाँ रहने और खाने-पीने का बढ़िया इन्तजाम है।' वे दोनों इमारत के बरामदे से चलकर पिछवाड़े की ओर गये। वहाँ बरामदा सँकरा हो गया था और सामने एक गली पड़ती थी। गली से हल्की-सी बदबू आ रही थी और स्पष्ट था कि यह दोनों ओर से मकानों के पिछवाड़ेवाली गली है जिसमें लोग ऊपर से कूड़ा फेंकने के आदी हैं। इस इमारत के पिछले बरामदे से मिले हुए दो-तीन छोटे-छोटे कमरे थे। लोगों के रहने और खाने-पीने के बढ़िया इन्तजाम में इन कमरों का भी उपयोग होता था।

उमाकान्त ने बरामदे में जलते हुए बल्ब की धीमी रोशनी में एक कमरे के ऊपर लिखा हुआ नम्बर देखा और दरवाजे की ओर मुड़ा। बादशाह उसके पीछे था। दरवाजा आधा खुला था। अन्दर प्रवेश करते ही उसकी निगाह हरीसिंह पर पड़ी। वह चारपाई पर नंगे बदन लेटा था। उससे कुछ दूर एक मोढ़े पर एक टेबल-फैन रखा था जिसके चलने से जोर की आवाज हो रही थी। हरीसिंह तकिये के सहारे लेटा हुआ था और उसकी धोती घुटनों के ऊपर तक उठी हुई थी। पहली निगाह में ही उमाकान्त ने देख लिया कि उसके पैर का प्लास्टर कट चुका था।

हरीसिंह के सामने एक बिना पालिश की मेज पर रम की बोतल रखी थी जो लगभग आधी खाली हो चुकी थी। एक गन्दी-सी प्लेट में प्याज के कटे हुए टुकड़े पड़े थे। वहीं एक पानी का लोटा और शीशे का गिलास रखा था। गिलास खाली था।

इन लोगों को देखते ही हरीसिंह ने चारपाई से उठने की कोशिश

की। पर उमाकान्त ने कहा, "आप आराम से लेटे रहिए। तकलीफ की कोई जरूरत नहीं।" और वह मेज के पास ही पड़ी हुई एक ऊँची कुर्सी पर बैठ गया। हरीसिंह ने भी दुबारा उठने की कोशिश नहीं की। विनम्रता से हँसकर बोला, "जी हाँ, जी हाँ, यह तो घर का मामला है। आइए, इंस्पेक्टर साहब।"

बादशाह अब तक हरीसिंह की ही चारपाई पर बैठ गया था। हरीसिंह ने कहा, "यह कौन बाबू साहब हैं?"

उमाकान्त की नाक में रम और प्याज की तेज बू बसती जा रही थी। वह ऐसी जगह बैठा था जहाँ टेबल-फैन की हवा भी नहीं आ रही थी। बैठते ही उसके माथे पर पसीना छलक आया। हरीसिंह की आवाज और बोतल की हालत से उसने अन्दाज लगा लिया कि इस समय वह नशे में है। उसने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में कहा, "यह बाबू साहब मेरे दोस्त हैं। आप भी इनसे दोस्ती कर लीजिए। यह पक्के चार सौ बीस हैं और हमेशा आपके काम आयेंगे।"

हरीसिंह ठठाकर हँसने लगा। हँसते-हँसते बोला, "वाह, इंस्पेक्टर साहब!"

बादशाह ने भी हँसी में उसका साथ दिया। अचानक हरीसिंह की हँसी रुक गयी। वह चारपाई पर सिमटकर दीवार के सहारे बैठ गया और बोला, "उधर अलमारी में गिलास रखे हैं। आप लोग लें, तो मैं भी अपना गिलास भर लूँ।"

बादशाह ने हरीसिंह की चापलूसी करते हुए कहा, "ठाकुर साहब के बड़े ठाठ हैं।" उसने अलमारी से एक पीतल का गिलास निकाला। वास्तव में वहाँ एक वही गिलास था, फिर बोला, "यह हमारे उस्ताद तो पीने वालों में है नहीं। सिर्फ सिगरेट से काम चला लेते हैं। आइए, मैं आपका साथ दूँ।" उसके बाद बादशाह ने अपने और हरीसिंह के गिलासों में रम डालकर तैयार की। पहली चुस्की में ही बादशाह को मालूम हो गया कि लोटे के पानी में बर्फ नहीं थी।

हाथों में गिलास पहुँच जाने के बाद हरीसिंह का नशा कुछ कम हो गया था। उसने उमाकान्त से पूछा, "कहिए इंस्पेक्टर साहब, इधर कैसे भूल पड़े?"

उमाकान्त ने उसे खुश करने के लिए, "रमते जोगी, बहते पानी, और जासूस के आने का कोई ठिकाना है? इस नौकरी के पीछे न जाने कब

हाँ पहुँच जाना पड़ जाये।" फिर उसने बड़े स्नेह से कहा, "इस वक्त
ी सिर्फ इधर से निकल रहा था। सोचा आपसे भी मिलता चलूँ।"

हरीसिंह ने रम का एक लम्बा घूँट गले से नीचे उतारा। खुश होकर बोला, "क्यों नहीं, क्यों नहीं! आप तो घर के आदमी हैं।" अचानक उसने पूछा, "क्या हुआ, उस जहरवाले मामले में मेरी गवाही कब करा रहे हैं?"

"बस कुछ ही दिनों की देर है। जाँच खत्म होनेवाली है।" फिर जैसे उसे कोई भूली हुई बात याद आयी हो, बोला, "आपसे भी एक छोटी-सी बात पूछनी है। बताइए, वह बुर्केवाली लड़की जब दुबारा वार्ड में आयी तो उस वक्त आप जाग रहे थे न?"

हरीसिंह ने आँखें फैलाकर कहा, "बिल्कुल।"

"तो बताइए, अजीतसिंह की बेड के पास जाकर वह फिर कहाँ गयी?"

हरीसिंह ने एक और घूँट गले के नीचे उतारा और बड़े घरेलू ढंग से बोला, "आपसे पूरी बात बता दूँ तो आप मारेंगे तो नहीं?"

उमाकान्त हँसने लगा।

हरीसिंह उसी तरह बोला, "डाँटेंगे तो नहीं?"

बादशाह ने कहा, "आप तो ठाकुर साहब, घर के आदमी हैं। हम लोगों से क्या छिपाना?"

"तो सुनिए!" उसने आवाज धीमी करके, जैसे किसी बड़े भेद की बात बतायी जा रही हो, कहा, "मैं तो, आप जानते ही हैं, जरा रईस तबियत का आदमी हूँ। रोज शाम को थोड़ी-सी पीनेवाली चीज होनी चाहिए। वहाँ अस्पताल में पड़े हुए इसी की तकलीफ थी। पर बाद 'मेम साहब' ने मुश्किल आसान कर दी। उन्हीं से मैं कभी-कभी दारू क पौआ मँगा लिया करता था। उस दिन भी एक पौआ मँगाकर मैं धी धीरे पी गया था और अपने बिस्तर पर आराम कर रहा था। तभी अजीतसिंह को बेहोशी की हालत में ले आये। उसे मेरे सामनेवाले बिस पर एक कोने में लिटा दिया गया और उसके चारों ओर पर्दे खींच दिये ग उसके आसपास डॉक्टर और अस्पतालवाले काफी देर तक मँडराते कुछ देर बाद, क्या बताऊँ, औरतें आने लगीं। अब आप तो जानते इंस्पेक्टर साहब, मैं रईस आदमी! आराम से दारू पिये हुए अपने बि पर पड़ा था। औरतों को देखकर कहाँ माननेवाला! तबियत गयी। पहले तो वही औरत आयी जिसे अब पुलिस ने बन्द कर दिया खूबी। उसके भी हुस्न का कोई जवाब नहीं। उसके जाने के कुछ दे

एक दूसरी औरत बुर्के में आयी। उसकी शक्ल मैं देख नहीं सका। मन मसोसकर रह गया।

"वह चली गयी। और थोड़ी देर बाद फिर लौटी। इस बार जब वह अजीतसिंह के बिस्तर के पास आ रही थी, मेरी निगाह उसके पैरों पर पड़ी। अब क्या बताऊँ इंस्पेक्टर साहब, उन पाँवों की खूबसूरती भी गजब की थी। इतने गोरे और चिकने पाँव बड़ी-बड़ी रानियों-महारानियों के भी न होंगे। मैं देखता ही रह गया। अजीतसिंह के बिस्तर के पास दो-तीन मिनट रुककर वह बाहर आयी और बगल के दरवाजे से लैवेटरी की ओर चली गयी। मैं बड़े चक्कर में पड़ा कि यह औरत रास्ता भूलकर उधर कैसे जा रही है। औरतों को उधर तो जाना नहीं चाहिए! पर वह लेवेटरी के अन्दर चली गयी और उसने धीरे से दरवाजा बन्द कर लिया। लगभग पन्द्रह मिनट तक मैं उसके बाहर निकलने का इन्तजार करता रहा। आपसे क्या छिपाना? उसके गोरे-गोरे पाँव मेरे मन में घर कर गये थे। मैं यही सोच रहा था कि जिसके पाँव इस तरह के हैं, उसकी सूरत कैसी होगी! आखिर में मुझसे न रहा गया। अपनी चारपाई से उठकर लँगड़ाता हुआ मैं भी लेवेटरी की ओर गया। वहाँ जाने में मुझे कोई डर नहीं था, क्योंकि चार-पाँच दिनों से मैं बिस्तर से उठकर नित्य-कर्म के लिए वहीं जाने लगा था। अन्दर पहुँचते ही मैंने ध्यान लगाकर सुना। कहीं कोई आवाज नहीं हो रही थी। मैंने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया और उसे खोजने लगा। मैं जानता था कि वह मर्दों की लेवेटरी में गयी है तो चिल्लायेगी नहीं, और चिल्लायेगी भी तो मैं पहले ही से चिल्लाने लगूँगा कि वह वहाँ कैसे आयी है। पर यह सब बेकार था। मैंने उसे चारों ओर खोजा, पर वहाँ उसका कोई भी निशान बाकी नहीं था।

"बाद में मैंने बाहर बरामदे में खुलनेवाला दरवाजा देखा। वह अन्दर से खुला हुआ था। तब मैं समझ गया कि वह इसी रास्ते से बाहर चली गयी है। इश्क के रास्ते में बड़ी-बड़ी चोटें सही हैं। यह चोट सहना भी मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। दरवाजा खोलकर मैं फिर वार्ड के अन्दर आ गया और अपनी चारपाई पर पड़ रहा।"

कुछ रुककर हरीसिंह ने पूछा, "बताइए इंस्पेक्टर साहब, क्या यह सब भी गवाही में कहना पड़ेगा?"

उमाकान्त ने सिगरेट जला ली थी और कुछ सोचने लगा था। जमीन पर निगाह लगाये हुए उसने पूछा, "उसके पाँव बहुत गोरे थे?"

"जी हाँ, बहुत गोरे थे।"

"तुम्हें अच्छी तरह याद है?"

हरीसिंह ने आशिकों की तरह नकली आह भरकर कहा, "जी हाँ, इंस्पेक्टर साहब, अच्छी तरह याद है और उम्र-भर याद रहेगा।"

उमाकान्त ने बादशाह से कहा, "उठिए श्रीमान चार सौ बीस जी। अब ठाकुर साहब को आराम करने दीजिए।"

वह खुद भी उठ खड़ा हुआ। चलते-चलते बोला, "तुम्हारा खयाल सही है ठाकुर साहब। गवाही में तुम्हें यह भी बताना पड़ेगा।"

तेरह

कानपुर में टेरिलीन, नाइलान, घड़ी, सोने आदि का तस्कर-व्यापार करने-वालों का एक अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह पकड़ा गया था। बम्बई के एक मशहूर साप्ताहिक पत्र ने, जो इस तरह की खबरों को चन्द्रमा तक अन्तरिक्ष-यान ले जाने के मुकाबले ज्यादा महत्त्व देता था, उमाकान्त को तार भेजा। प्रार्थना की थी कि वह इस मामले की 'स्टोरी' जल्दी से जल्दी भेजे। यह साप्ताहिक उमाकान्त को सबसे ज्यादा पैसे देता था। फिर भी उमाकान्त उस स्टोरी के पीछे नहीं भागा। उसके पीछे उसने अपना एक सहायक पत्रकार लगा दिया। खुद एक जहरीले आदमी की तलाश में खोया रहा।

तीन-चार दिनों से यह मसला उसके दिमाग पर बुरी तरह हावी था। पिछली रात वह जब हरीसिंह के होटल से लौटकर बिस्तर पर लेटा तो उसे नींद नहीं आयी। वह बराबर सोचता रहा। रात को पिछले पहर उसे झपकी आ गयी। जब नींद खुली तब सूरज निकल आया था। तैयार होकर उसने अपना स्कूटर निकाला और रूबी के उस रिश्तेदार के घर पहुँचा जहाँ अजीतसिंह की हत्या की रात रूबी रात-भर रही थी। वहाँ उसे मालूम हुआ कि अजीतसिंह पर गोली चलने के बाद जैसे ही पुलिस हरिश्चन्द्र को थाने पर और अजीतसिंह को अस्पताल ले गयी, रूबी ने अपने इस रिश्तेदार को फोन किया था। वह रूबी को डायमण्ड होटल से ले आया था। तब से वह अपनी गिरफ्तारी के वक्त तक, उसके या उसके परिवार के साथ रही। रूबी को वह अपनी कार पर ही अस्पताल लाया था। अस्पताल में रूबी काफी देर उसके साथ रुकी रही, बाद में अजीत-सिंह को देख लेने के बाद उसी के साथ उसके घर वापस गयी थी। उसी

रिश्तेदार के साथ वह हरिश्चन्द्र से मिलने थाने पर भी गयी थी।

···वह गोरे पाँवोंवाली औरत, जिसे बुर्के में देखकर पुराने रईस हरीसिंह का मन मसोसने लगा था, रुबी क्यों नहीं हो सकती—उमाकान्त सोचता रहा।

वहाँ से वह हरिश्चन्द्र के घर पहुँचा। वह दुकान पर जाने की तैयारी में था। उसने बताया कि अब रुबी को जमानत पर छोड़ने की दरख्वास्त हाईकोर्ट में दी जा रही है। उसने यह भी बताया कि सी० आई० डी० ने अपनी जाँच लगभग खत्म कर ली है। उन्हें कई मरीजों की गवाही मिल गयी है, जिन्होंने रुबी को अजीतसिंह के बिस्तर के पास अकेले जाते हुए देखा था। उस वक्त वहाँ कोई वार्ड-ब्वाय भी नहीं था।

और वार्ड-ब्वाय? सी० आई० डी० वार्ड-ब्वाय के खिलाफ कुछ क्यों नहीं सोचती? अचानक उमाकान्त ने हरिश्चन्द्र से कहा, "आपका फोन कहाँ है?"

"उधर—गैलरी में। क्यों?"

उसने 'क्यों' का जवाब नहीं दिया। गैलरी में जाकर बादशाह को फोन मिलाया और पूछा, "बादशाह, तुमने उस वार्ड-ब्वाय का क्या नाम बताया था?"

बादशाह ने जवाब दिया, "रामप्रकाश। सर्जिकल वार्ड में उस रात वह ड्यूटी पर था।"

"उसके बारे में कुछ पता लगाया था?"

"हाँ उस्ताद! वह बिहार का रहनेवाला है। कुछ दिनों बनारस के एक अस्पताल में काम करता रहा था। अभी एक महीना हुआ, इस अस्पताल में बदलकर आया है। उसकी चाल-ढाल पर उसी दिन से हमारे दो चेलों की निगाह लगी है। पर उसके खिलाफ कोई भी बात अब तक सामने नहीं आयी। वह शहर में बहुत कम लोगों को जानता है। ड्यूटी के बाद सीधा अपने घर जाता है। उसके साथ सिर्फ उसकी माँ रहती है। खाना खाकर वह पड़ोस में एक हनुमानजी के मन्दिर जाकर पड़ रहता है। फिर सोने के वक्त घर वापस लौट जाता है। माँ और हनुमानजी को छोड़कर उसका शायद किसी से कोई सरोकार नहीं है।"

"ओह!"

बादशाह उधर से हँसा और बोला, "क्या हुआ उस्ताद? वार्ड-ब्वाय के खिलाफ कुछ मसाला निकला क्या?"

"जो मसाला था उस पर तो तुमने पहले ही पानी फेंक दिया है।" कहकर उमाकान्त टेलीफोन रखने जा रहा था, पर कुछ सोचकर रुक गया। उसने कहा, "बादशाह, पाँच-छह बजे अपने होटल में ही रहना।"

गैलरी में हरिश्चन्द्र की ओर आते-आते उसने कहा, "हम लोग क्या आज रुबी से नहीं मिल सकते ?"

हरिश्चन्द्र सोचता रहा, फिर बोला, "एक डिप्टी जेलर मेरा मुलाकाती है। अगर वह हुआ तो शायद आज ही मुलाकात हो जाये। नहीं तो तीन दिन तक इन्तजार करना पड़ेगा।"

"पर रुबी से मैं अकेले मिलना चाहता हूँ।"

हरिश्चन्द्र ने उदास होकर कहा, "ठीक है। चलिए, हम लोग पहले डिप्टी जेलर ही के पास चलें।"

रुबी से मुलाकात करने में खास दिक्कत नहीं हुई। डिप्टी जेलर ने उसे अपने कमरे में ही बुला दिया और उमाकान्त से कहा, "मैं पाँच मिनट बाद आ रहा हूँ।"

बातचीत के लिए उसे सिर्फ पाँच मिनट मिले थे।

रुबी का चेहरा पहले से और भी ज्यादा पीला था। उसकी आवाज धीमी थी। साड़ी, लगता था कल से नहीं बदली गयी है और सोया भी उसी में गया है। उमाकान्त ने कहा, "अच्छा हुआ, हरिश्चन्द्र मेरे साथ नहीं आये। वे आपको इस हालत में देख लेते तो उन्हें शायद चार दिन तक नींद न आती।"

रुबी ने पहले ही की तरह धीरे-से कहा, "आई एम सॉरी। पर···।" उमाकान्त की निगाह जमीन पर, और वास्तव में रुबी के पैरों पर थी। गोरे और चिकने पैर। हरीसिंह इन पैरों को देखकर क्या सोचेगा ? उमाकान्त ने मन ही मन अपने से सवाल किया। पर उसकी बात का सम्बन्ध पैरों से न था, उसने कहा, "मैं सिर्फ एक सवाल पूछने आया था। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम उस रात अजीतसिंह को अस्पताल में देखने क्यों गयी थीं ?"

वह सोचती रही। फिर धीरे-से बोली, "क्या आप भी सोचने लगे हैं कि मैं उसे जहर देने गयी थी ?"

"मेरे सोचने या न सोचने का कोई मतलब नहीं। असलियत यह है कि सी० आई० डी० वाले यही सोच रहे हैं। तभी यह सवाल पैदा हुआ है। अजीतसिंह तुम्हारा दुश्मन था। तुम्हें उससे कोई हमदर्दी न थी, फिर भी

तुम उसे अस्पताल में देखने गयीं। क्यों ?"

"यह मेरी बेवकूफी थी।"

"पर, क्यों ?"

रूबी ने सिसकना शुरू कर दिया। उमाकान्त उसी तरह कहता रहा, "मेरे लिए यह जानना बहुत जरूरी है। तुम वहाँ गयी क्यों थीं ?"

रूबी ने अपने को संयत किया और धीरे-से बोली, "इसका मेरे पास कोई भी जवाब नहीं है, सिवाय इसके कि मैं नहीं चाहती थी कि यह मेरे पति की गोली से मरे। मैं अपने पति की बचत के लिए चाहती थी कि चाहे जैसे हो, अजीतसिंह को बच जाना चाहिए। इसीलिए मैं बराबर घर पर उसके बचने की प्रार्थना करती रही। अचानक मेरे मन में आया, मैं अगर उसके पास जाकर, उसकी हालत देखकर ईश्वर से उसके लिए माफी माँगूँ और वहाँ उसके लिए प्रार्थना करूँ, तो शायद यह ज्यादा कारगर होगी।" उसने फिर सिसकना शुरू कर दिया। बोली, "उमाकान्त जी, यकीन मानिए, मैं वहाँ उसकी जीवन-रक्षा की प्रार्थना करने गयी थी, उसे जहर देने नहीं।"

उमाकान्त की निगाह उसके पैरों से हटकर सामने एक अलमारी पर टिक गयी थी। रूबी के चुप हो जाने पर भी वह उसी तरह बैठा रहा। थोड़ी देर बाद वह एक साँस खींचकर उठा और धीरे-धीरे रूबी का कन्धा थपथपाकर कमरे के बाहर चला आया।

चौदह

शाम को छह बजे वह बादशाह को साथ लेकर जनक्रान्ति प्रेस गया। वहाँ पड़ोस में पता चला, ऊपर के मकान में अजीतसिंह की जगह उसकी चचेरी बहन रत्ना अपने पति के साथ आकर कुछ दिनों के लिए टिक गयी है। इस समय वहाँ उनका ताला लगा हुआ था। वे दोनों कहीं बाहर गये थे। नीचे काम खत्म करके बुड्ढा कम्पोजीटर प्रेस बन्द करने जा रहा था। वह बाहर से दरवाजा बन्द कर रहा था कि वे दोनों तेजी से उसकी ओर बढ़े और दरवाजे को धक्का देकर अन्दर घुस गये। कम्पोजीटर की कलाई पकड़कर बादशाह ने उसे अपनी ओर खींच लिया और कहा, "अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर लो। आँधी बड़े जोरों पर है।"

प्रेस तक पहुँचते-पहुँचते बड़ी जोरों की आँधी आ गयी थी।

हवा के पहले दो झोंकों से ही कम्पोजीटर के मुँह में गर्द भर गयी थी। तेजी से अन्दर आकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया। प्रेस के बड़े हॉल में अँधेरा छा गया। कम्पोजीटर ने होंठों-ही-होंठों अपने-आपसे कुछ कहा और टटोलकर बिजली का स्विच दबाया। हॉल में एक तेज बल्ब की नंगी रोशनी फैल गयी।

बाहर आँधी के उठने का शोर हो रहा था। बादशाह एक बड़ी-सी मशीन की बगल में खड़ा था। उमाकान्त दरवाजे के पास ही पड़े हुए एक मोढ़े पर बैठ गया। कम्पोजीटर दूसरी ओर एक मेज़ से टिककर खड़ा हो गया। उसने शिष्टता से कहा, "आप लोग बड़े मौके से इधर भाग आये। बाहर बड़ा अन्धड़ चल रहा है।"

बादशाह ने अपनी जगह पर खड़े-खड़े जवाब दिया, "किस्मत की बात है!"

उमाकान्त ने सिगरेट का पैकेट निकाला। कम्पोजीटर की ओर बढ़ाते हुए कहा, "पियेंगे?"

उसने एक सिगरेट ले ली। बोला, "अपनी सिगरेटवाली हैसियत नहीं है। बीड़ी पीता हूँ। पर आप दे रहे हैं तो…"

उमाकान्त उठकर कम्पोजीटर के पास आया। दियासलाई जलाकर उसकी सिगरेट सुलगायी, फिर उसी से अपनी सिगरेट भी जलाकर वह फिर मोढ़े पर वापस आ गया और आपसी बातचीत के लहजे में पूछा, "अब प्रेस कैसा चल रहा ह?"

कम्पोजीटर ने बुड्ढों की तरह रुक-रुककर कहना शुरू किया, "अब बड़ी मुश्किल है, साहब। अखबार तो मालिक के न रहने से बन्द ही हो गया। अब नये मालिक क्या करेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता। दूसरा काम भी कोई ज्यादा नहीं है। आजकल शादी-ब्याह हो रहे हैं। वही दो-चार निमन्त्रण-पत्र छापने का काम आ जाता है…।"

उमाकान्त ने फिर उसी तरह पूछा, "आपके मालिक तो ऊपर ही रहते थे?"

"जी हाँ," उसने शिकायत की आवाज में कहा, "उसमें तो अब नये मालिक आ गये हैं।"

"अजीत सिंह जी का सारा माल-असबाब तो ऊपर ही होगा?"

जैसे इससे बढ़कर बेवकूफी का कोई दूसरा सवाल न हो सकता हो। कम्पोजीटर हँसने लगा। बोला, "और कहाँ होगा? सड़क पर?"

"क्यों ? यहाँ प्रेस में नहीं हो सकता ?"

कम्पोजीटर की हँसी थम गयी। उसने सन्देह के साथ पूछा, "आप ? आप कौन हैं ?"

उमाकान्त बेतकल्लुफी से सिगरेट पीता रहा। बोला, "मेरा नाम उमाकान्त है। मैं भी एक पत्रकार हूँ। अजीतसिंह जी मेरे दोस्त थे।"

बादशाह अपनी जगह से टहलता हुआ कमरे के दूसरी ओर अँधेरे में चला गया था। कम्पोजीटर ने ऊँची आवाज में, जो उसकी उम्र के बावजूद काफी कड़कदार थी, कहा, "ऐ, उधर कहाँ जा रहे हो ? इस तरफ आओ।"

बादशाह ने वहीं से कहा, "घबराने की जरूरत नहीं। मैं कुछ छू नहीं रहा हूँ।"

वह एक ऐसी जगह खड़ा था जहाँ पुरानी डेस्कें कमरे की पूरी चौड़ाई में लगी हुई थीं। उनमें सैकड़ों खाने बने थे और उनके अन्दर विभिन्न अक्षरों के टाइप रखे थे। मशीन के तेल की गन्ध आसपास फैल रही थी। कम्पोजीटर ने दरवाजा खोल दिया। खोलते ही आँधी और धूल का एक बगूला कमरे के अन्दर भर गया। खाँसते-खाँसते बोला, "आप लोगों को ठीक से एक जगह न बैठना हो तो बाहर चले जाइए।"

उमाकान्त ने तेजी से बढ़कर दरवाजा बन्द कर दिया, फिर बड़ी मुलायमियत से बोला, "नाराज न होओ भाई, मैं पूरी बात बताये देता हूँ। अजीतसिंह जी मेरे दोस्त रहे हैं। उन्होंने मुझसे दो लेख लिये थे। उन्हें वे 'जनक्रान्ति' में छापना चाहते थे। पर इसके पहले ही उनका देहान्त हो गया। अब तुम तो सब समझते ही हो। इतने बड़े प्रेस के कम्पोजीटर हो। कम्पोजीटर क्या किसी पत्रकार से कम होता है ? तुम्हें तो मालूम ही है कि पत्रकारों की क्या हालत है। मेरे उन दो लेखों से मुझे कहीं भी सौ-दो सौ रुपये मिल जाते। पर अजीतसिंह जी उन्हें छाप नहीं पाये और मैं उनसे उन्हें वापस भी नहीं ले सका।"

बादशाह टहलता-टहलता उसके पास आ गया था। उमाकान्त ने एक कार्ड निकालकर कम्पोजीटर को दिया और कहा, "लो भाई, इसे पढ़कर देख लो। यह मेरे नाम का कार्ड है। इसमें मेरा पेशा और पता, टेलीफोन नम्बर, सब कुछ लिखा है। अब बोलो, बिगड़ क्यों रहे हो ?"

कम्पोजीटर ने रोशनी के पास ले जाकर, आँखें सिकोड़ते हुए, उमाकान्त का कार्ड पढ़ा। वहीं से बोला, "बिगड़ कौन रहा है ? पर

आपने पहले ही क्यों नहीं बताया ?"

"पहले ही तो बता रहा हूँ।" उसके ठण्डे स्वर का फायदा उठाते हुए उमाकान्त ने कहा, "मेरा तो कुल इतना मतलब है कि अगर अजीतसिंह जी के कोई कागज-पत्तर, उनका कोई भी सामान यहाँ पर हो तो मैं एक निगाह उसे देख लेना चाहता हूँ। शायद मेरे लेख उन्हीं में मिल जाते।"

कम्पोजीटर ने लापरवाही से कहा, "यहाँ पर तो कुछ है नहीं। पर आप जहाँ चाहें, देख लें।"

बादशाह ने उमाकान्त को एक इशारा दिया। उमाकान्त बादशाह को वहीं रुकने का संकेत देकर हॉल के दूसरे छोर पर, जहाँ डेस्कों में अक्षरों के टाइप रखे थे, चला गया। कम्पोजीटर बल्ब के पास खड़ा हुआ उमाकान्त के कार्ड को उलट-पुलटकर देखता रहा।

सहसा उमाकान्त ने वहीं से पुकारकर कहा, "कम्पोजीटर साहब, यहाँ एक काला बक्स रखा है, उठा लाऊँ ?"

कम्पोजीटर ने अनिश्चय से कहा, "बार-बार क्यों पूछते हैं ? देखना हो तो देख लीजिए।"

उमाकान्त एक बक्स उठाकर रोशनी के दायरे में ले आया। फर्श पर रखकर उसने बक्स को ध्यान से देखा। उस पर धूल की काफी मोटी पर्त जम गयी थी। बक्स लगभग डेढ़ फुट लम्बा और दस इंच चौड़ा था। उसमें एक छोटा-सा ताला लगा था। बादशाह आसपास की मशीनों पर निगाह डालता रहा। अचानक उसने आगे बढ़कर एक पेंचकस उठा लिया और पंजों के बल बैठकर ताले में उसकी नोक डालने की कोशिश की।

कम्पोजीटर भी उसके पास आ गया था। फिर पहले जैसी बिगड़ैल आवाज में बोला, "आप लोग ताला तोड़ रहे हैं।"

उमाकान्त ने कहा, "आपके पास चाभी हो तो उसकी जरूरत न होगी।"

वह बोला, 'चाभी यहाँ कहाँ ?"

उमाकान्त ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और कहा, "तब तो यह ताला खराब ही करना पड़ेगा। पर परेशान होने की बात नहीं। ताले की कीमत मैं दे दूंगा। और जो कुछ देखूंगा, आपके सामने ही देखूंगा।"

यह बात खत्म होने के पहले ही बादशाह ने सन्दूक का ताला खोल दिया। ढक्कन ऊपर उठाकर उमाकान्त ने देखा, उसमें कुछ चिट्ठियाँ, कुछ रजिस्टर और कुछ खुले हुए कागज भरे हैं। उसने सिर हिलाकर

एक बड़ा ही हल्का इशारा किया। बादशाह उठकर कमरे के दूसरे छोर में चला गया। उमाकान्त ने सन्दूक के सामान को उलट-पुलटकर ध्यान से देखना शुरू किया। कम्पोजीटर उसी के पास पंजों के बल बैठ गया। थोड़ी देर में बादशाह भी उनके पास वापस लौट आया।

सन्दूक को अच्छी तरह देख चुकने और कागजों को सरसरी तौर से पढ़ लेने पर उमाकान्त ने निराशापूर्वक सिर हिलाया और कहा, "नहीं, इसमें मेरे लेख नहीं हैं।"

फिर एक मोटे रजिस्टर को उठाकर वह उसके पन्ने उलटने लगा और कम्पोजीटर से कहता रहा, "दोनों लेख लगभग दस-दस, ग्यारह-ग्यारह पन्ने के होंगे। फुलस्केप में हैं। कागज के एक तरफ उन्हें टाइप किया गया है। मेरा नाम, यानी उमाकान्त, लेख के आखिरी पन्ने पर टाइप होगा। अगर आपको कहीं मिल जाये तो मुझे जरूर खबर कर दीजिएगा। तकलीफ तो होगी'''।"

अचानक वह रुक गया। जिस रजिस्टर के वह पन्ने उलट रहा था, उसके अन्दर, हर दो तीन पन्ने के बाद कुछ खुली चिट्ठियाँ और फोटो रखे थे। चिट्ठियाँ सिर्फ दो थीं। उन्हें जल्दी से देखकर उमाकान्त ने फोटो देखने शुरू किये। कुल सात तस्वीरें थीं।

उनमें से छह तस्वीरें लड़कियों की थीं। पांच में अलग-अलग पाँच लड़कियों के फोटो थे। उनके जिस्म पर कम से कम कपड़े थे और जाहिर था कि वे फोटो जान-बूझकर गोपनीय ढंग से रखे गये हैं। छठा फोटो भी एक लड़की का था। वह नाच की वेशभूषा में खड़ी थी और राजस्थानी ढंग का लहँगा और ओढ़नी पहने थी। हाथ, पाँव और मत्थे पर पारम्परिक ढंग के गहने थे। देखने में लड़की बहुत ही भोली और सुन्दर थी।

उमाकान्त की नजर थोड़ी देर इस फोटो पर टिकी रही। उसके बाद उसने सातवें फोटो को ध्यान से देखा। इस फोटो में भी वही लड़की थी और वह वैसे ही कपड़े पहने थी। उसके अलावा उस फोटो में तीन आदमी भी थे। दो के हाथ में गिलास थे।

उन तीन आदमियों में एक तो कुरता-धोती में था, उसकी मूँछ छोटी-छोटी थी। आँख पर काला चश्मा था। उसके हाथ में एक गिलास था। बाकी दो में से एक पतलून-कमीज में था, उसके बाल कायदे से सँवारे हुए थे। चेहरे पर बड़े करीने की फ्रेंचकट दाढ़ी थी। उसके हाथ में गिलास नहीं था। तीसरा आदमी मोटा और भद्दे बदन का था। उसकी दाढ़ी-मूँछ

साफ थीं। उसके हाथ में गिलास था। तसवीर में लड़की और तीनों आदमी बड़े खुश नजर आते थे। उमाकान्त ने कम्पोजीटर की ओर से मुँह फिराकर वादशाह से कहा, "वादशाह, इन तसवीरों को देखो, इसमें तो तुम्हारी मालती नजर आती है।" उसने आँख के कोने से वादशाह को एक इशारा भी किया। साथ ही उसने महसूस किया कि उसके दिल की धडकन वढ़ गयी है। वादशाह ने आगे वढ़कर उन तसवीरों को हाथ में ले लिया। उन्हें वह थोड़ी देर गौर से देखता रहा। फिर खिलकर वोला, "अरे वाह, यह मालती वहन की तसवीर यहाँ कैसे आ गयी!"

कम्पोजीटर भी उत्सुकता से आगे चढ़ आया। वोला, "कौन मालती वहन?"

"मेरी ममेरी वहन है।" वादशाह ने कहा, "ताज्जुव है, ये फोटो अजीत भाई के पास कैसे आ गये!"

ऐसा लगा, जैसे मन ही मन वह कोई फैसला कर रहा हो। सहसा उसने कम्पोजीटर से कहा, "देखो भाई, मैं ये दोनों तसवीरें ले जाऊँगा। चाहो तो इनकी कीमत ले लो, और चाहो तो मैं रसीद लिख दूँ।"

कम्पोजीटर ने कहा, "अव तो ये सव चीजें विल्कुल वेकार ही हो गयी हैं। आप ले जाना चाहें तो तसवीरें ले जायें।" फिर कुछ सोचकर, जैसे कोई ऐतराज करना लाजमी हो, वह वोला, "पर आपको रसीद लिखनी होगी। क्या पता, कव जरूरत पड़ जाये!"

उमाकान्त ने इस तरह सिर हिलाया, जैसे वह कम्पोजीटर की दिक्कत अच्छी तरह समझता है।

वाहर आँधी का शोर कम हो गया था। उमाकान्त ने दरवाजे की ओर देखकर कहा, "आप चाहें तो दरवाजा खोल लें। रसीद मैं लिख दूँगा। मेरे साथी गवाही का दस्तखत कर देंगे।"

कम्पोजीटर ने इत्मीनान से कहा, "उसकी जरूरत नहीं है।"

एक कागज लेकर उमाकान्त ने उस पर लिखा कि स्वर्गीय अजीतसिंह का एक काला सन्दूक आज शाम को साढ़े छह वजे मैंने श्री दुलीचन्द उर्फ वादशाह और श्री रामाधार कम्पोजीटर के सामने खोला। सन्दूक में और चीजों के साथ दो तसवीरें भी थीं। उन्हें मैंने अपने कब्जे में ले लिया है। सन्दूक में एक नया ताला डालकर उसकी चाभी श्री रामाधार को दे दी है।

रसीद पर उमाकान्त ने तसवीरों का विवरण भी दे दिया। फोटो नं०

एक, राजस्थानी लहँगे ग्रौर ग्रोढ़नी में एक नर्तकी, साइज ३" × २"। फोटो नं० दो, वही नर्त्तकी ग्रौर तीन दर्शक, साइज ३" × २"।

बादशाह ने पडोस की दुकान से एक नया ताला लेकर उसे सन्दूक में लगा दिया ग्रौर चाभी रामाधार को दे दी। कम्पोजीटर को धन्यवाद देकर, ग्रपने लेखों के बारे में उसे फिर याद दिलाते हुए उमाकान्त बाहर ग्राया। कुछ दूरी पर उसका स्कूटर खड़ा था। उसके पास उमाकान्त ने सिगरेट सुलगायी ग्रौर बादशाह से कहा, "लड़की को पहचान लिया न ?"

"वह तो मैं पहली निगाह में ही पहचान गया था। मलिना ही है न?"

उमाकान्त ने गम्भीरता से सिर हिलाया। बादशाह बोला, "उन दिनो तो ग्रखबारों में तहलका मचा था। करीब-करीब सभी ग्रखबारों में मलिना की फोटो छपी थी। तभी तो मैं एकदम से पहचान गया। वैसे भी, ऐसा चेहरा कभी कोई भूल सकता है !"

उमाकान्त ने स्कूटर स्टार्ट नही किया। चुपचाप सिगरेट पीता रहा। बादशाह ने पूछा, "ग्रौर उस्ताद, इन ग्रादमियों को ग्रापने पहचाना ? ये तीन मुर्गे कौन हैं ?"

"वही तो सोच रहा हूँ।"

"चलिए, घर चलकर एक बार फिर कोशिश की जायेगी। वैसे एक मुर्गे को मैं पहचानता हूँ।"

"किसे ?" उमाकान्त ने उत्सुकता से पूछा।

"बीचवाले को। वह मुटल्ला ग्रादमी यहीं का एक सिन्धी था। जनरल स्टोर्स की उसकी दुकान थी। मशहूर शराबी ग्रौर ऐयाश। पारसाल ही तो उसका हार्ट-फेल हुग्रा है।"

"ग्रौर बाक़ी दो मुर्गे ?"

बादशाह सिर खुजलाने लगा। बोला, "उन्हें मैं नही पहचानता, उस्ताद। बस, इतना जरूर है कि उनमें से एक चेहरा पहचाना-सा लगता है। उसे मैंने कहीं देखा जरूर है।"

"मैंने भी।" उमाकान्त ने सोचते हुए कहा।

जब वे स्कूटर पर चढ़कर सड़क पर भीड़ से बाहर ग्रा गये तो बादशाह ने कहा, "मेरा ख्याल है कि मलिना जब रेल की पटरी पर कटी हुई पायी गयी थी, तब उसके जिस्म पर शायद वही कपड़े थे जो इस तसवीर में हैं। ग्रापका क्या ख्याल है ?"

उमाकान्त ने कोई जवाब नही दिया। कुछ ग्रागे चलकर उसने

स्कूटर एक किनारे रोक दिया और दूसरी सिगरेट सुलगायी। आसमान की ओर धुआँ फेंकते हुए उसने कहा, "अभी दो साल की ही तो बात है। मलिना का मामला जब अखबारों में छपा था, तभी मैंने सोचा था, उसने रेल की पटरी पर लेटकर आत्महत्या नहीं की है। मुझे लगता था, उसे मारकर किसी ने पटरी पर फेंक दिया है और ट्रेन के नीचे वह बाद में आयी है। पर पुलिस ने मामले की काफी दिन जाँच करके उसे आत्महत्या समझकर खत्म कर दिया था।"

बादशाह बोला, "मुझे वह केस पूरा-पूरा याद है। उसे अब दुबारा क्यों न उभारा जाये? यह फोटो तो पूरे मामले को बिल्कुल ही उलझा देता है। वह सिन्धी व्यापारी और दो आदमी मलिना के साथ खड़े हैं। लड़की नाच के कपड़े पहने है। वे लोग हाथ में गिलास लिये हैं...।"

अचानक बादशाह ने पूछा, "यह फोटो खींची कैसे गयी होगी, उस्ताद! और अजीतसिंह के पास कैसे आयी?"

उमाकान्त ने कोई जवाब नहीं दिया।

बादशाह बोला, "पुलिस को तो बताना ही पड़ेगा उस्ताद।"

उमाकान्त ने सिगरेट का अधजला टुकड़ा फेंकते हुए कहा, "वह तो बताना ही पड़ेगा। पर पहले यह अजीतसिंह के खून का मामला तो सुलझ जाये!"

पन्द्रह

शहर के पत्रकारों ने कारपोरेशन-हॉल में अजीतसिंह की मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पास करने के लिए एक सभा आयोजित की थी। पत्रकार की हैसियत से अजीतसिंह के बारे में शायद ही किसी की बहुत ऊँची राय हो। खासकर उसकी मृत्यु के बाद, लोग जानने लगे थे कि वह लोगों की कमजोरियों का व्यापार करके रुपये ऐंठता था। फिर भी, रस्म भी कोई चीज है। एक पत्रकार साथी की हत्या हुई थी और उस पर शोक-प्रस्ताव तो पास होना ही था। कुछ इसलिए भी कि यह हत्या बड़े सनसनीखेज तरीके से हुई थी। अस्पताल में जब वह बेहोशी की हालत में पड़ा था, तब किसी ने उसे जहर दिया था। और बातों के साथ ही इससे यह भी साबित होता था कि अस्पतालों का स्टाफ कितना निकम्मा और गैर-जिम्मेदार है। जाहिर है, घटना के इस पक्ष पर भी सभा में काफी प्रकाश

डाला जाना था।

पत्रकार होने के नाते सभा में उमाकान्त को भी जाना था। सभा शाम को साढ़े पाँच बजे से थी। रास्ते ही में अस्पताल पड़ता था। अभी पाँच बजे थे। इसलिए वहाँ जाने के पहले वह अस्पताल की ओर मुड़ गया।

अस्पताल में उसने मिस लायल को खोज निकाला। वह एक प्राइवेट वार्ड के बरामदे में आराम-कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसका मुँह उसकी धोती पर लटका हुआ था। उमाकान्त ने उससे 'गुड ईवनिंग' कहा।

उसने चौंककर सिर ऊपर उठाया। उमाकान्त से निगाहें मिलते ही उसके चेहरे पर चिड़चिड़ेपन के चिह्न प्रकट होने लगे। बिना आवाज को ऊँची किये, उसने तीखेपन से कहा, "यहाँ क्या करने आये हो? मैं तुमसे बात नहीं कर सकती।"

"क्यों मिस लायल?" उमाकान्त मुसकराया, "क्या मेरी बातें इतनी बुरी होती हैं?"

वह उसी तरह तीखेपन से कहती रही, "तुमने मुझे धोखा दिया था। मैंने तुम्हारे बारे में सब-कुछ जान लिया है। तुम पुलिस के आदमी नहीं हो।"

"मैंने कब कहा कि मैं पुलिस का आदमी हूँ?"

मिस लायल कहती रही, "और उस दिन तुम मेरे घर की तलाशी लेने लगे थे। मैं चाहूँ तो तुम्हें इस धोखेधड़ी के लिए पुलिस में दे सकती हूँ।"

उमाकान्त समझ गया कि मिस लायल को इस वक्त हेराइन के इन्जेक्शन की जरूरत है और अभी उससे आगे बातें करना बेकार है। पर वह इस मौके को खोना भी नहीं चाहता था। उसने कहा, "आपको शायद हमारी पुरानी बातचीत याद नहीं रही। मैंने आपसे कभी नहीं कहा था कि मैं पुलिस का आदमी हूँ। आपने अपनी ओर से ही गलत समझ लिया हो तो मैं क्या कर सकता हूँ।"

"पर तुमने कहा था कि सिपाहियों को बुलाकर तुम्हारे घर की तलाशी करा सकता हूँ।"

"वह तो कहा ही था मिस लायल, और आज भी कह रहा हूँ। तुम ज्यादा बहकोगी तो तुम्हारे घर की तलाशी इस बार पुलिस ही से करानी पड़ेगी।"

अचानक उसने आवाज नीची करके कहा, "मैं जो भी हूँ, यह तो आप

नती ही हैं कि मैं एक निर्दोष की जान बचाने के लिए यह भाग-दौड़ कर
ा हूँ। इसमें आपको मेरी मदद करनी होगी। यदि आप मेरी मदद नहीं
रेंगी तो मैं भी आपकी मदद नहीं करूँगा।"

मिस लायल ने फुफकारकर कहा, "मुझे आपकी मदद की जरूरत
हीं।"

उमाकान्त फिर उसी तरह धीरे-से बोला, "नहीं है। अगर अस्पताल
के सुपरिण्टेण्डेण्ट को बता दिया जाये कि आपने उस दिन नशे की हालत में
ड्यूटी दी थी तो आपको तुरन्त मदद की जरूरत पड़ जायेगी।"

मिस लायल बिना बोले हुए उसे कड़ी निगाहों से देखती रही।

तब उमाकान्त ने कहा, "मैं सिर्फ एक बात जानना चाहता हूँ। उस
रात को जब वह बुर्केवाली औरत वार्ड की ओर दुबारा आयी तब उसने
आपसे क्या कहा था ?"

मिस लायल की आवाज में नाराजगी थी। पर वह बोली, "मैंने आपको
पहले ही बता दिया है। उसने कहा था कि मेरा पर्स अन्दर छूट गया
है और मैं उसे लेने जा रही हूँ।"

"उसने यह बात आपसे कितनी दूरी पर कही थी ?"

"मैं एक छोटी-सी मेज के सामने कुर्सी डाले बैठी थी। वह मेज की बगल
में आकर खड़ी हो गयी थी। मेरा खयाल है, मुझमें और उसमें मुश्किल से
डेढ़ फुट का अन्तर होगा। अपना सिर झुकाकर वह अपना मुंह बिल्कुल मेरे
कान के पास ले आयी थी।"

"उसकी आवाज कैसी थी ? मेरा मतलब है, वह आपसे फुसफुसाकर
बात कर रही थी। उसकी आवाज बहुत मीठी थी, या गहरी, या भर्राई
हुई···? आपको कुछ याद है ?"

मिस लायल कुछ देर सोचती रही। फिर बोली, "उसकी आवाज बहुत
धीमी थी। इसलिए साफ तौर से कुछ कहना बड़ा मुश्किल है। पर जहाँ
तक मेरा खयाल है, उसमें घबराहट थी और वह भर्राई हुई थी।"

उमाकान्त थोड़ी देर चुप रहा। फिर पूछा, "उस औरत की लम्बाई का
कुछ अन्दाजा दे सकती हैं ?"

शायद मिस लायल को अचानक अहसास हुआ कि वह उमाकान्त
नफरत करती है। उसने बिगड़कर कहा, "मैं आपकी किसी भी बात
जवाब नहीं दूंगी। मुझे जो कहना है मैंने पुलिस से कह दिया है।"

"पुलिस से ?" उमाकान्त ने चौंककर दुहराया।

"मेरा मतलब है, सी० आई० डी० से।"

"और हरीसिंह ने भी उन्हें अपना बयान दिया है ?"

"जी, जनाब," मिस लायल ने मुँह बनाकर कहा, "हरीसिंह का भी बयान हो चुका है। हमने यह भी कह दिया है कि एक आदमी पुलिस इंस्पेक्टर बनकर हमसे बात करने आया था। बस, अब आप दफा हो जाइए, नहीं तो हथकड़ी पड़ जायेगी।"

उमाकान्त चुपचाप खड़ा हुआ सोचता रहा—मिस लायल और हरीसिंह की गवाही का इस्तेमाल पुलिस रूबी के खिलाफ जरूर करेगी। रूबी के गोरे और चिकने पाँव उसे फांसी के फन्दे की ओर चलते हुए जान पड़े। उसने जोर की सांस ली और मिस लायल से कहा, "आपका बहुत-बहुत शुक्रिया !"

अस्पताल से बाहर आकर वह मुख्य सड़क पर आ गया। उसका चेहरा शान्त था, पर वह बराबर सोच रहा था। उसके पहुँचते-पहुँचते कार-पोरेशन-हॉल में सभा आरम्भ हो गयी थी। हॉल आधे से ज्यादा खाली था। लगभग अस्सी आदमी मौजूद थे, जिनमें ज्यादातर पत्रकार और राज-नीतिक नेता थे। पहली कतार में अजीतसिंह की चचेरी बहन रत्ना बैठी दिखायी दी। उसे देखते ही रत्ना ने मुँह दूसरी ओर फेर लिया। शायद उसे उमाकान्त के बारे में पहले से मालूम था। उमाकान्त आखिरी कतार में बैठ गया और चुपचाप व्याख्यान सुनने लगा।

कुल पांच भाषण हुए। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दो व्यक्तियों के थे। वह दोनों ही राजनीतिक नेता थे। उनमें पहला नेता किसी वामपन्थ पार्टी का प्रतिनिधि था। अपने व्याख्यान में उसे इस बात का बड़ा अफसोस रहा कि वह अजीतसिंह को राजनीति में नहीं खींच पाया। उसने कहा, "अजीतसिंह के दिल में एक आग थी, क्रान्ति की आग। सर्वहारा वर्ग के हितों की रक्षा के लिए वह अपनी जान की भी बाजी लगा सकता था। मैं सोचता था, ऐसा आदमी राजनीति में आ जाये तो देश का बहुत हित होगा। पर वह मुझसे बराबर यही कहता रहा कि 'नहीं, 'जनक्रान्ति' निकालकर मैं जैसी देश-सेवा कर रहा हूँ, वही बहुत काफी है। पत्रकारिता ही मेरा जीवन है, वही मेरी राजनीति है। सच्चे पत्रकार का किसी राजनीतिक पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। तभी वह स्वतन्त्र रूप से पत्रकारिता कर सकता है।' "

दूसरा सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान शहर के प्रसिद्ध नेता शान्ति-

प्रकाश का था। वह आजकल कारपोरेशन के चुनाव में पूरी तौर से फँसे थे और किसी तरह आधे घण्टे का समय निकालकर आये थे। कारपोरेशन हॉल के बाहर चुनाव-चिह्नों और झण्डियों से सजी हुई उनकी जीप इस वक्त भी खड़ी थी और उनके साथ के कार्यकर्त्ता जीप से नीचे नहीं उतरे थे। वह इसी इन्तजार में थे कि जैसे ही शान्तिप्रकाश जी सभा से बाहर आयें, वे उन्हें लेकर फिर तेजी से किसी चुनाव-मीटिंग में चले जायें। समय की कमी के बावजूद सबसे ज्यादा लम्बा व्याख्यान शान्तिप्रकाश जी ने ही दिया।

उन्होंने इस बात पर खास तौर से जोर दिया कि साप्ताहिक 'जनक्रान्ति' समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार और गन्दगी का निर्भीकता से भण्डाफोड़ करता था और इसी कारण अजीतसिंह के हजारों शत्रु हो गये थे। इसी सिलसिले में उन्होंने जिला पुलिस और सी० आई० डी० की भी निन्दा की। उनकी आवाज मीठी थी और ऊँचाई पर जाकर बहुत पतली होजाती थी। फिर भी उन्होंने आवाज उठाकर कहा, "यह हमारी पुलिस का निकम्मापन है। खूनी को गिरफ्तार किये हुए भी चार-पाँच दिन हो गये हैं। पर अभी तक उन्होंने अजीतसिंह की हत्या का मुकदमा कोर्ट में नहीं भेजा है। पता नहीं, वे अब किस बात का इन्तजार कर रहे हैं। शायद वे जान-बूझकर देरी कर रहे हैं, ताकि देरी से मामला बिगड़ जाये। यही नहीं, उस औरत ने, जो पुलिस की हिरासत में है, सिर्फ अजीतसिंह के शरीर की हत्या की है। पर पुलिस अब उसके चरित्र की हत्या कर रही है। और इसीलिए उन्होंने यह थ्योरी निकाली है कि वह ब्लैकमेलिंग करता था। पर अजीतसिंह के चरित्र पर इस प्रकार के लांछन का मैं विरोध करता हूँ। हम सभी जानते हैं कि वह एक निर्भीक और चरित्रवान आदमी था। अगर मामले की सही ढंग से छानबीन की गयी तो हमें निश्चय ही पता लग जायेगा कि उसकी हत्या क्यों की गयी। उसके चरित्र के खिलाफ कोई बात कहना एक बड़ी शर्मनाक बात है। वह एक स्वतन्त्र और सच्चा पत्रकार था और उसे अपनी निर्भीकता और सचाई की सजा मिल गयी। ताज्जुब है कि हमारे अधिकारी इस हत्या के पीछे छिपे हुए रहस्यों का पता लगाने के बजाय अजीतसिंह को ही 'ब्लैकमेलर' बनाकर पूरे मसले को इतनी आसानी से निपटा देना चाहते हैं।"

इसके बाद वे काफी देर भारतीय पुलिस की खामियों पर बोलते रहे। उन्होंने कहा, "पश्चिम के बड़े-बड़े शहरों में पुलिस म्यूनिसिपल कारपोरेशन

के मातहत होती है। इसीलिए हरएक काम में उन्हें जनता की भावना का ख्याल करना पड़ता है। यहाँ की पुलिस की हालत सभी जानते हैं। इसीलिए हमने तय किया है कि कारपोरेशन के चुनाव के बाद अगर हमारी पार्टी बहुमत में आयी तो हम सरकार को प्रस्ताव भेजेंगे कि यहाँ की पुलिस को कारपोरेशन का मातहत बना दिया जाना चाहिए। तभी हम उन्हें सिखा पायेंगे कि एक पत्रकार की हत्या को इतनी आसानी से नहीं टाला जा सकता।"

फिर वे अजीतसिंह के अखबार की तारीफ करने पर उतर आये। बोले, "भाइयो, 'जनक्रान्ति' में हमेशा दूसरों की निन्दा ही नहीं छपती थी। जब कभी किसी ने समाज-सेवा में कोई प्रशंसनीय काम किया तब अजीतसिंह जी दिल खोलकर ऐसे कार्यों की सराहना करते थे। 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक उनकी सचाई और हृदय की निश्छलता के सबूत हैं।"

शोक-प्रस्ताव और दो मिनट की खामोशी के बाद सभा समाप्त हो गयी।

लोग शायद पहले से ही उकता रहे थे। सभा समाप्त होते ही लगभग सभी तेजी से दरवाजे की ओर बढ़े। पिछली कतार में बैठे होने के कारण उमाकान्त पहले ही बाहर आ गया था। उसके पास दो आदमी खड़े हुए आपस में बात कर रहे थे। एक कह रहा था कि शान्तिप्रकाश ने इतना लम्बा व्याख्यान तो दिया, पर बेटे ने यह नहीं बताया कि 'जनक्रान्ति' का खर्चा कहाँ से निकलता था।

उमाकान्त उन्हीं लोगों की बातचीत में शामिल हो गया। बोला, "कहाँ से निकलता था?"

वे लोग भी पत्रकार थे और उमाकान्त से घनिष्ठ थे। एक ने कहा, "इस शान्तिप्रकाश ने अपनी जेब से चन्दा देकर 'जनक्रान्ति' को साल-भर जिन्दा रखा था।"

"इसमें बुरा ही क्या है?" उमाकान्त ने कहा।

वे हँसने लगे। उनमें से एक बोला, "आप तो इस तरह पूछ रहे हैं जैसे आपको कुछ पता ही नहीं।" फिर रुककर वह खुद ही कहने लगा, "पर आपको पता हो भी कैसे सकता था? तब तो आप कानपुर में रहे होंगे!"

दूसरे पत्रकार ने कहा, "वह जो 'पार्वती महिला आश्रम' है न, शहर के रईसों का चकला, उसके खिलाफ 'जनक्रान्ति' में कई साल पहले न जाने

तनी धमकियाँ छपी थीं। अजीतसिंह हर अंक में बराबर यही लिख
ा था कि अगले अंक में महिलाओं के उद्धार की एक संस्था के बारे में
यंकर, पर सत्य घटनाएँ छपनेवाली हैं। किन्तु वे भयंकर, पर सत्य
टनाएँ किसी अंक में नहीं छपीं। आप जानते हैं कि क्यों? इसलिए
कि उन दिनों 'जनक्रान्ति' गरीबी में घिसट रहा था और तभी उसे जिन्दा
रखकर मजबूत बनाने का ठेका शान्तिप्रकाश ने ले लिया था।"

उमाकान्त ने लापरवाही से कहा, 'ओह!" वह उनके पास रुककर
थोड़ी देर उनकी बातें सुनता रहा, फिर वहाँ से हट गया।

उसे शान्तिप्रकाश का भाषण सुनकर भीतर ही भीतर नफरत-सी हो
रही थी। किसी ब्लैकमेलर की तारीफ में एक सार्वजनिक सभा में इतनी
अच्छी बातें कही जायें, इतना उसे झिंझोड़ देने के लिए काफी था। अब
अजीतसिंह और शान्तिप्रकाश के सम्बन्धों की बात जानकर उसे लगा कि
सचमुच ही इस देश की राजनीति जहन्नुम को जा रही है।

कारपोरेशन-हॉल कुछ ऊँचाई पर बना था। सीढ़ियाँ उतरकर जैसे
ही वह नीचे आया, शान्तिप्रकाश की चुनाववाली जीप आगे बढ़ गयी थी।
उसके पीछे पाँच-छह कारें कतार में खड़ी थीं और ये भी स्टार्ट होने
लगी थीं। सामने जो कार थी उसमें एक आदमी सफेद कुर्ता और पाजामा
पहने आँखों पर काला चश्मा लगाये, ड्राइवर की बगल में बैठा था।
उमाकान्त ने उसे देखा और देखता ही रह गया। कार स्टार्ट होकर
खिसकने लगी। उमाकान्त को लग रहा था कि इसे कहीं देखा है, पर
याद नहीं कर पा रहा था कि कहाँ! कई क्षणों तक वह कोशिश करत
रहा। आखिर में आगे बढ़ने लगा।

उसके पीछे एक दूसरा पत्रकार आ रहा था। उमाकान्त ने मुड़क
उससे पूछा, "यह महाशय, जो काला चश्मा लगाये हुए कार में बैठे
कौन हैं?"

"इसे नहीं जानते? यह जसवन्त है।"

"ओह! जसवन्त!" उमाकान्त को याद आ गया। बोला, "ह
मुझे ख्याल पड़ रहा था, इसे कहीं देखा जरूर है। यह भी तो कारपो
का चुनाव लड़ रहा है न?"

पत्रकार बोला, "लड़ रहा है और जीत भी जायेगा। ऐसे ही
तो आजकल चुनाव जीतते हैं।"

जसवन्त की कार काफी आगे निकल गयी थी। उमाकान्त ने

चलते पूछा, "आखिर इसमें खराबी क्या है ?"

"खराबी ?" पत्रकार ने जोर देकर कहा, "शहर में इससे बड़ा हरामजादा कोई मिलेगा नहीं।"

दोनों हँस पड़े, जैसे यह कोई बहुत बड़ा मजाक हो। पर अपने स्कूटर पर बैठते ही उमाकान्त की हँसी गायब हो गयी। उसके दिमाग में जसवन्त की शक्ल घूम रही थी। उसने अपने पत्रकार-मित्र से कह तो दिया था कि उसने जसवन्त को कहीं देखा जरूर है, पर उसे यकीन था कि उसने आज उसे पहली बार ही देखा है। वह इतनी आसानी से देखे हुए चेहरों को नहीं भूलता था। वह बराबर इसी गुत्थी में पड़ा रहा कि उसने जसवन्त को पहले कहाँ देखा है।

उस पूरी शाम उसके दिमाग में एक मधुमक्खी-सी भिनभिनाती रही। बात बहुत छोटी थी, फिर भी वह उसे भुला नहीं पा रहा था। रात को लगभग नौ बजे वह अजीतसिंह के खूनवाले कागजों को उलट-पलट रहा था। उसका दिमाग थक गया था, फिर भी अब तक जितने बयान और दूसरी चीजें उसके हाथ में आ गयी थीं, उन्हें दुबारा देखकर वह उनमें कोई अर्थ ढूँढने की कोशिश कर रहा था। अचानक अजीतसिंह के प्रेस से लायी हुई तसवीरों को देखते-देखते वह चौंक पड़ा। उसके दिमाग में जैसे कोई क्लिप एक खटके के साथ खुल गया हो। उसकी निगाह उस तसवीर पर रुक गयी थी जिसमें एक लड़की के साथ तीन आदमी खड़े हुए थे। उमाकान्त को बिना किसी सन्देह के मालूम हो गया कि उनमें से एक आदमी जसवन्त है और दूसरा सिन्धी व्यापारी जिसे बादशाह ने पहचान लिया था। दोनों ही के हाथों में गिलास थे, शायद ह्विस्की के गिलास ! तसवीर के जसवन्त में और कारपोरेशन का चुनाव लड़नेवाले जसवन्त में सिर्फ एक फर्क था। तसवीर में उसके होंठ पर काफी बड़ी और नुकीली मूँछें थीं। असली जसवन्त की दाढ़ी-मूँछ सफाचट थी।

उमाकान्त ने एक सन्तोष की साँस ली, और उसकी थकान एकदम से गायब हो गयी। उसने बादशाह को फुर्ती में फोन मिलाया। उसके होटल से खबर मिली कि वह घर जा चुका है। तब उसने उसके घर पर फोन मिलाया। पर फोन वीराने में किसी घायल चिड़िया की तरह चीखता रहा। उस समय किसी ने उसका रिसीवर नहीं उठाया।

सोलह

'जनक्रान्ति' प्रेस में बादशाह ने जिस लड़की का नाम मालती और जिसे अपनी ममेरी बहन बताया था उसका असली नाम मलिना था। मरने के पहले वह उन्नीस साल की थी और एक स्थानीय कालिज में पढ़ती थी। मलिना ने कत्थक नृत्य का अभ्यास किया था और अभी से उसे अच्छे कलाकारों में गिना जाने लगा था। लोगों को उससे बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। लोगों को जितना आनन्द उसका नाच देखने में आता उससे ज्यादा आनन्द उसे खुद नाचने में आता था। नाच के पीछे वह पागल थी और शहर का कोई भी सांस्कृतिक कार्यक्रम उसके नाच के बिना पूरा नहीं होता था।

मलिना बहुत सुन्दर भी थी। उसके घर की हैसियत बहुत मामूली थी। पिता किसी दफ्तर में क्लर्की करते थे। पर मलिना की कला के कारण उसका परिवार अचानक प्रसिद्ध हो गया था। लखनऊ के दर्जनों रईसजादे मलिना को अपने जाल में फँसाने की कोशिश में थे। पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा उसका कोई भी सामाजिक जीवन नहीं था। वह अपने परिवार में रहती और बाहरी आदमियों को उससे जान-पहचान करना बड़ा मुश्किल था।

पर एक दिन अचानक वह गायब हो गयी! लगभग दो साल पहले वह अपने कालिज के ही एक कार्यक्रम में भाग लेने गयी थी। उसके बाद वह घर वापस नहीं लौटी। पुलिस ने उसे खोजने की बहुत कोशिश की, पर कई दिन तक उसका पता नहीं चला। पन्द्रह दिन बाद वह शहर के ही पास रेल की पटरी पर कटी हुई पायी गयी। उसके ऊपर से कोई डाकगाड़ी निकल होगी, क्योंकि उसके जिस्म के कई टुकड़े हो गये थे और वे तितर-बितर प थे। बीच का हिस्सा एक तरह से गायब ही हो गया था। उसका बहुत- भाग पहियों में चिपका हुआ चला गया होगा। इस तरह के शरीर बाकायदा पोस्टमार्टम तक नहीं हो सकता था।

फिर भी जितने संकेत मिल सके उसके सहारे सी० आई० डी मामले की छानबीन की, पर उसका कोई खास नतीजा नहीं निकला। आई० डी० ने आखिर में यही निष्कर्ष निकाला कि यह हत्या का मामल था और मलिना ने आत्महत्या की थी। आत्महत्या की सम्भावना म करने के लिए सी० आई० डी० की जानकारी में और भी कई बातें अ

उन्हें पता लगा कि मलिना अपने कालिज के ही एक विद्यार्थी से प्रेम करती थी। कुछ दिन पहले उसका देहान्त हो गया था। तब से मलिना काफी उदास रहने लगी थी। उस लड़के की मृत्यु को मलिना की आत्महत्या का सबसे बड़ा कारण समझा गया था।

कुछ दिनों तक अखबारों में छुटपुट खबरें छपने के बाद मामला खत्म हो गया था। बाद में स्थानीय अखबारों में मलिना की कला पर एकाध छोटे-छोटे लेख भी उसके चित्रों के साथ निकले। उन लेखों ने पूरी कहानी के उपसंहार का काम किया। तब से अब तक लगभग दो साल बीत चुके थे और लोग मलिना को भूल गये थे। पर अजीतसिंह के सन्दूक में मिली हुई इन दो तसवीरों को देखकर उमाकान्त को लगा कि लोग मलिना को कुछ ज्यादा जल्दी भूल गये हैं। उन तसवीरों की असलियत जानने के लिए उसका मन छटपटाने लगा। यह एक पत्रकार का मन है जो हर नयी चीज के पीछे भागना चाहता है, ऐसा सोचकर उसने अपने को समझाना चाहा। पर उसे लगा, इन तसवीरों में उसकी दिलचस्पी इससे भी ज्यादा गहरी है।

जिस दिन उमाकान्त को ये तसवीरें मिली उसके तीसरे दिन रात को नौ बजे के लगभग वह बादशाह के साथ एक बार में बैठा था।

बार काफी सस्ता और मटमैला था। वह एक चौकोर कमरे में था जिसकी लम्बाई में सटाकर कुछ छोटे-छोटे केबिन निकाल लिये गये थे। केबिनों के बीच में प्लाईवुड की दीवारें थी और उनके सामने पर्दे पड़े थे। बाकी जगह में लोहे की वर्गाकार मेजें और उनके आसपास लोहे के स्टूल पड़े हुए थे। यह इलाका भी इक्कों, ताँगों, रिक्शों, मैली और छोटी दुकानों, सस्ते और पुराने मकानों, गुण्डों, छुरेबाजों, चोरी का माल बेचने वालों, आवारा औरतों और उनके दलालों का था।

उमाकान्त और बादशाह एक केबिन में बैठे हुए थे। इस समय उन्होंने सामने का पर्दा हटा रखा था और उन्हें बाहर से कोई भी देख सकता था। बादशाह ने जम्हाई लेते हुए कहा, "यह जगह तो जहन्नुम जैसी तप रही है। मैंने तो उसे पैराडाइज होटल के 'बार' में बुलाया था, पर उसने कहा कि आजकल चुनाव के दिन हैं। इन दिनों वह अपने इलाके के होटलों में शराब नहीं पी रहा है। उसे डर है कि वहाँ कोई ऊलजलूल हालत में उसका फोटो लेकर अखबारों में न छपा दे। वोटरों पर इसका बड़ा बुरा असर पड़ेगा।"

उमाकान्त ने कहा, "उसका डर बहुत सही है। अपने देश में शराब ऐसी बदनाम चीज है। पक्के से पक्का शराबी भी दूसरों की बदनामी करने के ए उनको शराबी बताता है।"

उसके सामने कॉफी का प्याला था। बादशाह ह्विस्की पी रहा था। माकान्त ने अपनी कलाई की ओर देखा। बोला, "नौ बजकर दस मिनट हो ये। अब मैं बगलवाले केबिन में जाता हूँ।" कहकर उसने अपना प्याला उठाया और पड़ोस के केबिन में जाकर बैठ गया। उसने सामने का पर्दा खींचकर लोगों की निगाहों से अपने को दूर कर लिया। बादशाह अपने केबिन में अकेला रह गया। उसके और उमाकान्त के बीच प्लाईवुड की एक पतली-सी दीवार थी जो केवल छह फुट ऊँची थी।

बार में दो आदमियों ने प्रवेश किया। आगेवाला आदमी जसवन्त था। वह लगभग छह फुट लम्बा था, और इस समय सिल्क का कीमती कुर्ता और महीन धोती पहने हुए था। बाल बड़े करीने से सँवारे हुए थे और लगता था, वह अभी-अभी नहाकर आया है। फिर भी उसके चेहरे पर पसीना छल-छलाया हुआ था और बगलों और पीठ पर से कुर्ता गीला हो रहा था।

पीछेवाला आदमी ठिगने कद का था, उसकी उम्र तीस साल होगी। उसके कन्धे चौड़े और कमर पतली थी। देखते ही लगता था कि वह काफी बलिष्ठ है और बड़ी फुर्ती से घूम सकता है। वह सँकरी मोहरी की पतलून और एक मोटी टी-शर्ट पहने था। पतलून की जेब जरूरत से ज्यादा उभरी हुई थी और मारपीट की दुनिया में रहनेवालों को बताने की जरूरत नहीं थी कि उसमें रिवाल्वर या कम से कम छुरा होगा।

बादशाह ने अपने केबिन से बाहर आकर इन दोनों का स्वागत किया। थोड़ी देर में वे तीनों केबिन में बैठ गये। बादशाह ने तीन गिलासों में ह्विस्की का आर्डर दिया और कच्चे प्याज के साथ कबाब की एक प्लेट मँगायी। यह आ जाने पर सामने का पर्दा खींच दिया।

जसवन्त ने कहा, "बहुत गर्मी है। यह पर्दा खींचने की कोई जरू[illegible] नहीं। इस इलाके में मेरी जान-पहचानवाले बहुत कम हैं। क्या समझे [illegible]

बादशाह बोला, "फिर भी, जब तक चुनाव नहीं हो जाता अ[illegible] दुश्मन आपको ऐसी जगहों पर न देखें, यही ज्यादा अच्छा है। वैसे तो [illegible] के इस हिस्से में उधरवाले बहुत कम आते हैं, फिर भी एहतियात के लि[illegible] बाहर खुले में न बैठकर इस केबिन में बैठ गया था।"

जसवन्त ने लापरवाही से कहा, "ठीक किया। पर यहाँ कोई

वाला नहीं आयेगा। क्या समझे?" उसने अपने हाथ से पर्दा आधा खींचकर खोल दिया।

गिलास में ह्विस्की की एकाध शिष्टतापूर्ण चुस्की लेने के बाद जसवन्त ने कहा, "बड़ी प्यास लगी है।" फिर उसने पूरा गिलास एक साँस में ही खाली कर दिया। उसके साथी ने भी अपना गिलास उसी तरह खत्म किया। बादशाह ने जसवन्त को बड़े आदर की निगाहों से देखा और ह्विस्की के दो नये गिलास मँगाये। अपने लिए कहा, "मैं बुड्ढा हो रहा हूँ। धीरे-धीरे ही पीता हूँ।"

दूसरे गिलासों के आ जाने पर वे लोग ज्यादा इत्मीनान से हो गये और आपस में बातें करने लगे। जसवन्त ने कहा, "आजकल तो चुनाव में मेरा रुपया पानी की तरह बह रहा है। पाँच-पाँच सौ रुपये की तो शराब ही रोज खर्च हो रही है। क्या समझे?"

"सब समझ गया भाई साहब, यह चुनाव का खेल फटीचरों के लिए नहीं है।" बादशाह ने कहा।

"जी, तभी तो जब मोहन ने आपकी तारीफ की और बताया कि चुनाव में आपसे बड़ी मदद मिलेगी तो मैंने चाहा था कि आप मेरे घर पर ही आ जायें। वहाँ मैंने एक कमरा एयरकण्डीशण्ड करा रखा है। ठाट से वहीं बैठकर ह्विस्की पीते और बातें करते। पर कोई बात नहीं। आपकी जिद थी कि मैं यहीं आऊँ। इसलिए यहाँ आ गया। क्या समझे?"

इस बार बादशाह ने नहीं कहा कि वह क्या समझा है। वह समझ गया था कि जसवन्त को हर जुम्ले के बाद अपनी बात को रोबीली बनाने के लिए 'क्या समझे' कहने की आदत पड़ गयी है। उसने सहज ढंग से कहा, "मेरा घर तो इस लायक है नहीं कि आपको वहाँ बुलाता। उधर आपके घर पर आजकल चुनाव का चक्कर है। दिन-रात भीड़-भाड़ रहती है। इसलिए वहाँ कोई मतलब की बात तो हो नहीं पाती। तभी मैंने सोचा पैराडाइज में हम लोग थोड़ी देर बैठेंगे और बात करेंगे। पर यह जगह आपको ठीक नहीं लगी। इसलिए हारकर यहीं आना पड़ा।"

जसवन्त ने खुले हुए पर्दे से कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक का निरीक्षण किया। बोला, "यह जगह भी उतनी बुरी नहीं है। यहाँ गर्मी जरूर है, पर जाड़े के लिए बहुत बढ़िया है। क्या समझे?"

जसवन्त के साथी ने पहली बार मुँह खोला, "मैं यहाँ जाड़ों ही में आता हूँ।"

इसके बाद वे चुनाव की बातें करने लगे। पहले जसवन्त ने मोहन की तारीफ की। बताया कि लोग उसे गुण्डा कहते हैं और वह गुण्डा है भी। पर आदमी बड़ा सच्चा और वफादार है। "मैं अगर कह दूं कि कुएँ में कूद पड़ो तो वह बिना हिचक कुएँ में कूद पड़ेगा।" जसवन्त ने कहा, "पिछले पन्द्रह दिनों से वह रात को सिर्फ दो-तीन घण्टे सो रहा है। बाकी वक्त चुनाव के अभियान में लगाता है। दो-तीन मुहल्लों में तो उसका इतना दबदबा है कि वहाँ एक चिड़िया भी मेरे खिलाफ वोट नहीं देगी। क्या समझे?"

बादशाह ने कहा, "मोहन मेरा बड़ा पुराना दोस्त है। हम दोनों फतेहगढ़ जेल में साथ ही साथ थे।"

जसवन्त के साथी ने बादशाह को गौर से देखा। उसके बाद उसके चेहरे से लगा, वह इस घोषणा से काफी प्रभावित हुआ है।

जसवन्त ने कहा, "तभी तो मैंने मोहन से कहा कि तुम अपने सब दोस्तों को ले आओ। इस समय मुझे सभी के सहयोग की जरूरत है। अगर आपके असर से नाले के पासवाले उन दस-पन्द्रह परिवारों के वोट टूट सकें, तो फिर चुनाव में कोई मेरे आगे नहीं खड़ा हो पायेगा। क्या समझे?" अचानक उसने नेताओं के लहजे में कहा, "बादशाह जी, आपके सहयोग के बिना मेरा काम चल नहीं पायेगा। मोहन से मैंने कह दिया है, आपका सहयोग मुझे किसी भी कीमत पर मिलना चाहिए।"

"कीमत?" बादशाह ने उसे बड़े आश्चर्य से देखा और कहा, "मुझे तो आप मोहन ही मानिए। आपके ही घर का आदमी हूँ। हमारे-आपके बीच कीमत का क्या जिक्र।"

पुराने गिलास बदलकर उनके सामने ह्विस्की के नये गिलास आ गये। वे आधा घण्टे तक चुनाव की बातों में डूबे रहे। जसवन्त बादशाह को बताता रहा कि दूसरे दिन से ही उसे सब काम छोड़कर मोहन के साथ आ जाना चाहिए। बादशाह ने कहा, "कल मैं बाहर रहूँगा। परसों सवेरे से आपकी ताबेदारी में आ जाऊँगा।"

चुनाव की बातें होते-होते न जाने कैसे और कहाँ से लड़कियों का जिक्र आ गया। जसवन्त अब अपनी बातचीत में काफी खुल चुका था और बादशाह को 'अमाँ यार' कहकर सम्बोधित करने लगा था। पहले बादशाह ने उसे अपने दो-एक तजुर्बे सुनाये। कलकत्ता में दो-तीन चीनी-जापानी लड़कियों के पीछे वह एक बार मुसीबत में फँस चुका था। वहाँ

से लड़कियों को सब तरह से खुश करके और उनके दलालों को हरा-कर वह किस तरह सही-सलामत निकल आया, यह किस्सा उसने काफ़ी विस्तार से सुनाया। बीच-बीच में कहता रहा, "अब तो मैं बुड्ढा हो गया हूँ।"

जवाब में जसवन्त ने भी अपने किस्से सुनाने शुरू किये। उनमें ज़ोर इसी बात पर रहा कि उसकी दोस्ती अपने ज़माने की सबसे सुन्दर लड़कियों से थी, हालांकि उसकी लड़कियों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। वे ही हमेशा उसके पीछे लगी रहती थीं। बादशाह जसवन्त की खूबसूरती की तारीफ़ करता रहा और उसकी बातें आदर से सुनता रहा। जसवन्त का साथी चुपचाप ह्विस्की पी रहा था। तभी बादशाह ने धीरे से कहा, "कुछ दिन हुए, यहाँ भी एक लड़की से मेरी दोस्ती हो गयी। उस तरह का चेहरा फिर देखने को नहीं मिला।"

जसवन्त ने पूछा, "अब कहाँ रहती है वह?"

बादशाह ने गहरी साँस ली। बोला, "अब वह इस दुनिया में नहीं है।"

उससे सहानुभूति दिखाने के लिए जसवन्त ने होंठ दबाकर सिर हिलाया।

बादशाह ने कहा, "सिर्फ़ उसकी यह यादगार मेरे पास रह गयी है।"

कहते-कहते उसने कमीज़ की जेब से निकालकर एक फोटो जसवन्त के सामने रख दी। यह मलिना की फोटो थी। जसवन्त थोड़ी देर उसे निश्चल निगाहों से देखता रहा। फिर अचानक उसने चीखकर बैरे को आवाज़ दी और कहा, "तीन बड़ा ह्विस्की!" उसने दुबारा अपनी निगाह मलिना की फोटो पर लगा दी। उसके बाद उसने बादशाह की ओर घूरते हुए पूछा, "यह फोटो तुम्हें कहाँ से मिली?"

बादशाह ने सहज ढंग से कहा, "उसी लड़की ने दी थी। उसे शायद आपने भी देखा हो। बहुत अच्छा नाचती थी।"

जसवन्त की निगाह बादशाह के चेहरे पर जमी हुई थी। पर उसका हाथ धीरे-धीरे मेज़ पर रखी मलिना की फोटो की ओर बढ़ रहा था। बादशाह ने धीरे से उसे खींचकर अपनी जेब में रख लिया।

जसवन्त ने अपना सवाल दोहराया, "तुम्हें यह फोटो किसने दी थी?"

उसके साथी ने शराब पीना बन्द कर दिया था। ह्विस्की का नया गिलास उसके सामने आ गया था, पर वह उसे देख भी नहीं रहा था।

उसकी निगाह भी बादशाह के चेहरे पर लगी हुई थी और दायाँ हाथ पतलून की जेब पर था।

बादशाह ने जोर से साँस खींची और एक बार पर्दे के बाहर कमरे की ओर निगाह डाली। उससे थोड़ी ही दूर पर खुले में लोहे की एक मेज पर तीन नौजवान बैठे हुए बियर पी रहे थे। बादशाह से निगाह मिलते ही एक ने धीरे-से सिर हिलाया। अचानक बादशाह ने पूछा, "आप इस तरह संजीदा क्यों हो गये? क्या आप इस लड़की को जानते हैं?"

जसवन्त ने जोर से कहा, "मैं पूछ रहा हूँ यह फोटो तुम्हें किसने दी थी?"

बादशाह ने अपनी कमीज की जेब में उँगलियाँ डालकर उसके अन्दर झाँका। सहज भाव से बोला, "आप जानना ही चाहते हैं तो आपसे बताने में मुझे ऐतराज ही क्या है? जैसे मोहन के लिए, वैसे ही मेरे लिए, आप तो घर के आदमी हैं।"

उसने अपनी जेब से एक दूसरी फोटो निकाली। "सच पूछिए तो यह फोटो मुझे उस लड़की ने नहीं, इस दोस्त ने दी थी।" कहकर उसने दूसरी फोटो जसवन्त के सामने रख दी। पर उसे उसने हाथ से छोड़ा नहीं, उँगलियों में मजबूती से पकड़े रहा। यह फोटो उस दाढ़ीवाले आदमी की थी जो मलिना, जसवन्त और सिन्धी व्यापारी के साथवाले फोटोग्राफ में मौजूद था। जाहिर था कि उमाकान्त ने उसकी अकेले की तसवीर को फोटोग्राफ से अलग करके बड़ा करा लिया था। इस तरह उस अकेले आदमी का अलग से यह एक दूसरा फोटो बन चुका था। फ्रेंचकट दाढ़ीवाला आदमी फोटो में एक अजीब-सी मुद्रा में खड़ा था। उसके चेहरे पर हँसी थी और हाथ में एक गिलास था। जसवन्त के साथी ने फोटो देखते ही कहा, "तो चचा, इसका मतलब यह कि तुम भी दरबार में जाते हो?"

पर जसवन्त ने उसको हाथ से पीछे हटाकर कहा, "चुप बे!" वह आँखें फाड़कर इस फोटो को देख रहा था। लगा वह उसे अपनी निगाह से जला डालेगा। अचानक उसने चीखकर कहा, "यह सब क्या है? तुम क्या कहना चाहते हो, तुम्हारा मतलब क्या है?"

बादशाह ने धीरे से पूछा, "क्या आप इन्हें जानते हैं?"

जसवन्त के साथवाला आदमी उछलकर केबिन के बाहर ... था। उसी के साथ जसवन्त भी खड़ा हो गया। उसने अपने सा...

पकड़कर कहा, "हमें फँसाने की कोशिश की जा रही है। यह भी चुनाव का कोई जाल है। खबरदार, कोई बेवकूफी मत कर बैठना।"

कमरे में बाहर मेज़ पर बैठे हुए तीनों नौजवानों ने बियर पीनी बन्द कर दी थी। वे गौर से केबिन की पूरी घटना देख रहे थे। पर उनमें से कोई भी अपनी जगह से हिला नहीं। उमाकान्त अपने केबिन से निकलकर धीरे-से बाहर आया और उन्हीं नौजवानों के पास खड़ा हो गया।

बादशाह पर जैसे जसवन्त की नाराजगी का कोई असर ही न हुआ हो। उसने दाढ़ीवाले आदमी की फोटो अपनी जेब में रख ली और शान्ति के साथ कहा, "आपको गलतफ़हमी हो गयी है। मुझे नहीं पता था कि आप यह तसवीरें देखकर इतना परेशान होंगे। बैठ जाइए। जब तक आपसे हमारी गलतफ़हमी दूर नहीं हो जाती, मैं आपको जाने नहीं दूँगा।"

पर तब तक जसवन्त अपने साथी का हाथ पकड़कर केबिन से बाहर आ गया था। बोला, "मैंने तुम्हें अच्छी तरह पहचान लिया है। याद रखना इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

वे दोनों तेजी से बाहर चले गये। उनके जाते ही उमाकान्त और तीनों नौजवान बादशाह के पास आकर केबिन में बैठ गये। बादशाह और उमाकान्त, दोनों ही गम्भीर हो गये थे। उमाकान्त ने कहा, "एक कॉफी और पी लें, तब यहाँ से चला जाये।"

बादशाह ने थकी हुई आवाज में कहा, "तुम्हें अभी कुछ देर और रुकना पड़ेगा उस्ताद। इन लड़कों ने इतनी देर चौकीदारी की है। इन्हें भी कम से कम एक-एक बोतल बियर का इनाम तो देना ही चाहिए।"

सत्तरह

दूसरे दिन सवेरे नौ बजे उमाकान्त ने सी० आई० डी० के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट विद्यानाथ को फोन किया। उमाकान्त की आवाज सुनते ही उन्होंने कहा, "मैं आपको खुद फोन करने जा रहा था। ऐसा लगता है कि रूबी के खिलाफ़ मुकदमे को हम अब ज्यादा दिन रोक नहीं सकते।"

"क्यों बॉस? क्या कोई नया सबूत हाथ लग गया है?" उमाकान्त ने हँसकर पूछा। उसके लहजे से लगा, विद्यानाथ के वह काफी नजदीक है।

"सबूत के अलावा आप लोगों का भी डर है, इधर हमारे खिलाफ क्या-क्या कहा जा रहा है, आपने अखबारों में पढ़ा ही होगा!"

"पुलिस की निष्क्रियता, वगैरह-वगैरह···।" उमाकान्त ने मजाक-सा उड़ाते हुए कहा।

"जी हाँ, आप भी तो कारपोरेशन-हॉल वाली सभा में थे। आपके सामने ही तो हम पर चार्ज लगाया गया था कि रूबी के खिलाफ मामले को जान-बूझकर ढीला छोड़ दिया गया है।"

"पर उसका इलाज भी तो बताया गया था कि पुलिस को कारपोरेशन के मातहत कर दिया जाये।"

"इलाज तो लाजवाब है। वैसे मैं तो अपने को अभी से कारपोरेशन के मातहत समझता हूँ।"

'डेमोक्रेसी में हर अफसर को यही समझना चाहिए।"

"तो?" विद्यानाथ की आवाज में हल्का-सा परिवर्तन जान पड़ा।

उमाकान्त ने भी सवाल किया, "तो?"

"तो रूबी का मुकदमा हम आज कोर्ट में भेज देंगे।"

उमाकान्त कुछ सोचने लगा। विद्यानाथ ने उधर से यह देखने के लिए कि वह अभी फोन पर ही है, कहा, "हलो!"

उमाकान्त ने हमदर्दी से कहा, "मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ। आप पर चारों ओर से जोर पड़ रहा होगा कि मुकदमे की जाँच जल्दी खत्म की जाये।"

विद्यानाथ की आवाज में रुखाई थी। उन्होंने कहा, "मैं तो आपको सिर्फ बता रहा था कि हमारी ओर से जाँच खत्म हो चुकी है।"

उमाकान्त ने कहा, 'पब्लिक की ओर से बहुत-बहुत शुक्रिया। पर मैं समझता हूँ, दो-तीन दिन मामले को अगर आप और ठण्डा रहने दें तो शायद···"

"आप कुछ और वक्त चाहते हैं?"

"बॉस, आप भी तो चाहते हैं कि अन्याय न होने पाये।"

उमाकान्त हँसने लगा। कहा, "दुबारा पब्लिक की ओर से शुक्रिया।"

"ठीक है, ठीक है।" कहकर विद्यानाथ शायद फोन रखने जा रहे थे, पर उमाकान्त ने टोककर कहा, "हलो बॉस, इस समय मैंने एक दूसरे मकसद से फोन किया था।"

"अभी कुछ और बाकी है ?"

"जी हाँ। मुझे बिल्कुल निजी तौर पर, आपके दफ्तर से एक पुराने मामले की जाँच की फाइल देखनी है।"

"कौन-सा मामला ?"

"आपको याद होगा, दो साल पहले एक लड़की मलिना अपने कालेज से घर आते समय गायब हो गयी थी। बाद में उसकी कटी हुई लाश रेल की पटरी पर मिली। सी० आई० डी० ने उस मामले की जाँच की थी।"

"मुझे अच्छी तरह याद है। पर इन खुफिया फाइलों को आपको दिखाना..."

उमाकान्त ने बात काटकर कहा, "प्लीज, बॉस। इतने वर्षों तक आप मुझ पर न जाने कितने मामलों में कितना विश्वास कर चुके हैं। क्या कभी भी आपको ऐसा लगा कि मैं आपके विश्वास के लायक नहीं हूँ ? और फिर, यह तो पुराना मामला है। खत्म हो चुका है।"

शायद वह कुछ हिचक रहे थे। पर जब उनकी आवाज फोन पर आयी तब साफ और दृढ थी। उन्होंने कहा, "आप मेरे दफ्तर में साढ़े दस बजे आ जाइएगा। और मेरे ही पास आइएगा।"

फिर वह हल्के ढंग से बोले, "पर इस समय इन पुराने मामलों में फँसना क्या ठीक होगा ? अभी तो आप शायद अजीतसिंह की हत्या में दिलचस्पी दिखा रहे थे।"

उमाकान्त ने कहा, "आदत से लाचार हूँ। मेरे रास्ते में जो कुछ भी आ जाता है, मैं उसे ले लेता हूँ।" सहसा उसकी आवाज कामकाजी ढंग की हो गयी, "थैंक्यू बॉस, मैं साढ़े दस बजे आपके पास होऊँगा।"

साढ़े दस बजे से बारह बजे तक वह विद्यानाथ के कमरे से लगे हुए एक छोटे-से रिटायरिंग रूम में बैठा हुआ मलिना की पुरानी फाइल देखता रहा। जाहिर था, विद्यानाथ ने अपने कर्तव्य को पुचकारने के लिए उसमें कई गोपनीय कागजात पहले ही निकाल लिये थे। फिर भी, फाइल में काफी काम की बातें थीं। सी० आई० डी० और जिला पुलिस—दोनों ने मिलकर मलिना को ढूँढने की पूरी कोशिश की थी। उन्होंने दूसरे शहरों

और लखनऊ में भी, कई जगह छापे मारे थे। उन्हीं दिनों साप्ताहिक
नक्रान्ति' में एक सम्पादकीय छपा था, 'भ्रष्टाचार के अड्डे'। इसमें
हर के एक बड़े प्रसिद्ध महिला-आश्रम के खिलाफ कई प्रकार के सन्देह
कट किये गये थे। सम्पादक ने लिखा था कि 'उस महिलाश्रम में—जिस
ा नाम सभी जानते हैं और लिखने की जरूरत नहीं है—लड़कियों को
फँसाकर लाया जाता है। महिला आश्रम की इमारत पुरानी है और उसमें
कई ऐसे कमरे हैं जिनमें किसी भी लड़की को आसानी से छिपाकर
रखा जा सकता है। उन्हें संस्था के प्रबन्धकों और शहर के दूसरे रईसों
के साथ पापाचरण के लिए मजबूर किया जाता है। यह सब कानून की
निगाहों के नीचे बरसों से होता आ रहा है और…'

सम्पादकीय में इस तरह से पुलिस की भी काफी निन्दा की गयी थी।
इस सम्पादकीय की कतरन फाइल में मौजूद थी। इसके छपने के
बाद सी० आई० डी० वालों ने अजीतसिंह से बात की थी और पक्का
कर लिया था कि उसका इशारा पार्वती महिला आश्रम की ओर है।
इसका हवाला भी फाइल में था। उसी के दूसरे दिन पुलिस ने पार्वती
महिला आश्रम पर छापा मारकर वहाँ की तलाशी ली थी। पर वहाँ
मलिना नहीं मिली, न कोई ऐसी चीज ही मिली जिससे उस संस्था के
खिलाफ कोई बात प्रमाणित होती। तलाशी के दूसरे दिन ही स्थानीय
अखबारों में इसकी कड़ी निन्दा की गयी थी। कहा गया था कि पुलिस
अपराध और भ्रष्टाचार के अड्डों पर निगाह नहीं डालती, वह सिर्फ
पार्वती महिला आश्रम जैसी पवित्र, समाज-सेवी संस्थाओं की तलाशी
लेती है ताकि लोगों की निगाह में उन संस्थाओं की हैसियत गिर जाये
और वे दीन-दुखी महिलाओं की जो सेवा कर रही हैं, उसे छोड़कर पुलिस
के इशारों पर नाचना शुरू कर दें। इन पत्रों की भी कतरनें फाइल में
थीं।

पार्वती महिला आश्रम की तलाशी के बाद तीसरे दिन मलिना की
लाश रेल की पटरी पर कटी हुई मिली थी। उसके जिस्म के टुकड़े
टुकड़े हो गये थे और धड़ का हिस्सा खत्म-सा हो चुका था। अतः पोस्
मार्टम से कोई बात साफ नहीं हो पायी थी। यह जरूर था कि जिस्म
उन अलग-अलग हिस्सों में पहियों की चोट से जितना भाग बचा
उस पर कोई दूसरी तरह की चोट न थी। इस बात का कोई प्रम
नहीं था कि मलिना जिन्दा हालत में रेल की पटरी पर जाकर लेटी

लिटायी गयी थी, या उसे पहले ही मार डाला गया था। फाइल में मलिना की लाश के कुछ फोटो भी थे, और उसके जिस्म पर जो कपड़े थे उनका विवरण भी। उमाकान्त ने अपने पास से मलिना का फोटो निकालकर देखा, उस फोटो में वह वही कपड़े पहने हुए थी—राजस्थानी घाघरा और ओढ़नी, जो मरने के समय उसके जिस्म पर थे।

सी० आई० डी० ने इस फाइल में तेरह आदमियों के नाम और उन की निजी ज़िन्दगी के ब्योरे भी लिख रखे थे। ये ब्योरे पढ़ने से ही घिनौने दिखते थे। वे लोग शहर के मशहूर आदमी थे और शक था कि ये पार्वती महिला आश्रम में प्रायः जाया करते हैं और वहाँ के मामलों में अस्वाभाविक ढंग की दिलचस्पी लेते हैं। मामले की जाँच निराशा के वातावरण में खत्म हुई थी। यह प्रमाणित नहीं हो सका था कि मलिना की हत्या की गयी है और न यही जाना जा सकता था कि गायब होने के पन्द्रह दिन बाद तक वह कहाँ रही। आखिर में, सी० आई० डी० ने इस सम्भावना को मान लिया था कि उसने आत्महत्या की होगी।

फाइल में अखबारों की कई कतरनें थीं। उनमें लगभग सभी ने मलिना की फोटो भी छापी थी। कुछ फोटो नृत्य की मुद्रा में थे, कुछ में सिर्फ चेहरा दिखाया गया था। उमाकान्त ने देखा, हर तसवीर में वह बहुत आकर्षक और सुन्दर दिख रही है। लगभग सभी तसवीरों में उसके चेहरे पर मुसकान थी, पर उसकी सुन्दरता को हर तसवीर में उसकी आँखों से धक्का लगा था। आँखें बड़ी जरूर थीं, पर ऐसा लगता था कि उन आँखों में रोशनी नहीं है। नाच के समय आँखें जैसी भी दिखती हों, उन तसवीरों में वे बड़ी ही साधारण जान पड़ती थीं, लगभग भाव-रहित।

उसने अपने पासवाले फोटो से इन तसवीरों का मुकाबला किया। इस फोटो में मलिना का चेहरा खुशी से दमक रहा था, आँखों में एक असाधारण-सी चमक थी। उसके पास खड़े हुए लोगों के चेहरे भी चमक रहे थे। उमाकान्त के दिमाग में सहसा एक विचार कौंधा—इन आँखों की चमक का क्या कारण है? कहीं मलिना को कोई नशा तो नहीं पिलाया गया था? किसी बहाने उसे शराब न पिलायी गयी हो!

शराब का ख्याल आते ही उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि उसे अफीम दी गयी हो। गहरी बेहोशी में उसे बाद में पता ही न चला हो कि उसे कब अपनी जगह से हटाया गया, कब रेल की पटरी पर लिटाया गया।

अफीम'''अफीम'''अफीम !

उमाकान्त ने अपनी नोटबुक में कुछ आवश्यक बातों के नोट उतार लिये थे और विशेष रूप से उन तेरह आदमियों के नाम ले लिये थे जो सी० आई० डी० की निगाह में पार्वती महिला आश्रम में गलत दिलचस्पी ले रहे थे। फाइल विद्यालय को वापस करके, उन्हें धन्यवाद देकर, लगभग साढ़े बारह बजे उमाकान्त अपने स्कूटर के साथ सड़क पर आ गया। रास्ते में एक छोटा-सा पोस्ट आफिस पड़ता था। वहां से उसने पार्वती महिला आश्रम को फोन मिलाया। एक महिला ने उधर से जवाब दिया। उमाकान्त ने कहा, "मैं आश्रम की सुपरिण्टेण्डेण्ट से बात करना चाहता हूँ।"

"मैं सुपरिण्टेण्टेण्ट ही बोल रही हूँ।"

उसने कहा, "मैं उमाकान्त हूँ। शायद आपने मेरा नाम सुना हो। मैं पत्रकार हूँ। दिल्ली के 'क्रानिक्लर' ने मुझसे खास तौर से निवेदन किया है कि मैं लखनऊ की समाज-सेवी संस्थाओं पर एक लेखमाला तैयार करूँ। आपकी संस्था यहाँ सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अतः शुरुआत आपके यहाँ से ही करना चाहता हूँ। आपको आपत्ति न हो तो चार बजे मैं वहाँ आकर लेख की सामग्री तैयार कर लूं।"

"हमारे यहाँ मर्दों के आने की इजाजत नहीं है।"

उमाकान्त ने हँसकर कहा, "पर मैं तो पत्रकार हूँ। पत्रकार न मर्द होता है, न औरत। वह तो सिर्फ पत्रकार रहता है।" फिर उसने गम्भीरता से कहा, "सच तो यह है कि आपकी संस्था के बारे में मेरा लेख देश के एक मशहूर पत्र में छपेगा। मुझे पता नहीं कि आपकी आर्थिक स्थिति कैसी है। पर दूसरी संस्थाएँ तो खुशामद करके मुझसे ऐसे लेख लिखवाती हैं, ताकि उनमें संस्था को सहायता देने की अपील भी की जा सके। कुछ संस्थाओं को तो इसी तरह हजारों रुपये दान में मिले हैं।"

अधीक्षक की आवाज में अब वह दृढ़ता न थी। उसने कहा, "पर हमारे यहाँ का नियम ऐसा ही है। मर्द यहाँ नहीं आ सकते। आपके लिए मुझे मैनेजर से पूछना पड़ेगा। पर वह भी शहर से बाहर गये हैं।" उसकी आवाज पहले की अपेक्षा मीठी हो गयी। बोली, "आप अगर कल फोन कर लें तो..."

"'''पर कल सुबह ही मैं पन्द्रह दिन के लिए दिल्ली जा रहा हूँ। आज अगर मैं आपके यहाँ आ सकता तो पूरी सामग्री के साथ दिल्ली जा सकूँगा।

वह लेख वहीं पूरा कर डालूंगा। लेख क्या होगा, एक तरह की अपील कहिए। समाज-सेवियों से अपील!"

कुछ क्षणों के लिए फोन पर सन्नाटा रहा। फिर उमाकान्त को उधर से सुनायी दिया, "तो आप चार बजे आ जायें। मैं मैनेजर साहब को बाद में समझा दूंगी।"

फोन का रिसीवर रखकर वह फिर सड़क पर आ गया।

दो दिन पहले आंधी-पानी आ जाने से आज लू नहीं चल रही थी, पर दोपहर बहुत तपने लगी थी। उमाकान्त के मत्थे पर बल पड़ गये थे और लगता था, वह किसी गुत्थी में उलझा हुआ है। दोपहर की तपन का उस पर कोई भी असर नहीं दिख रहा था। स्कूटर 'जनक्रान्ति' प्रेस के पास जाकर रुका। प्रेस का काम चालू था, मशीनें धड़ाधड़ चल रही थीं। दो-तीन छोकरे कम्पोजीटर और मशीनमैनों की जगह बैठे अपना काम कर रहे थे। बूढ़ा कम्पोजीटर एक कुर्सी पर पड़ा-पड़ा ऊँघ रहा था। उमाकान्त ने उसे जगाकर बड़ी आत्मीयता से नमस्ते की। उसने उमाकान्त को मोढ़े पर बैठने का इशारा करके कहा, "इतनी जल्दी आपके लेख कैसे मिल सकते हैं? परसों ही तो आप उन्हें खोजकर गये हैं।"

उमाकान्त ने उसे एक सिगरेट दी, एक खुद ली और दोनों को सुलगाकर बोला, "आज एक दूसरा काम लेकर आया हूँ। अजीतसिंह जी पर अभी तीन दिन पहले ही हमने एक शोक-प्रस्ताव पास किया था, अब मुझे उन पर एक लेख लिखना है। दो साल हुए, उन्होंने देश की आर्थिक समस्याओं पर कुछ बड़े अच्छे सम्पादकीय लिखे थे। अपने लेख के सिलसिले में मेरा उन्हें पढ़ना बहुत जरूरी है।"

कम्पोजीटर के गले में सिगरेट का धुआँ फँस गया था। खाँसते-खाँसते बोला, "तो यह कहिए, आप 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक देखना चाहते हैं!"

बुड्ढा कम्पोजीटर खाँसता हुआ एक अलमारी के पास गया और वहाँ से मोटी जिल्दों में तीन बड़ी-बड़ी फाइलें उठा लाया। कहने लगा, "ये पिछले तीन सालों के 'जनक्रान्ति' के अंक हैं। यहीं बैठकर देख लें।"

उमाकान्त ने एक जिल्द उठाकर पलटनी शुरू कर दी। उस पर निगाह डालते-डालते ही उसने कहा, "मुझे आपका फोटो भी चाहिए। अजीतसिंह पर कोई लेख आपका जिक्र किये बिना पूरा नहीं होगा। पर उसके लिए मुझे फिर आना होगा। अभी मैं कैमरा नहीं लाया हूँ।"

बुड्ढे के चेहरे पर झेंप और खुशी साथ-साथ फैल गयी। वह बोला

मूँदकर कुर्सी पर बैठ गया। उमाकान्त 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक देखता रहा। मलिना की मृत्यु के बाद भी 'जनक्रान्ति' के चार अंकों में व्यभिचार के अड्डों के बारे में जोर-शोर से लिखा गया था। उन लेखों में बताया गया था कि कुछ समाज-सेवी संस्थाएँ किस तरह रईसों के अनाचार का अड्डा बनी हुई हैं। जनता से इस गन्दगी को खत्म करने की अपील की गयी थी। यह भी कहा गया था कि इन संस्थाओं के बारे में कई सच्ची कहानियाँ सम्पादक को लिखित रूप में मिल चुकी हैं। अजीतसिंह ने लिखा था कि जरूरत पड़ने पर वह अपनी बातों का प्रमाण भी जनता के आगे पेश कर सकता है।

उसके बाद ही इस प्रकार के सम्पादकीय आने बन्द हो गये थे। उसकी जगह कुछ दिन बाद 'जनक्रान्ति' के आखिरी पृष्ठ पर शहर के प्रमुख उद्योगपति और समाज-सेवी व्यक्तियों के सचित्र परिचय छपने लगे थे। उमाकान्त ने देखा कि नगर के उन प्रमुख उद्योगपतियों और समाज-सेवियों में ज्यादातर यही तेरह लोग हैं जिनका नाम सी० आई० डी० ने अपनी फाइल में दर्ज कर रखा था। पर अजीतसिंह ने इन सभी के व्यवहार, आचरण और समाज-सेवा की तारीफ की थी। मन-ही-मन उसने अजीतसिंह को एक भद्दी-सी गाली दी। अजीतसिंह का ब्लैकमेल का तरीका इतना साफ था कि ज्यादा छानबीन जरूरी नहीं थी।

बुड्ढा कम्पोजीटर अब कुर्सी पर पड़े-पड़े ऊँघ गया था। उमाकान्त उसकी ओर पीठ करके मोढ़े पर बैठ गया। फिर उसने सात अंकों में छपे हुए सात प्रमुख उद्योगपति और समाजसेवी लोगों के परिचय, उनकी तसवीरों के साथ, धीरे-से फाड़कर अपनी नोटबुक में रख लिये।

तीन बजे के लगभग वह अपने घर वापस पहुँचा। वहाँ उसने पहला फोन एक रेस्तराँ को किया जो उसके घर से दो सौ गज पर था। उसने मैनेजर से कहा, "हलीम साहब, आप मुझे जिन्दा देखना पसन्द करेंगे या मुर्दा?"

हलीम साहब ने फोन के दूसरे सिरे से दो बार 'इंशा अल्लाह' कहा और 'कैसी मनहूस बात जबान से निकालते हैं, जनाब' की इबारत दोहराई।

"तो ठीक है, अगर आपको मेरे जिन्दा रहने में दिलचस्पी है तो दस मिनट में आप मेरा खाना यहीं भेज दें···जी हाँ,···शुक्रिया।"

कहकर उसने फोन काट दिया और फिर बादशाह को मिलाया।

उधर से बादशाह की आवाज सुनते ही उमाकान्त बोला, "बादशाह,

ने बताया था कि अजीतसिंह के खून की रात जसवन्त अस्पताल से निकलकर जीप से दो-तीन जगहों पर होता हुआ अपने घर वापस गया था। इसका आज ही पता लगवा लो कि वे दो-तीन लोग कौन-कौन थे। उनके नाम तो तुम्हारे पास होंगे ही। यह भी मालूम करो कि वे लोग उस रात को जसवन्त से मिलने के बाद क्या करते रहे। और जिस जीप से जसवन्त घर वापस गया था, वह जीप उस रात कहाँ रही। मैं जानता हूँ, यह सब मुश्किल से ही मालूम होगा। पर तभी मैं यह तुमसे कह रहा हूँ, किसी और से नहीं। पूरी सूचना मुझे आज रात या कल सुबह तक मिल जानी चाहिए। दूसरा काम यह है कि आर्ट्स कालेज में किसी को भेजकर रवीन्द्र को खबर कर दो। हाँ, हाँ, वह रवीन्द्र जो वहाँ पेंटिंग सिखाता है। उसे ही, कि आज रात के दस बजे मेरे घर आ जाये। हाँ, दस बजे। उसके बाद भले ही आये, पहले नहीं। एक बात और। अभी पाँच बजे शाम को तुम पार्वती महिला आश्रम के फाटक के पास आकर सड़क के दूसरी ओर मेरा इन्तजार करना। पाँच के बाद मैं किसी भी वक्त आ जाऊँगा।"

अठारह

पार्वती महिला आश्रम के अन्दर एक बड़े कमरे में सिलाई की क्लास चल रही थी। आश्रम की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट और उमाकान्त के कमरे में प्रवेश करते ही सभी छात्राएँ खड़ी हो गयीं। छात्राओं की संख्या सोलह थी। उनमें तीन-चार सत्रह-अठारह साल की लड़कियों को छोड़कर सभी प्रौढ़ महिलाएँ थीं। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "हम इन्हें सिलाई के डिप्लोमे के लिए तैयार करते हैं। अगर इनमें किसी की शादी हो जाये, या वह आश्रम के बाहर स्वतन्त्र रूप से रहना चाहे तो उसे सिलाई की एक मशीन मुफ्त में देते हैं।"

उमाकान्त ने उन्हें अपनी-अपनी जगह बैठने का इशारा किया। सिलाई सिखानेवाली महिला से कहा, "क्लास को पहले की तरह चलने दीजिए। मैं ऐसा फोटो लेना चाहता हूँ जो कक्षा के लिए बिल्कुल स्वाभाविक हो।"

महिलाएँ जब बैठने लगीं तब उमाकान्त ने पाया, उसकी निगाहें अपने-आप उनके पाँवों की ओर चली गयी हैं। यह कई दिन से हो रहा

जिस दिन वह बादशाह के साथ हरीसिंह से होटल में मिलने गया
उसी दिन के बाद से उसकी आँखें बार-बार लोगों के पैरों की ओर
बने लगी थीं। उसने अपने-आपसे अपना ही मजाक उड़ाते हुए कहा—
या में करोड़ों पाँव गोरे होंगे। उन्हें अपनी निगाहों से कहाँ तक
पते रहोगे ?

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट कह रही थी, "इनमें से कुछ लड़कियाँ," वह
श्रम में रहनेवाली प्रत्येक स्त्री को लड़की ही कहती थी, "तो बहुत ही
भागी हैं। पर मैं आपको अभी आँकड़े देकर बताऊँगी, इससे भी ज्यादा
कठिन मामलों में हमें सफलता मिली है। अभी कल ही एक अनाथ लड़की
की, जिसे लोग स्टेशन पर, क्या बताऊँ किस हालत में डाल गये थे, हम
लोगों ने एक कारखाने के फोरमैन से शादी करायी है। साल-भर यहाँ
रहकर वह लड़की बिल्कुल ही बदल गयी थी।"

उमाकान्त सिर हिलाकर उसकी बात सुनता रहा और फोटो लेने
के लिए अपना कैमरा ठीक करता रहा। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने
कम उम्र की एक गोरी लड़की की ओर आँख से इशारा करके अँग्रेजी में
कहा, "उसका केस तो बड़ा ही भयंकर है। आप जानते हैं, खुद उसके
बाप ने शराब पीकर..." लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने हिचककर अपनी बात
अधूरी ही छोड़ दी।

यह वही लड़की थी जिसके पाँवों पर उमाकान्त की निगाह खास
तौर से अटकी थी। उसके पाँव गोरे और सुडौल थे। हरीसिंह ने बुर्के
से झाँकते हुए ऐसे ही पाँव देखे होंगे और उसका मन तड़प उठा
होगा—उमाकान्त ने सोचा। फिर मन-ही-मन अपनी कल्पना का मखौल-
सा उड़ाने लगा। उसने अलग-अलग कोने से कक्षा के दो फोटो लिये। इस
बात का ध्यान रखा कि एक फोटो में कक्षा की अध्यापिका और लेडी
सुपरिण्टेण्डेण्ट जरूर आ जायें, दूसरे फोटो में उसने गोरे पाँववाली लड़की
को इस तरह से शामिल किया कि उसका चेहरा भी साफ तौर से आ
जाये।

मन-ही-मन उसने अपने-आपसे तीसरी बार कहा कि यह बेवकू
है। इस तरह अपराधी का पता नहीं चलेगा। इस शहर में कम-से-
दो लाख औरतें ऐसी होंगी जिनके चिकने और गोरे पैर देखकर हरी
पागल हो सकता है। उसने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से सिलाई की मश
की संख्या और कक्षा की दूसरी जरूरतों की बाबत दो-चार बा

सवाल किये।

इसी तरह वे कताई, बुनाई, ड्राइंग, फल-संरक्षण आदि कक्षाओं का चक्कर लगाते रहे। हर जगह उमाकान्त ने फोटो लिया। हर जगह लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट उसे बताती रही कि पिछले वर्षों से, जब से वह आश्रम में आयी है, कितनी महिलाओं को रोजी दिलायी गयी, कितनी महिलाओं की शादियाँ हुईं, कितनी लड़कियाँ गन्दी बीमारियों के साथ आयी थीं, उन्हें नीरोग किया गया, कितनी लिखना-पढ़ना नहीं जानती थीं, उन्हें धीरे-धीरे जूनियर हाईस्कूल पास कराया गया।

उमाकान्त कभी-कभी रुककर इस तरह की बातें अपनी नोटबुक में दर्ज कर लेता। हर जगह वह आश्रम में अच्छी इमारत और सामान की कमी का जिक्र करके लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को आश्वासन देता रहा कि वह जनता का ध्यान संस्था की इन जरूरतों की ओर आकृष्ट करेगा। आश्रम की इमारत शानदार, पर बहुत पुरानी थी। उन्नीसवीं सदी में यह किसी नवाब की कोठी रही थी। आम सड़क से वह बिल्कुल सटी हुई थी। उसके सामने कोई सहन न था। बाहर काफी ऊँचा महराबदार फाटक था, जिसमें, शायद बाद में, लोहे के सीखचोंवाले दरवाजे लगवा लिये गये थे। फाटक के अन्दर सहन पड़ता था और उसके बाद ही कोठी का भीतरी भाग शुरू हो जाता था। इमारत कहीं-कहीं दोमंजिली भी थी, पर ऊपर के कमरे ज्यादातर बन्द थे। दो जगहों पर बड़े-बड़े कमरों के पास उमाकान्त को नीचे की ओर जाते हुए जीने दिखायी दिये। उसने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से कहा, "ये क्या तहखाने हैं ?"

"जी हाँ। गर्मियों में पुराने नवाबों की आरामगाह।" उसने मुसकराकर जवाब दिया, "आजकल तो उधरवाले तहखाने में लायब्रेरी है और इधरवाले में स्टोर।"

"चलिए, आपकी लाइब्रेरी देख ली जाय।" कहकर उमाकान्त तेजी से दूसरी ओर के जीने की ओर बढ़ा।

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पुकारकर कहा, 'तो पाँच मिनट बाद चलिए। दरअसल हमने अभी लायब्रेरी का इस्तेमाल शुरू नहीं किया है। गर्मियों में वहाँ काफी ठण्डक मिल जाती है, इसलिए वहीं लायब्रेरी रखने की बात सोच रहे हैं, पर उसे दुरुस्त करने में कुछ टाइम लगेगा।"

एक बुड्ढा माली सामने एक क्यारी में काम कर रहा था, उसे पुकारकर लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "नीचे के तहखाने में किसी को

भेजकर दिखवा लो, वहाँ ठीक से रोशनी है या नहीं। हम लोग अभी लौटकर आते हैं।"

फिर वे लोग इमारत के दूसरे छोर पर उन कमरों को देखने गये जहाँ महिलाओं के रहने की जगह थी। उन कमरों का डॉर्मिटरी की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। कुछ-एक पलंग टूटे हुए थे। उमाकान्त ने कहा, "आपको कहीं से दस-बीस हजार रुपये का दान मिल जाये तो ये कमियाँ दूर हो जायें।"

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट लगभग चालीस साल की, छरहरे बदन की थी। वह अब भी काफी आकर्षक थी। इतनी देर में वह उमाकान्त को बता चुकी थी कि वह दिल्ली के स्कूल ऑफ सोशल वर्क से डिप्लोमा ले चुकी है, वहीं की रहनेवाली है और अपने स्वतन्त्र स्वभाव के कारण और बाप से न पटने के कारण, यहाँ नौकरी कर रही है। दान का जिक्र आते ही उसने उमाकान्त को बड़े आकर्षक ढंग से देखा। बोली, "यह मेरी निजी बात है, किसी से बताइएगा नहीं। मैं चाहती हूँ कि अगर आप हमारी संस्था के लिए कोई दान दिला सकें तो उसकी लिखा-पढ़ी मुझी से की जाये। न जाने क्यों, पिछले साल से हमारे मैनेजर साहब को यही शिकायत रहती है कि मैं संस्था के लिए कुछ कर ही नहीं पाती। उस हालत में वे कम-से-कम इतना तो मानेंगे ही कि खुद मैंने संस्था के लिए दान की रकम हासिल की है।"

"जरूर, जरूर!" उमाकान्त ने बेतकल्लुफी से कहा, "मेरी कोशिशों से जो भी दान संस्था को मिलेगा, वह आपकी ही मार्फत दिया जायेगा।"

डॉर्मिटरी से बाहर आते ही इमारत की चहारदीवारी पर नजर पड़ती थी। उस पर बूगनबेलिया की लतरें बहुत घनी होकर छायी थीं। चहारदीवारी के उस पार एक मस्जिद की मीनारें दिखायी देती थीं। दृश्य काफी लुभावना था। उमाकान्त ने कैमरा उठाकर आँख से लगाया। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "आपका कैमरा बहुत कीमती दीखता है, कौन-सा मेक है?"

उमाकान्त ने कैमरा उसके हाथ की ओर बढ़ाकर कहा, "देख लीजिए। बल्कि ले सकती हैं तो एकाध फोटो आप भी खींच लीजिए।"

उसने कैमरा हाथ में ले लिया और उसे घुमा-फिराकर देखा। फिर उसे वापस करते हुए बोली, "थैंक यू।"

वे लोग तहखाने की ओर बढ़ने लगे थे। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट कहती

रही, "एक जमाने में मुझे भी फोटोग्राफी का बड़ा शौक था। पर वह जमाना ही दूसरा था। उन दिनों डैडी हाँगकांग में थे। उन्होंने मेरे लिए वहाँ से कैमरा भेजा था। मेरे कुछ फोटोग्राफ एक बार दिल्ली की एक नुमायश में भी दिखाये गये थे…"

उमाकान्त देख चुका था, लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को बात करने का शौक है, यह दिखाने का भी शौक है कि वह अपनी मौजूदा हैसियत से कहीं ज्यादा ऊँची जगह पर जाने लायक है। वह दिलचस्पी के साथ फोटोग्राफी के बारे में उससे बातें करता रहा। जब वे जीने से उतरकर लायब्रेरी वाले तहखाने में आये, वहाँ शायद सफाई की जा चुकी थी, चारों दीवारों पर ट्यूबलाइट जल रही थी। एक ओर छत के पास बड़े-बड़े दो जंगले थे जिनसे दिन की रोशनी अन्दर आ रही थी। तहखाने का यह कमरा काफी बड़ा और प्रकाशपूर्ण था। लायब्रेरी के नाम पर वहाँ एक मेज पर किताबों का एक ढेर-भर पड़ा था। इधर-उधर कुछ कुर्सियाँ पड़ी थीं। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "मैंने बताया ही था…"

उमाकान्त लौटकर तहखाने के दरवाजे के पास जीने की पहली सीढ़ी पर आ गया था। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट कमरे के बीच में थी। अचानक उमाकान्त ने पलटकर कमरे पर सरसरी निगाह डाली और सामने की दीवार को एकटक देखने लगा।

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "क्या हुआ ?"

वह सहज भाव से मुसकराया। बोला, "कुछ नहीं। बस, आप वहीं खड़ी रहें। ऐसे ही।"

"क्यों ? कोई खास बात है ?" पर उसकी आँखें हँस रही थीं। वह शायद समझ गयी थी कि उमाकान्त उसका फोटो लेनेवाला था।

उमाकान्त ने बड़े तकल्लुफ से अपने खड़े होने का कोण दुरुस्त करते हुए, जीने की पहली सीढ़ी के पास दरवाजे से टिककर लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट का फोटो लिया। पेशेवर फोटोग्राफरों की तरह बोला, "थैंक यू।"

वह तेजी से सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट उसके पीछे-पीछे थी। उसने कहा, "मेरा काम पूरा हो गया। बहुत-बहुत धन्यवाद !"

एक लड़की ने, जो वहाँ क्लर्क का काम करती रही होगी, सामने आकर एक कागज उमाकान्त के हाथ में दिया। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा, "आपने पिछले सात और दस साल के दानकर्ताओं की सूची माँगी थी न !

वही है। वैसे, पिछले साल की सूची हमारी वार्षिक रिपोर्ट में भी शामिल है।"

उमाकान्त ने वहाँ से विदा लेनी चाही। लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अपनी मुसकान को चारों ओर बिखेरते हुए कहा, "चाय ?"

"आज नहीं, मैडम। पर मैं चाय पीने का हक रिजर्व रखे जा रहा हूँ। किसी भी दिन आ जाऊँगा।"

"मोस्ट वेलकम। पर पहले मेरे घर फोन कर लीजिएगा।"

"यह तो मेरे लिए और भी खुशी की बात होगी। मैं तो इसलिए भी आऊँगा कि आपके खींचे फोटोग्राफ देख सकूँ। इस आर्ट में मेरी भी थोड़ी-बहुत दिलचस्पी है।"

"जरूर आइए। मुझे भी बड़ी खुशी होगी।"

उमाकान्त को लगा, लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट सचमुच ही उससे दुबारा मिलकर बहुत खुश होगी। बड़ी सद्भावना के साथ वह बाहर आया। चलते-चलते उसने आश्वासन दिया कि आश्रम पर उसका लेख बहुत जल्द 'क्रानिकलर' में आयेगा। मजाक में यह भी कहा कि उसका सबसे आकर्षक अंश लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट का फोटोग्राफ होगा।

शाम हो गयी थी। दो-चार आवारा-से दिखनेवाले आदमी महिला आश्रम के फाटक के पास टहल रहे थे। उमाकान्त को देखकर वे कुछ दूर चले गये। उमाकान्त ने उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया। कुछ क्षणों के बाद उसे बादशाह दिखायी पड़ा। वह उससे लगभग पचहत्तर गज की दूरी पर, सड़क के उस पार, एक ठेलेवाले से आइसक्रीम खरीदकर खा रहा था।

उमाकान्त से मिलते ही उसने कहा, 'उस्ताद, नयी खबर यह है कि सिद्दीकी ने मिस लायल का बयान ले लिया है।"

"और हरीसिंह का ?"

"उसका भी।"

उमाकान्त ने कहा, "माफ करना बादशाह, मैं तुम्हें पहले बता नहीं पाया। यह खबर मेरे लिए बहुत पुरानी है।" उसने मिस लायल से अपनी पिछली मुलाकात का पूरा हाल बता दिया।

दोनों फुटपाथ के दूसरे किनारे बिल्कुल एकान्त में आ गये थे। उमाकान्त ने पूछा, "सिद्दीकी अब क्या सोच रहा है ?"

"उन दोनों का बयान लेने के बाद ही सिद्दीकी ने अपने एक दोस्त से कहा कि रवी का बचना मुश्किल है। मुकदमा कोर्ट में जाने ही वाला है।"

उमाकान्त ने कुछ रुककर एक सिगरेट जलायी। दोनों नथुनों से धुआँ निकालते हुए उसने कहा, "मतलब साफ है। हरीसिंह ने सी० आई० डी० को बता दिया है कि बुर्केवाली औरत वार्ड में दुबारा आयी थी। उसने उसके गोरे-गोरे पाँवों की बात भी जरूर कही होगी। सिद्दीकी बहुत होशियार आदमी है। उसे यह समझने में देर न लगी होगी कि वह बुर्के वाली औरत जरीना नहीं हो सकती। उसके चेहरे का रंग साँवला है और उसके पाँव करीब-करीब काले हैं। मुझे लगता है कि सिद्दीकी ने यह नतीजा निकाला है कि रूबी जरीना के जाने के बाद बुर्का पहनकर उसे जहर देने के लिए आयी थी। रूबी के पाँव बिलकुल वैसे ही हैं, जैसे कि हरीसिंह ने देखे थे। सी० आई० डी० की तरफ से कहा जायेगा कि अगर रूबी ने बिना अपने को छिपाये हुए वार्ड में जाकर अजीतसिंह को जहर दिया होता तो वह बिलकुल ही पकड़ी जाती। लिहाजा उसने अजीतसिंह को वार्ड में एक बार देखकर मौके का नये सिरे से इन्तजार किया। जरीना अस्पताल में पहले से ही मौजूद थी। उसे देखकर रूबी ने भी एक बुर्के का इन्तजाम कर लिया और…"

"पर क्या रूबी के रिश्तेदार गवाही नहीं देंगे कि अस्पताल से वह सीधे घर गयी थी? वे यह भी साबित कर देंगे कि गोलीकाण्ड के बाद वह एक मिनट के लिए भी अकेली नहीं रही कि कहीं से जहर ला सकती।"

उमाकान्त ने रुखाई से कहा, "ये गवाह रूबी के रिश्तेदार हैं। अदालत मान सकती है कि वे रिश्ते के कारण, उसे बचाने के लिए, झूठी गवाही दे रहे हैं।" फिर अपने स्कूटर की ओर बढ़ते हुए उसने पूछा, "तुम कार लाये हो?"

"नहीं। आपके साथ चलना है न, उस्ताद।"

जब वे स्कूटर पर बैठकर चल दिये तब उमाकान्त ने पूछा, "रवीन्द्र को खबर करा दी? उसे आज रात दस बजे तक मेरे घर आना है।"

"हाँ उस्ताद। वह ठीक दस पर आयेगा।"

"और जसवन्त के साथियों के बारे में?"

बादशाह ने अफसोस से कहा, "बहुत मुश्किल है उस्ताद! इतने दिन बाद, इतने कम समय में, यह बताना बहुत मुश्किल है कि वे लोग रात को कहाँ-कहाँ गये। जसवन्त अस्पताल से निकलकर जिन-जिनके घर गया, उनके नाम तो मालूम हैं। उनसे आगे और कोई बात पता चलना बहुत मुश्किल है।"

"और जीप के बारे में ?"

"उसका पता चल जायेगा। मेरा एक पट्ठा जीप-ड्राइवर के पीछे चिपका हुआ है। पर ड्राइवर को फुरसत नहीं है। वह चुनाव में फँसा हुआ है। अभी साढ़े छह बजे से अमीनुद्दौला पार्क में एक चुनाव-सभा हो रही है। इस वक्त जीप वहीं होनी चाहिए। ड्राइवर खाली होगा। तभी कोशिश की जायेगी। मुझे उम्मीद है, उस रात जीप की पूरी यात्राओं का हाल कल सवेरे तक हमारी हथेली में होगा।"

"बहुत अच्छा।" उमाकान्त ने इस तरह कहा जैसे किसी शेर पर दाद दी हो।

एक चौराहे पर उसने स्कूटर बायीं ओर मोड़ दिया। बादशाह ने पूछा, "इधर कहाँ चल रहे हैं, उस्ताद ?"

"अमीनुद्दौला पार्क। हम लोग भी चुनाव-सभा देख लें।"

कुछ देर दोनों चुप रहे। फिर बादशाह ने पूछा, "इस महिला आश्रम में कुछ मिला उस्ताद ?"

उमाकान्त ने कहा, "बहुत कुछ मिला है। बताऊँगा तो ताज्जुब में पड़ जाओगे !"

"क्या हुआ ?" बादशाह ने 'उस्ताद' कहना भूलकर सीधे-सादे ढंग से पूछा।

"अभी कुछ कहना मुश्किल है। रात में इत्मीनान से बात की जायेगी

अमीनुद्दौला पार्क के पास स्कूटर खड़ा करके वे लोग पार्क के अन्द पहुँचे। वहाँ मंच पर एक नेता का भाषण हो रहा था। लगभग ती हजार लोग जमा थे। उमाकान्त बादशाह के साथ धीरे-धीरे मंच बिल्कुल किनारे पहुँच गया। उसने देखा, वहाँ शान्तिप्रकाश भी मौज हैं। वह चार-पाँच आदमियों के साथ पीछे की ओर मंच के नीचे उतर पार्क के बाहर जा रहे हैं। उधर, सड़क पर एक जीप खड़ी थी। उ साथ जसवन्त था, दो आदमी और थे जो उन्हीं की पार्टी की ओ चुनाव लड़ रहे थे। जसवन्त को देखते ही उमाकान्त ने बादशा इशारा किया। वह भीड़ में पीछे छिप गया। उमाकान्त आगे बढ़ा

शान्तिप्रकाश कह रहे थे, "यहाँ की सभा तो चल निकली, अब कर उस दूसरी सभा का भी हालचाल ले लिया जाये। पार्टी उम्मीदवार का काम देखना है।"

उमाकान्त आगे बढ़कर शान्तिप्रकाश के सामने आ गया। न

करके कहा, "देखता हूँ, अब से मेयर होने के दिन तक आपको एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं है।"

वह मुहब्बत की हँसी हँसकर बोले, "और मैं देखता हूँ कि आपने मुझे अभी से मेयर बना दिया है। अरे भाई, अभी तो यह भी नहीं मालूम कि हमारी पार्टी मेयर के चुनाव के लिए अपना टिकट किसे देगी?"

उमाकान्त उनके पास आ गया। बोला, "पर मुझे मालूम है। पार्टी का टिकट श्री शान्तिप्रकाशजी को दिया जा रहा है।"

शान्तिप्रकाशजी की आँखें नकली आश्चर्य से फैल गयीं। वह इस तरह बोले जैसे शान्तिप्रकाश कोई तीसरे आदमी हों। कहने लगे, "भाई, अपनी पार्टी में उससे ज्यादा अच्छे दर्जनों आदमी मिल जायेंगे।"

"ऐसा है?" उमाकान्त ने कहा, "तो इसी बात पर अपना इण्टरव्यू दे दीजिए।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया भाई!" वह बोले, "पर बैठकर बात करने की अभी तो फ़ुरसत नहीं है।"

"पर सोचिए तो, आपका इण्टरव्यू अभी अखबारों में छपे तो ज्यादा फायदा होगा, या चुनाव के बाद?"

शान्तिप्रकाश चलते-चलते रुक गये। ठठाकर हँसते हुए बोले "बहुत सही प्वाइण्ट पकडा आपने। अच्छी बात है, समझ लीजिए कि इण्टरव्यू हो चुका। आप अपने मन से जो चाहें छाप दें। मेरी ओर से कोई उल्टी-सीधी बात आप थोडे ही कहेंगे।"

शान्तिप्रकाश दुबले-पतले खूबसूरत आदमी थे। चुनाव के अभियान में वे और भी दुबले हो गये थे। उमाकान्त ने आगे बढकर उनका फोटो ले लिया और कहा, "अब सिर्फ दो सवाल। पहला यह कि पिछले तीन हफ्तों में आपने कितना वजन खोया?"

वह फिर ठठाकर हँसे। बोले, "आप पूछिए कि कितना वजन हासिल किया। पार्टी के लिए कम-से-कम दो लाख वोटों का वजन हाथ लगा है!"

उनके साथ वाले भी हँसने लगे। उमाकान्त ने उनके पास जाकर, उन्हें एक किनारे खींचते हुए उनके कान में पूछा, "और दूसरा सवाल यह है कि आप सब-कुछ जानते हुए भी जसवन्त जैसे आदमी का साथ देते हैं। क्या आपको नहीं मालूम कि वह···"

शान्तिप्रकाश ने होठों पर उँगली रखकर उमाकान्त को चुप होने का

इशारा किया और उसके कान में कहा, "बस, बस। ये बातें चुनाव के बाद की हैं, फुरसत से कभी घर आइए तो बताऊँगा।" फिर उन्होंने भाषण जैसा देते हुए कहा, "आप तो जानते हैं, जिन्दगी में फूलों के साथ काँटों से भी निबाह करना पड़ता है।"

वे लोग तेजी से जीप की ओर बढ़ने लगे। उमाकान्त ने कहा, "क्या आपको..."

उन्होंने इशारे से मना करते हुए कहा, "नहीं उमाकान्तजी, आपके दो सवाल पूरे हो गये। अब तीसरा नहीं।"

"अच्छी बात है, पर एक छोटे..." उमाकान्त ने कैमरा आँख के पास ले जाकर क्लिक किया। शान्तिप्रकाश की मुसकान कुछ और चौड़ी हो गयी।

वे लोग जीप पर बैठकर चले गये। जसवन्त पीछे की सीट पर बैठा था, जीप जब आगे बढ़ गयी तो उसने उमाकान्त के साथ खड़े हुए बादशाह को देखा और अपने एक साथी से कुछ कहते हुए बादशाह की ओर इशारा किया।

सूरज डूबने वाला था। उमाकान्त ने बादशाह से कहा, "हम लोगों को अब यहाँ से अलग-अलग जाना होगा। मैं अपने फोटोग्राफ इसी वक्त धुलवाने जा रहा हूँ। इसी ओर से मैं मोहन स्टूडियो में रीलें देता हुआ निकल जाऊँगा। दस बजे तक वह तैयार कर देंगे। तुम दस बजे वहाँ से फोटो लेकर घर आ जाना। तब तक शायद रवीन्द्र भी आ जायेगा।"

बादशाह ने पूछा, "रवीन्द्र को बुला तो लिया है, पर उसकी जरूरत क्या है?"

उमाकान्त ने तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। रुककर बोला, "अभी मुझे खुद साफ नहीं मालूम। अभी मैं अँधेरे में ही चल रहा हूँ। दस बजे आना। जसवन्त के बारे में और भी कुछ मालूम हो सके, तो मालूम करते आना। और, उस रात उसकी जीप कहाँ गयी, इसकी इत्तला तो मिलनी ही चाहिए।"

दूसरे दिन सवेरे ही उमाकान्त स्कूटर लेकर घर से बाहर निकल गया। उसने एक बार रवी से मिलने की कोशिश की, पर जेल वालों ने बताया कि उस दिन मुलाकात नहीं हो सकेगी। वहाँ से वह हरिश्चन्द्र के घर गया और उससे उन रिश्तेदारों के बारे में बात करता रहा जिनके यहाँ अजीत-

सिंह पर हमला होने के बाद रूबी ने दो रातें बितायी थीं।

दिन बहुत गर्म हो गया था और लू चलने लगी थी। हरिश्चन्द्र ने जिद करके अपनी कार की चाभी उसे दे दी और कहा, "ऐसे मौसम में स्कूटर पर चलना ठीक नहीं है।"

पिछले दो-तीन दिनों में उमाकान्त ठीक तरह से सो नहीं पाया था और उसकी आँखों के नीचे कालिमा फैलने लगी थी। वह कोशिश करके अपने को समझाता रहा था कि वह बिल्कुल नहीं थका है, पर थकान धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी, इसलिए उसने अपना स्कूटर हरिश्चन्द्र के यहाँ ही छोड़ दिया और बाकी दिन उसकी कार पर चलता रहा। हरिश्चन्द्र ने भी उसके साथ चलना चाहा। पर उसने मना कर दिया।

लगभग तीन-चार घण्टे वह दूर-दूर बसे हुए मुहल्लों में जाकर नये-नये लोगों से मिलता रहा। वह जसवन्त के घर भी गया। वहाँ उसे मालूम हुआ कि वह तो सूरज निकलने के पहले ही कहीं चला गया है। वहाँ से चलकर सबसे नजदीक के पब्लिक कॉल आफिस से उसने बादशाह को फोन किया और कहा कि जसवन्त का पता चाहे जैसे हो, जल्द-से-जल्द लगाया जाना चाहिए। उसने बादशाह को पाँच बजे मुलाकात के लिए आने को भी कहा।

दो बजते-बजते वह आर्ट्स कालिज की ओर गया। रवीन्द्र वहीं शिक्षक था और उसका घर कालिज के पास ही था। इतवार का दिन होने के कारण कालिज बन्द था। वह सीधा रवीन्द्र के घर पहुँचा। रवीन्द्र उस समय अपने स्टूडियो में एक मेज पर कागज फैलाकर स्केचिंग कर रहा था। अपने काम में वह इस तरह खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कि उमाकान्त ने कब कमरे का दरवाजा खोला और कब उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। रवीन्द्र के सामने मेज पर चार आदमियों के फोटोग्राफ रखे थे। इनमें सभी प्रौढ़ अवस्था के लोग थे। ज्यादातर सभी की दाढ़ी-मूंछ साफ थी। पर तीन फोटो ऐसे भी थे जिनमें लोगों ने मूंछें रख छोड़ी थीं। किसी भी फोटो में कोई दाढ़ीवाला आदमी नहीं था।

दो फोटो मेज के एक ओर रखे थे। उनमें रवीन्द्र ने मुँडी हुई ठुड्डी पर अपनी स्केचिंग पेंसिल से निहायत खूबसूरत फ्रेंचकट दाढ़ी जोड़ दी थी। इस समय वह तीसरी तसवीर के चेहरे पर उसी तरह दाढ़ी जोड़ रहा था।

पीछे मुड़कर उमाकान्त को देखते ही वह मुसकराया। बोला, "आप कब से खड़े हैं, भाई साहब ?"

उमाकान्त ने कहा, "इधर से निकल रहा था। सोचा तुम्हारा काम खत्म हो गया हो तो तसवीरें लेता चलूं। पर आप तो अभी योग साधे हुए हैं। कितना टाइम लगेगा ?"

"कम-से-कम तीन घण्टे।" कहकर रवीन्द्र ने पेंसिल रख दी और कहा, "पर आइए, पहले हम लोग एक-एक प्याला कॉफी खींच लें।"

"नहीं, डियर। अभी नहीं। पहले तुम अपना काम खत्म कर लो। और कोशिश करना, पांच बजे तक हमारे यहां तसवीरें आ जरूर जायें।"

कहकर उमाकान्त सीधा अपने घर लौट आया। ढाई बज चुके थे। उसने पड़ोसवाले होटल को टेलीफोन करके गर्म सूप और आमलेट मँगाया। डबलरोटी घर पर ही पड़ी थी। हल्का खाना खाकर उसने अपने लिए कॉफी का प्याला रखकर, बिस्तर के सिरहाने से अपनी पीठ टिकाकर आराम से सिगरेट पीता रहा। उसके आसपास बिस्तर पर ही कुछ लिफाफे और कागज फैले हुए थे। थोड़ी देर बाद वह एक कागज लेकर पेंसिल से कुछ लिखने लगा। वास्तव में लिखा उसने बहुत कम। हाथ में पेंसिल लेकर वह काफी देर तक चुपचाप बैठा रहता और बाद में कागज पर एकाध शब्द लिख लेता।

कुछ देर में उसने घड़ी की ओर देखा। पांच बजनेवाले थे। उसने बादशाह को फोन मिलाया। उधर से जवाब मिला कि वह होटल छोड़कर अभी-अभी कहीं चला गया है। वह फिर कुछ देर के लिए अपने कागजों में खो गया। तभी बादशाह ने दरवाजा खोला। माथे का पसीना पोंछते हुए वह उमाकान्त के सामने आकर कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "कल वाले फोटोग्राफ मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ।"

उमाकान्त ने एक बड़ा लिफाफा उठाकर उसकी ओर बढ़ाया और कहा, "कल रात तुम उन्हें एक बार देख तो चुके ही हो। पर अभी मैंने तुम्हें फिर इसलिए बुलाया था, मैं खुद चाहता था, तुम एक बार इन्हें फिर से देख लो।"

बादशाह ने लिफाफे से कई फोटो निकाले और उन्हें एक-एक करके देखने लगा। ये वे ही फोटो थे जो कल शाम उमाकान्त ने पार्वती महिला आश्रम में और अमीनुद्दौला पार्क में खींचे थे। बादशाह ने एक बार सब फोटो देख डाले और फिर उन्हें दुबारा देखना शुरू किया। देखते-देखते वह पार्वती

महिला आश्रम की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट के फोटो को लेकर रुक गया। उसे वह काफी देर तक देखता रहा। कैमरे ने उसके चेहरे को एक ऐसी मुद्रा में पकड़ा था जिससे वह बहुत ही कम उम्र की मालूम देती थी। कोई सोच भी नहीं सकता था, वह चालीस साल की होगी। तसवीर में वह एक छरहरे बदन की पचीस साल की युवती जैसी दीखती थी।

बादशाह ने तसवीर से निगाह नहीं हटाई। धीरे से कहा, "उस्ताद, मलिना वाली वह तसवीर देना, वही तसवीर जिसमें वह अपने तीन तिलंगों के साथ खड़ी हुई है।"

उमाकान्त ने वह तसवीर निकालकर दे दी। बादशाह की प्रशंसा के लिए उसके चेहरे पर एक बहुत घरेलू मुसकान खेलने लगी। बोला, "इसे कहते हैं उस्तादों की नजर।"

बादशाह उन दोनों तसवीरों का मुकाबला करके देख रहा था। थोड़ी देर गौर से देख चुकने के बाद उसने उन्हें मेज पर रख दिया और कहा, "बड़ी भयंकर बात है, उस्ताद! इसका मतलब तो यह हुआ कि मलिना की लाश मिलने के पहले उसे कुछ दिन पार्वती महिला आश्रम में रखा गया था।" वह टकटकी बांधकर उमाकान्त को देख रहा था।

उमाकान्त ने एक सिगरेट जला ली थी। सिर हिलाते हुए उसने धीरे से कहा, "हाँ, यही जान पड़ता है। महिला आश्रम में दो तहखाने हैं। उनमें से एक में इस वक्त आश्रम का स्टोर है। दूसरे में लाइब्रेरी बनने जा रही है। लाइब्रेरी वाले तहखाने में जाते ही कल मुझे ऐसा लगा, किसी को छिपाने के लिए वह आदर्श जगह हो सकती है। आश्रम में रहनेवाली महिलाओं की डारमिटरी उस जगह से काफी दूर है। तहखाने में बिना हिचक के कुछ भी किया जा सकता है। बस वहाँ पहुँचते ही मुझे अपने मन में एक उलझन का अहसास हुआ था। इसे भाग्य की ही बात मानना चाहिए कि मलिना की फाइल देखकर और 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक पढ़कर मैं इस नतीजे पर पहुँचा था कि मुझे पार्वती महिला आश्रम को अन्दर से देखना चाहिए। वहाँ पहुँचते ही मुझे लगा कि यहाँ सब-कुछ ठीक नहीं है। आश्रम का खर्चा ज्यादातर चन्दे से चलता है। चन्दा देनेवालों की सूची देखकर मेरा शक और भी मजबूत हो गया।

"चन्दा देनेवालों में बहुत-से ऐसे हैं जिन्हें हम सभी शहर के मशहूर व्यभिचारियों में शुमार करते हैं। उन सभी के पास बेशुमार पैसा है। तहखाने में पहुँचते ही मुझे अचम्भा-सा हुआ। लगा, इस जगह को मैं जानता

पीछे मुड़कर उमाकान्त को देखते ही वह मुसकराया। बोला, "आप कब से खड़े हैं, भाई साहब ?"

उमाकान्त ने कहा, "इधर से निकल रहा था। सोचा तुम्हारा काम खत्म हो गया हो तो तसवीरें लेता चलूं। पर आप तो अभी योग साधे हुए हैं। कितना टाइम लगेगा ?"

"कम-से-कम तीन घण्टे।" कहकर रवीन्द्र ने पेंसिल रख दी और कहा, "पर आइए, पहले हम लोग एक-एक प्याला कॉफी खींच लें।"

"नहीं, डियर। अभी नहीं। पहले तुम अपना काम खत्म कर लो। और कोशिश करना, पाँच बजे तक हमारे यहाँ तसवीरें आ जरूर जायें।"

कहकर उमाकान्त सीधा अपने घर लौट आया। ढाई बज चुके थे। उसने पड़ोसवाले होटल को टेलीफोन करके गर्म सूप और आमलेट मँगाया। डबलरोटी घर पर ही पड़ी थी। हल्का खाना खाकर उसने अपने लिए कॉफी का प्याला रखकर, बिस्तर के सिरहाने से अपनी पीठ टिकाकर आराम से सिगरेट पीता रहा। उसके आसपास बिस्तर पर ही कुछ लिफाफे और कागज फैले हुए थे। थोड़ी देर बाद वह एक कागज लेकर पेंसिल से कुछ लिखने लगा। वास्तव में लिखा उसने बहुत कम। हाथ में पेंसिल लेकर वह काफी देर तक चुपचाप बैठा रहता और बाद में कागज पर एकाध शब्द लिख लेता।

कुछ देर में उसने घड़ी की ओर देखा। पांच बजनेवाले थे। उसने बादशाह को फोन मिलाया। उधर से जवाब मिला कि वह होटल छोड़कर अभी-अभी कहीं चला गया है। वह फिर कुछ देर के लिए अपने कागजों में खो गया। तभी बादशाह ने दरवाजा खोला। माथे का पसीना पोंछते हुए वह उमाकान्त के सामने आकर कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "कल वाले फोटोग्राफ मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ।"

उमाकान्त ने एक बड़ा लिफाफा उठाकर उसकी ओर बढ़ाया और कहा, "कल रात तुम उन्हें एक बार देख तो चुके ही हो। पर अभी मैंने तुम्हें फिर इसलिए बुलाया था, मैं खुद चाहता था, तुम एक बार इन्हें फिर से देख लो।"

बादशाह ने लिफाफे से कई फोटो निकाले और उन्हें एक-एक करके देखने लगा। ये वे ही फोटो थे जो कल शाम उमाकान्त ने पार्वती महिला आश्रम में और अमीनुद्दौला पार्क में खींचे थे। बादशाह ने एक बार सब फोटो देख डाले और फिर उन्हें दुबारा देखना शुरू किया। देखते-देखते वह पार्वती

महिला आश्रम की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट के फोटो को लेकर रुक गया। उसे वह काफी देर तक देखता रहा। कैमरे ने उसके चेहरे को एक ऐसी मुद्रा में पकड़ा था जिससे वह बहुत ही कम उम्र की मालूम देती थी। कोई सोच भी नहीं सकता था, वह चालीस साल की होगी। तसवीर में वह एक छरहरे बदन की पचीस साल की युवती जैसी दीखती थी।

बादशाह ने तसवीर से निगाह नहीं हटाई। धीरे से कहा, "उस्ताद, मलिना वाली वह तसवीर देना, वही तसवीर जिसमें वह अपने तीन तिलंगों के साथ खड़ी हुई है।"

उमाकान्त ने वह तसवीर निकालकर दे दी। बादशाह की प्रशंसा के लिए उसके चेहरे पर एक बहुत घरेलू मुसकान खेलने लगी। बोला, "इसे कहते हैं उस्तादों की नजर।"

बादशाह उन दोनों तसवीरों का मुकाबला करके देख रहा था। थोड़ी देर गौर से देख चुकने के बाद उसने उन्हें मेज पर रख दिया और कहा, "बड़ी मजेदार बात है, उस्ताद! इसका मतलब तो यह हुआ कि मलिना की लाश मिलने के पहले उसे कुछ दिन पार्वती महिला आश्रम में रखा गया था।" वह टकटकी बाँधकर उमाकान्त को देख रहा था।

उमाकान्त ने एक सिगरेट जला ली थी। सिर हिलाते हुए उसने धीरे से कहा, "हाँ, यही जान पड़ता है। महिला आश्रम में दो तहखाने हैं। उनमें से एक में इस वक्त आश्रम का स्टोर है। दूसरे में लाइब्रेरी बनने जा रही है। लाइब्रेरी वाले तहखाने में जाते ही कल मुझे ऐसा लगा, किसी को छिपाने के लिए वह आदर्श जगह हो सकती है। आश्रम में रहनेवाली महिलाओं की डारमिटरी उस जगह से काफी दूर है। तहखाने में बिना हिचक के कुछ भी किया जा सकता है। कल वहाँ पहुँचते ही मुझे अपने मन में एक उलझन का अहसास हुआ था। इसे भाग्य की ही बात मानना चाहिए कि मलिना की फाइल देखकर और 'जनक्रान्ति' के पुराने अंक पढ़कर मैं इस नतीजे पर पहुँचा था कि मुझे पार्वती महिला आश्रम को अन्दर से देखना चाहिए। वहाँ पहुँचते ही मुझे लगा कि यहाँ सब-कुछ ठीक नहीं है। आश्रम का खर्चा ज्यादातर चन्दे से चलता है। चन्दा देनेवालों की सूची देखकर मेरा शक और भी मजबूत हो गया।

"चन्दा देनेवालों में बहुत-से ऐसे हैं जिन्हें हम सभी शहर के मशहूर व्यभिचारियों में शुमार करते हैं। उन सभी के पास बेशुमार पैसा है। तहखाने में पहुँचते ही मुझे अचम्भा-सा हुआ। लगा, इस जगह को मैं जानता

हूँ। यह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसा मुझे पहली बार जसवन्त को देखकर लगा था। उसका चेहरा देखते ही मुझे जान पड़ा था कि मैंने उसे पहले कहीं देखा है, हालाँकि उस वक्त मुझे उसकी मूँछवाली तसवीर की याद नहीं आयी थी। इस तहखाने में भी मुझे वैसा ही जान पड़ा। पर लेडी सुपरिटेण्डेण्ट उस वक्त बराबर कुछ कहती जा रही थी इसलिए मैं ध्यान देकर सोच नहीं पा रहा था। पर यह हालत काफी देर नहीं रही। दरवाजे के पास जीने की पहली सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते मैं जान गया कि तहखाने वाले इस कमरे को मैंने पहले भी देखा है। वास्तव में सामने की दीवार पर नक्काशीदार दरवाजेवाली एक अलमारी है। उसी ने मेरे लिए सब-कुछ आसान कर दिया। यह अलमारी मलिना वाली इस फोटो में आ गयी है। उसे देखते ही मुझे याद आ गया, इस कमरे की तसवीर मैंने देखी है। तभी मैंने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को कमरे के बीच में खड़ा करके उसका फोटो इस ढंग से ले लिया कि अलमारी भी उसमें आ जाये।

"मैंने तुम्हें यह घटना जान-बूझकर नहीं बतायी थी। मैं देखना चाहता था कि दोनों तसवीरें देखकर तुम्हारी भी प्रतिक्रिया मेरी ही जैसी होती है या नहीं। अब तो बात साफ हो गयी है। मलिना वाली फोटो और लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट की यह फोटो—दोनों एक ही बैकग्राउण्ड में ली गयी हैं। मलिना की फोटो भी उसी तहखाने में ली गयी थी। ये तीनों आदमी उसके साथ उसी तहखाने में थे।"

कुछ देर दोनों चुपचाप बैठे रहे। आखिर में बादशाह ने कहा, "इस सबसे तो लगता है मलिना के मामले की जांच फिर से होनी चाहिए। हमें पुलिस को बताना होगा। मलिना के मामले में जसवन्त के खिलाफ इतना सबूत मिल चुका है···।"

"पर हम लोग इस वक्त मलिना के मामले की नहीं, अजीतसिंह की हत्या की छानबीन कर रहे हैं।"

बादशाह उमाकान्त को कुछ देर स्थिर निगाहों से देखता रहा। बोला, "इसका क्या मतलब है? क्या इसका कोई सम्बन्ध अजीतसिंह की हत्या से भी है?"

उमाकान्त आँखें सिकोड़कर कुछ सोच रहा था। धीरे-से बोला, "मैं नहीं जानता। सच तो यह है कि मैं नहीं जानता।"

तभी दरवाजा खोलकर रवीन्द्र अन्दर आया। उसने एक बड़ा-सा लिफाफा उमाकान्त को देते हुए कहा, "लीजिए, आपके स्केच तैयार हैं।"

उमाकान्त ने उसे बैठने के लिए भी नहीं कहा। हाथ में लिफ़ाफ़ा आते ही उसने तेजी से उसे खोला । कुल सात फोटोग्राफ थे । जैसे यह किसी छोटे स्कूली लड़कों का खेल हो, रवीन्द्र ने उन्हें बिगाड़ दिया था। हर तस्वीर के चेहरे पर उसने एक फ्रेंचकट दाढ़ी जोड़ दी थी। सब तसवीरों को ताश की तरह एक बार सरसरी तौर पर देख जाने के बाद उमाकान्त की निगाह एक तसवीर पर टिक गयी। बादशाह उसके सामने बैठा था। इसलिए वह तसवीरें तो नहीं देख पाया सिर्फ उमाकान्त के चेहरे को देखता रहा। थोड़ी देर बाद उसने पूछा, "कोई खास बात है, उस्ताद ?"

उमाकान्त ने सिर हिलाया भी या नहीं, कहना मुश्किल था। उसकी भौंहें सिकुड़ गयी थीं। बादशाह जानता था, ऐसे मौके पर उसे छेड़ा नहीं जा सकता। वह धीरे-से उठकर खिड़की के पास चला गया। वहाँ कमरे की ओर पीठ फेरकर रवीन्द्र चुपचाप सिगरेट पी रहा था और खिड़की के बाहर झुलसती हुई दुनिया को धुएँ के जाले के बावजूद एक कलाकार की निगाह से देखने की कोशिश कर रहा था। बादशाह ने भी उसी की बगल में खड़े होकर एक सिगरेट सुलगा ली।

एक हल्का-सा खटका हुआ। बादशाह ने देखा, उमाकान्त ने सातों तसवीरें बिस्तर पर लापरवाही से फेंक दी हैं। तसवीरें उलट-पुलट गयी थीं, पर उनमें तीन-चार के चेहरे ऊपर की ओर थे। उन पर एक-सी फ्रेंचकट दाढ़ी थी। उनमें से एक तसवीर खास तौर से बादशाह को घूरती हुई जान पड़ी। उसने उमाकान्त से कुछ कहने के लिए मुँह खोला, पर तब तक वह टेलीफोन की ओर बढ़कर कोई नम्बर मिलाने लगा था। बादशाह ने अपने होंठ दबा लिये। फिर साँस खींचकर वह चुपचाप पहले की तरह सिगरेट पीने लगा।

उन्नीस

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट विद्यानाथ के बँगले पर उस दिन साढ़े पाँच बजे शाम जब उमाकान्त का फोन आया, तब इंस्पेक्टर सिद्दीकी वहीं मौजूद था। विद्यानाथ ने फोन पर सारी बातें शान्ति के साथ सुनीं और कहा, "ठीक है, पुलिस फोर्स तुम्हारे घर पर पन्द्रह मिनट में पहुँच जायेगी।"

फोन का रिसीवर रखकर उन्होंने सिद्दीकी से कहा, "उमाकान्त का फोन था। मैंने तुम्हें पहले ही आगाह कर रखा है।" घण्टी बजाकर

न्होंने अर्दली को बुलाया और बोले, "कोतवाली से फोन मिलाओ।"
अर्दली जब तक फोन मिला रहा था, उन्होंने सिद्दीकी से कहा, "मैं भूप-सिंह को यहीं बुला रहा हूँ। वह तुम्हें लेकर सीधे उमाकान्त के घर जायेगा। उसके साथ तुम्हें दो-एक घरों में तलाशी लेनी होगी।"

इंस्पेक्टर भूपसिंह कोतवाली का इंचार्ज था। सिद्दीकी ने विनम्रता से कहा, "पर अजीतसिंह के मामले की जांच तो खत्म हो चुकी है। उसमें कोई नयी गुंजायश तो मालूम नहीं पड़ती।"

विद्यानाथ तब तक फोन पर भूपसिंह से बात करने लगे थे। उनकी बात बहुत जल्दी खत्म हो गयी। फोन रखने के पहले वह बोले, "ठीक है, मैं इन्तजार कर रहा हूँ। उम्मीद है सात मिनट में तुम यहाँ आ जाओगे।"
फोन रखकर सिद्दीकी की ओर देखा और बोला, "रूबी के खिलाफ जो सबूत मिला है, उसे तुम कैसा समझते हो?"

"कह नहीं सकता कि अदालत का क्या रुख होगा। पर हमने पूरी कोशिश की है।"

विद्यानाथ बोले, "हत्या करने का मोटिव (कारण) तो पूरी तरह साबित है। पर हत्या को साबित करने के लिए हमारे पास कुछ परिस्थि-तियाँ भर हैं। और जानते ही हो, परिस्थितियों के सबूत को लेकर कानून हमसे बड़ी जबर्दस्त मांग करता है।"

सिद्दीकी कुछ नहीं बोला।

विद्यानाथ कहते रहे, "तुमने बाद में हरीसिंह और मिस लायल क भी बयान लिया है। इससे रूबी के खिलाफ मुकदमे का एक नया पह लूनता है। इससे पता चलता है कि वार्ड में वह दुबारा आयी थी अ बुर्का डालकर आयी थी। पर इससे यह भी साबित होता है कि गर्द व लेने के पहले हमें सही घटना का पता नहीं था। उस हालत में हो स है कि सही घटना का हमें अब भी पता न हो।"

सिद्दीकी ने कहा, "सर, तभी तो अब तक हमने अपनी तफतीश नहीं की है।"

बंगले के बाहर एक जीप आकर रुकी। विद्यानाथ और सि कमरे से निकलकर बरामदे में आ गये। भूपसिंह जीप से उतर र पर विद्यानाथ ने आगे बढ़कर उसे रोक दिया। उसका सैल्यूट अ रह गया। थोड़ी देर वह उसे जीप के पास ही धीरे-धीरे कुछ रहे। फिर जीप सिद्दीकी को लेकर उमाकान्त के घर की ओर

जीप के मकान के सामने पहुँचते ही उमाकान्त और बादशाह बाहर निकल आये। आर्टिस्ट रवीन्द्र वहाँ से पहले ही जा चुका था। भूपसिंह और सिद्दीकी से अभिवादन करके उसने अपने दरवाजे पर ताला लगाया और जीप की आगेवाली सीट पर बैठ गया। भूपसिंह ड्राइव कर रहा था। उनके बीच में सिद्दीकी था। बादशाह पीछे सिपाहियों के साथ बैठा था। सिद्दीकी ने कहा, "इस वक्त आप हमारे बॉस हैं। हुक्म दीजिए, किधर चला जाये?"

उमाकान्त ने गम्भीरता से कहा, "हममें से कोई किसी का बॉस नहीं। हम दोनों ही गुलाम हैं। अपने-अपने ढंग से जनता की गुलामी कर रहे हैं, और इसी में हमारी इज्जत है।"

भूपसिंह अब कुछ नहीं बोला था। उमाकान्त उसके बारे में जानता था कि वह बहुत मुस्तैद और बेधड़क पुलिस आफिसर है। उसके बारे में मशहूर था कि वह एक खामोश मशीन की तरह काम करता है और जहाँ तक बने, अपने शब्द नहीं बरबाद करता। वह छह फुट से भी ज्यादा लम्बा था और उसके सुडौल बदन में चीते जैसी फुर्ती थी। उमाकान्त को बड़ी खुशी हुई कि विद्यानाथ ने भूपसिंह को उसके साथ के लिए भेजा है।

अब भूपसिंह ने पहली बार मुँह खोला। कहा, "आगे चलने के पहले यह ज्यादा अच्छा होगा कि आप समझा दें, हमें कहाँ जाना है और क्या करना है?"

उमाकान्त बोला, "अभी हम लोग जसवन्त के यहाँ जायेंगे। जसवन्त को आप जानते ही हैं। वह कार्पोरेटर बननेवाला है। हमें उसके घर की तलाशी लेनी होगी। मुझे शक है कि अजीतसिंह की ही नहीं, कुछ और हत्याओं का सबूत भी हमें उसके यहाँ मिल सकता है। अगर सबूत मिल गया तो उसे आप अपने-आप गिरफ्तार करेंगे। अगर जसवन्त घर पर न मिला तो हमें अभी तलाशी का ख्याल छोड़कर आगे बढ़ जाना होगा।"

"वहाँ से हम कहाँ चलेंगे?"

"इसके बारे में वहीं बता सकूँगा।"

भूपसिंह ने गम्भीरता से पूरी बात सुनी। सिर्फ सिर हिलाकर इशारा किया कि वह समझ गया है। जीप जसवन्त के मकान की ओर चल दी।

बाजार की भीड़-भाड़, रिक्शे और पैदल आदमियों की ठेलमठेल और खोमचेवालों के चक्रव्यूह को तोड़ती हुई पुलिस की जीप धीरे-धीरे ही आगे बढ़ पा रही थी। जसवन्त के मकान तक पहुँचते-पहुँचते आध घन्टा

लग गया। जीप वहाँ से लगभग सौ गज पहले ही रुक गयी।

उमाकान्त ने सिद्दीकी से कहा, "कृपया पता लगवा लें, जसवन्त घर पर है भी या नहीं।"

वह बोला, "मैं खुद देखता हूँ।"

सिद्दीकी गाड़ी से उतरकर जसवन्त के मकान की ओर चला गया। उमाकान्त ने भूपसिंह से कहा, "मैं आपको पहले ही आगाह कर देना चाहता हूँ, और साथ ही माफी माँग लेना चाहता हूँ। मैं यह पूरी कार्रवाई एक सन्देह पर कर रहा हूँ। बहुत मुमकिन है कि मेरा सन्देह गलत हो। उस हालत में आपकी मेहनत बेकार जायेगी, और हो सकता है, पुलिस को कुछ बदनामी भी सहनी पड़े। पर ज्यादा उम्मीद यही है कि मैं सही रास्ते पर चल रहा हूँ और..."

भूपसिंह ने संक्षेप में कहा, "मैं अपने सुपीरियर्स के हुक्म पर चल रहा हूँ, इतना मेरे लिए काफी है। नेकनामी-बदनामी से मेरा कोई सरोकार नहीं।"

थोड़ी देर में सिद्दीकी तेजी से बढ़ता हुआ वापस लौटा। उमाकान्त ने उसके बैठने के लिए जगह कर दी। सिद्दीकी ने कहा, "जसवन्त आज सुबह चार बजे ही घर से निकल गया है। वह अपने साथ दो अटेची-केस ले गया है। अभी तक वापस नहीं लौटा है और उसके घरवालों का ख्याल है कि वह शहर से बाहर कहीं गया है। पर उन्हें भी पता नहीं कि कहाँ।"

बादशाह ने सीट के पीछे से कहा, "मुझे पहले ही शुबहा था।" भूपसिंह ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। पूछा, "अब कहाँ जाना है?"

उमाकान्त ने कहा, "शान्तिप्रकाश जी के यहाँ जसवन्त आजकल उन्हीं की मदद से चुनाव लड़ रहा है और प्रायः उन्हीं के साथ रहता है। अजब नहीं कि वह उनके बँगले पर ही हो।"

शान्तिप्रकाश का बँगला वहाँ से लगभग चार मील पड़ता था और रास्ते में सड़क पर वैसी ही भीड़-भाड़ थी। वहाँ पहुँचते-पहुँचते उन लोगों को फिर आधा घण्टा लग गया। वे जब वहाँ पहुँचे तब सूरज डूब चुका था।

वहाँ भी उन्होंने जीप बँगले से पहले ही रोक दी। गाड़ी से नीचे उतरकर उमाकान्त ने भूपसिंह और सिद्दीकी से लगभग चार मिनट तक धीरे-धीरे बातें कीं। उनके साथ पुलिस के छह सिपाही थे। दो सिपाही दूर

ओर से चलकर बँगले के पीछे पहुँच गये। उन्हें हिदायत दी गयी थी कि वे बँगले के पिछवाड़े की ओर कड़ी निगाह रखें, और अगर कोई उधर से निकलता हुआ दिखायी दे तो उसे रोक लें। बाकी लोग सामने से बँगले के अन्दर पहुँच गये।

शान्तिप्रकाश उस समय सामने की बैठक में चार-पाँच आदमियों के साथ बैठे बात कर रहे थे। बातचीत का विषय शायद कार्पोरेशन का चुनाव ही था। कमरे में कूलर लगा हुआ था। काफी ठण्डक थी। वे काफी प्रसन्न दीख रहे थे। उमाकान्त, सिद्दीकी, बादशाह और पुलिस के सिपाही बैठक से लगे हुए दूसरे कमरे के सामने खड़े हो गये। उसके दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था, पर किवाड़ खुले हुए थे। भूपसिंह ने बैठक के सामने जाकर शान्तिप्रकाश को नमस्कार किया। उन्होंने बड़े उत्साह से उठकर कहा, "ओह, भूपसिंह जी! आइए-आइए, कैसे तकलीफ की।"

वह कमरे के अन्दर पहुँचकर धीरे-से बोला, "एक जरूरी काम है। एक मिनट के लिए बाहर आ जायें।" वे जैसे ही बाहर आये, भूपसिंह उन्हें साथ लेकर बगल के कमरे के पास चला आया। पुलिस को देखकर शान्तिप्रकाश अचकचाये। बोले, "कहिए क्या बात है?" अचानक उमाकान्त को एक ओर देखकर उनकी खुशी चेहरे पर लौट आयी। उन्होंने कहा, "और आप? आप यहाँ कहाँ? उधर बैठक में आइए।"

पर उमाकान्त ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ उनका हाथ मजबूती से पकड़कर सामने के दरवाजे का पर्दा उठाते हुए उन्हें अन्दर खींच लाया। यह कमरा घर के दफ्तर की तरह इस्तेमाल होता था और उसमें इस वक्त कोई न था। उनके साथ पुलिस-पार्टी के बाकी लोग भी कमरे के अन्दर आ गये। भूपसिंह ने कहा, "जसवन्त शायद आपके बँगले में छिपा हुआ है। हमें तलाशी लेनी है।"

"पर मेरा जसवन्त से क्या मतलब? यहाँ आप तलाशी कैसे ले सकते हैं?" उन्होंने जोर से कहा। पर दफ्तरवाले कमरे में शान्तिप्रकाश को उन लोगों से प्रतिवाद करने का मौका नहीं मिला। सिद्दीकी, भूपसिंह और उमाकान्त तब तक अन्दरवाले कमरे में पहुँच गये थे। शान्तिप्रकाश हाँफते हुए उन लोगों के पीछे-पीछे भागे। बोले, "उधर मत जाइए। उधर हमारा बेडरूम है। घर की स्त्रियाँ होंगी।"

बाहर के ड्राइंगरूम में बैठे हुए लोगों में कुछ कसमसाहट पैदा हो गयी थी। दो-एक लोग बाहर निकलकर बरामदे में आ गये थे। दो सिपाही

उनकी ओर बढ़ आये। उनमें से एक ने उन्हें धीरे-से ड्राइंगरूम की ओर खींच लिया और कहा, "आप लोग अभी बाहर न आयें। चुपचाप यहीं बैठे रहें। एक मुल्जिम की खोज की जा रही है। दस मिनट में आप जहाँ चाहें, जा सकेंगे।" लोग थोड़ी देर के लिए सन्नाटे में आ गये। फिर धीरे-धीरे उन्होंने आपस में बातें करनी शुरू कर दीं।

मकान के अन्दर शान्तिप्रकाश ने दुबारा आवाज दी, "उधर हमारा बेडरूम है। लेडीज होंगी। आप इस तरह अन्दर नहीं जा सकते।"

उमाकान्त ने अन्दर के कमरे का दरवाजा खोलते हुए अपने सिर को मोड़कर कहा, "आप झूठ बोल रहे हैं, शान्तिप्रकाश जी! आपके परिवार के सब लोग तो बहुत पहले नैनीताल जा चुके हैं। इस वक्त आप यहाँ अकेले रह रहे हैं।"

दरवाजा खोलते ही वह झिझककर पीछे हट आया। पर एक क्षण बाद ही उसने पूरा दरवाजा खोलकर भूपसिंह से कहा, "आप आगे चलिए।"

यह कमरा काफी बड़ा था और बेडरूम के रूप में इस्तेमाल होता था। कमरा नवीनतम ढंग से सजाया गया था। पर उन लोगों की निगाह सजावट पर नहीं गयी। सभी ने अन्दर घुसते ही सबसे पहले एक छरहरे बदन की औरत को देखा जो कमरे के दूसरे छोर पर ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी मेक-अप कर रही थी।

दरवाजा खुलते ही उन लोगों की परछाईं सामने के शीशे में पड़ी। औरत ने चौंककर पीछे देखा और इतने लोगों को एकसाथ बेडरूम में घुसते हुए देखकर वह अचानक खड़ी हो गयी।

औरत की उम्र का अन्दाजा लगाना मुश्किल था। पर वह तीस साल आसानी से पार कर गयी होगी। उसका गेहुँआ रंग था और आँखें बड़ी-बड़ी थीं। चेहरा तो सुन्दर था ही, पर उम्र के बावजूद उसके छरहरे शरीर का गठन बहुत ही आकर्षक था। इस वक्त उसके जिस्म पर सिर्फ एक झीनी-सी शमीज थी। उसने झपटकर बिस्तर पर पड़ा हुआ एक गाउन उठा लिया और अपने को उससे ढँक लिया। फिर वह घूमी। घबराकर उसने इन लोगों की तरफ देखा और कुछ बोलने के लिए मुँह खोला। तब तक भूपसिंह और सिद्दीकी उसके पास आ गये थे। भूपसिंह ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है?"

पीछे से शान्तिप्रकाश ने कड़ी आवाज में कहा, "मिस्टर भूपसिंह, उसे परेशान मत कीजिए। वह हमारे एक दोस्त की लड़की है। आज ही दिल्ली

गे आयी है।"

उन्होंने चीखना शुरू कर दिया, 'इस वक्त आप हमारे विरोधियों से मिलकर हमें ज़लील कर रहे हैं। पर याद रखिए, कानून सबके लिये बराबर है। आपसे मैं इसका पूरा-पूरा बदला लूंगा।"

दो सिपाहियों ने उन्हें मजबूती से पकड़ रखा था। वह आगे बढ़ना चाहते थे, पर तिलमिलाते हुए अपनी जगह खड़े रहे। भूपसिंह के सवाल से वह औरत और भी घबरा गयी थी। उसने पहले की तरह ही अपना सवाल दोहराया। पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

तब तक उमाकान्त उनके पास आ गया था। उसने भूपसिंह से कहा, 'मैं बताता हूँ। इसका नाम कुमारी वीणा गहलौत है। यह यहाँ पार्वती महिलाश्रम की सुपरिण्टेण्डेण्ट है।"

वीणा के कुछ बोलने से पहले ही उसने कहा, "गुड ईवनिंग, मिस गहलौत ! आपसे इस खूबसूरत बेडरूम में मिलकर बड़ी खुशी हुई। यकीन मानिए, मैं आपसे कुछ ऐसी ही जगह मिलने का ख्वाब देख रहा था।"

लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने नफरत के साथ कहा, "तुम ! तुम पुलिस के साथ हो ?"

"जी हाँ, मैडम, जिस तरह आप हत्यारों के साथ हैं।"

उसके जवाब देने से पहले ही उमाकान्त ने भूपसिंह से कहा, "इन्हें यहीं रोकिये। इनसे बहुत बातें करनी हैं। तब तक हम लोग दूसरे कमरों की तलाशी ले लें। "मिट्ठीकी साहब," उसने पीछे खड़े हुए मिट्ठीकी से घूमकर कहा, "तब तक आप इनसे बातचीत कीजिए। पहले शायद यह अजीत सिंह के बेडरूम में जाकर कपड़े बदलती थीं। आपको इनमें काफी दिलचस्पी होनी चाहिए।"

कहकर वह भूपसिंह के साथ आगे बढ़ गया। उसी कमरे से मिला हुआ एक दूसरा बेडरूम था। उसके अन्दर जाते-जाते भूपसिंह ने पुकारकर कहा, "शान्तिप्रकाश जी, आप हमारे साथ आइए।"

शान्तिप्रकाश के मुँह से बेतहाशा कड़ी बातें निकल रही थीं। वह उनके पीछे-पीछे दूसरे बेडरूम में आये और बोले, "अब तो आपने देख लिया। यहाँ जमवाड़ा यहीं नहीं है। मेरे चुनाव को चौपट कर देने के लिए इतनी बेइज्जती बहुत है। अब आप लोग बाहर निकल जाइए।"

तब तक इस बेडरूम में दीवार में लगी हुई एक बड़े-से वार्डरोब का दरवाजा उमाकान्त ने खोल दिया था। उसमें शान्तिप्रकाश के कपड़े

टँगे थे। नीचे के एक खाने में उनके जूते और चप्पलें रखी थीं। उमाकान्त एक-एक चीज की पैनी निगाह से देख रहा था। अचानक उसकी निगाह जूतोंवाले खाने पर आकर स्थिर हो गयी। उसने मुड़कर भूपसिंह को पुकारा और कहा, "उन चप्पलों को आप देख रहे हैं ? उन्हें बाहर निकाल लीजिए।"

वार्डरोब में सभी मर्दाने कपड़ों, जूतों, चप्पलों आदि के बीच ये जनानी चप्पलें सुनहरे काम की थीं और दूर से ही झलक रही थीं। उनकी ओर और उमाकान्त की ओर घूरते हुए, शान्तिप्रकाश ने कड़ककर कहा, "खबरदार, मेरे वार्डरोब में हाथ न लगाइए।"

पर तब तक चप्पलें बाहर निकाल ली गयी थीं। उमाकान्त ने उन्हें अपने हाथ में लेकर ध्यान से उलटा-पलटा फिर उन्हें शान्तिप्रकाश के पास ले गया। उनकी आँखों से लगभग एक फुट की दूरी पर उन्हें हवा में हिलाते हुए उसने गम्भीरता से पूछा, "आप खुद बता दें तो ज्यादा अच्छा होगा। नहीं तो कहिए, मैं ही बताऊँ ये चप्पलें कब और कहाँ से आयी हैं।"

शान्तिप्रकाश का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने अपना होंठ काटते हुए कहा, "ये वीणा की चप्पलें हैं!"

उमाकान्त ने बगल के कमरे में पुकारकर कहा, 'सिद्दीकी साहब, मिस गहलौत को लेकर जरा यहाँ आ जाइए।"

थोड़ी देर में घबराई हुई कुमारी वीणा गहलौत, लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट, पार्वती महिलाश्रम, दाखिल हुई। तब तक शान्तिप्रकाश अपने विस्तर के पास पड़ी हुई एक आरामकुर्सी पर बैठ गये थे। कमरे का पंखा चला दिया गया था। पर उनके माथे पर पसीना छलक रहा था। उमाकान्त और सिद्दीकी उनके सामने खड़े हुए थे। बादशाह कुछ दूर हटकर वार्डरोब में रखे हुए कपड़ों का निरीक्षण कर रहा था। दो कान्स्टेबल शान्तिप्रकाश के पीछे खड़े हुए थे।

उमाकान्त ने वीणा से कहा, "मिस गहलौत, यह आपकी चप्पल है ?"

पर इसका जवाब शान्तिप्रकाश ने दिया, "हाँ, मैं कह तो चुका हूँ। यह इन्हीं की हैं।"

वीणा ने घबराई हुई निगाह से शान्तिप्रकाश को देखा। फिर बहुत धीरे-से बोली, "हाँ, मेरी ही हैं।"

उमाकान्त ने वे चप्पलें वीणा के सामने रख दीं। कहा, "इन्हें पहन-कर दिखाइए।"

उसने हिचकते-हिचकते एक चप्पल में अपना पैर डाला। वह उसके पांव से लगभग आधे इंच से ज्यादा बड़ी थी और पांव में बुरी तरह ढीली लग रही थी।

उमाकान्त ने चप्पल खींच ली। बोला, "आप अब भी कहेंगी कि ये चप्पलें आपकी हैं?"

वीणा ने इसके जवाब में मुंह दूसरी ओर फेर लिया। वह अपने गाउन का किनारा दोनों हाथों में इस तरह खींच रही थी जैसे उसे फाड़ डालना चाहती हो।

उमाकान्त ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह चप्पलों को शान्तिप्रकाश के पास ले आया और ठण्डे सुरों में बोला, "अब आप क्या कहते हैं?"

"यही कि ये चप्पलें वीणा की ही हैं।"

वार्डरोब के पास से तब तक बादशाह ने कहा, "और यह बुर्का भी वीणा का ही है?"

"भूपसिंह उछलकर वार्डरोब के पास आ गया। बादशाह अपनी उंगली एक काले कपड़े के उस हिस्से की ओर दिखा रहा था जिसे एक ब्रीफकेस के नीचे दबा हुआ देखा जा सकता था। भूपसिंह ने हाथ बढ़ाकर उसे बाहर खींच लिया। वह सचमुच ही एक बुर्का था। उमाकान्त ने बुर्के की ओर एक निगाह डाली और कहा, "शान्तिप्रकाश जी, अब यही अच्छा होगा कि आप साफ-साफ बता दें।"

शान्तिप्रकाश ने गरजकर कहा, "मुझे फंसाया जा रहा है। मैं एक-एक से बदला लूंगा।" उन्होंने कुर्सी से उठने की कोशिश की। पर अचानक ही उनका जोश ठण्डा हो गया। तब तक सिद्दीकी आगे बढ़ आया था। उसने कहा, "जितना जी चाहे, बदला ले लीजिएगा। पर अभी तो बताइए, यह बुर्का कैसा है, किसका है?"

शान्तिप्रकाश सिर झुकाये बैठे रहे। अचानक उन्होंने कहा, "बता रहा हूं। यह बुर्का वीणा का है।"

पर उनके मुंह से बात निकली भी न थी कि वीणा उछलकर सामने आ गयी। उसने शान्तिप्रकाश को झकझोरकर कहा, "झूठे! बेईमान!"

"नहीं, नहीं, नहीं," उमाकान्त ने लगभग पुचकारते हुए उसे शान्तिप्रकाश से दूर खींच लिया, "अच्छे बच्चे मुंह से गन्दी बात नहीं निकालते।"

गुस्से के मारे वीणा का चेहरा जैसे फटा जा रहा हो। उसने शान्तिप्रकाश की ओर जलती हुई आंखों से देखा और बोली, "इसी ने मुझे इस बुर्के और चप्पलों के लिए फोन किया था। ये दोनों चीजें हमारे आश्रम की एक लड़की की हैं। उसका नाम आयशा है। इसने मुझे फोन करके ये चीजें मँगवायी थीं। इसने आश्रम के फाटक पर खुद जाकर इनका बण्डल लिया था।" उसने फिर पहले की तरह चीखकर कहा, "और अब मुझे ही फँसाना चाहता है! कहता है कि ये चीजें मेरी हैं; झूठा!"

उमाकान्त ने उसे खींचकर सीधा खड़ा किया। पहले ही की तरह पुचकारते हुए कहा, "नहीं-नहीं, मिस गहलौत! अपने पर इस तरह काबू मत खोइए। आपसे हमें बहुत बातें करनी हैं।"

उसने उसे एक सिपाही की ओर धकेल दिया और कहा, "इन्हें काबू में रखो।"

सिद्दीकी शान्तिप्रकाश से कह रहा था, "तो बताइए, महिला आश्रम से बुर्का और चप्पलें लेकर आप किधर गये थे?"

"मैं बताता हूँ," कहकर उमाकान्त उन दोनों के बीच में आ गया। एक स्टूल खींचकर वह उस पर बैठ गया और धीरे-धीरे कहने लगा, "सुनिए शान्तिप्रकाश जी, कुसूर मिस गहलौत का नहीं है। उस पर नाराज मत होइए। उन्होंने आपको धोखा नहीं दिया है। धोखा तो किसी और ने ही दिया है।"

वह आरामकुर्सी पर मुर्दे-जैसे लुढ़के पड़े थे। उन्होंने अपनी आंखें उमाकान्त की ओर उठायीं। वह कहता रहा, "आपको इन गोरे-गोरे पांवों ने धोखा दिया है।" उसने शान्तिप्रकाश के औरतों जैसे खूबसूरत पांवों की ओर इशारा किया, "और इन चप्पलों ने धोखा दिया है।" उसने चप्पलों के जोड़े को एक बार फिर हवा में हिलाया, "और सबसे बड़ा धोखा आपको उस खत ने दिया है।" कहकर उसने अपनी निगाह शान्तिप्रकाश के चेहरे पर गड़ा दी।

इस बार शान्तिप्रकाश घबराकर कुर्सी पर आगे बढ़ आये। बोले, "कैसा खत?"

"वही खत," उमाकान्त ने निहायत चिकनी आवाज में कहा, "जो उस वक्त आपके पास था। अजीतसिंह के बिस्तर के पास शीशी निकालते वक्त वह खत आपके पास से वहीं सर्जिकल वार्ड में गिर गया था। आपको शायद पता नहीं।" उसने सिद्दीकी की ओर इशारा करके कहा, "वह

खत इस समय इंस्पेक्टर सिद्दीकी के पास है।"

शान्तिप्रकाश के चेहरे से पसीने की धारें छूट रही थीं। पर आवाज की बची-खुची कड़ाई को समेटकर उन्होंने जोर से कहा, "आप झूठ बोल रहे हैं। उस वक्त मेरी जेब में कोई खत नहीं था।"

बात पूरी होते-होते भूपसिंह ने उनकी कलाई मजबूती से पकड़ ली। सिद्दीकी बाज की तरह झपटकर उनके आगे आ गया और तेजी से बोला, "उस वक्त ? आपने 'उस वक्त' कहा है। शान्तिप्रकाश जी, आपने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया है। अब यह भी बताइए, उस वक्त आपने अजीतसिंह को जहर कैसे दिया था ? और क्यों ? बताइए, शान्ति-प्रकाश जी।"

उन्होंने एक बार जोर लगाकर कुर्सी से उठने की कोशिश की, पर उन्हें मिस वीणा गहलोत, उमाकान्त, भूपसिंह, सिद्दीकी—सभी के चेहरे हवा में तैरते-से जान पड़े। वह कुर्सी पर ढीले होकर गिर गये। उनकी आँखें मुँद गयीं।

उमाकान्त ने कमरे की खामोशी तोड़ते हुए कहा, "सिद्दीकी साहब, अब आप अपनी कानूनी कार्रवाई पूरी कीजिए। मैं मिस गहलोत से तब तक पड़ोस के कमरे में कुछ बातें करूँगा !"

बीस

उसी रात लगभग दस बजे उमाकान्त सी० आई० डी० के सुपरिण्टेण्डेण्ट विद्यानाथ के बँगले पर बैठा हुआ था। विद्यानाथ के अलावा वहाँ उसके साथ इन्स्पेक्टर सिद्दीकी भी मौजूद था। वे लोग लॉन में बैठे थे। एक शेडदार टेबुल-लैम्प उनसे कुछ दूरी पर जल रहा था। पास ही में एक पेडस्टल फैन घूम-घूमकर उन तीनों की कुर्सियों पर हवा फेंक रहा था। हवा में अब ठण्डक आ गयी थी।

सड़क पर रह-रहकर कोई कार या स्कूटर-रिक्शा लाउडस्पीकर पर चुनाव का प्रचार करता हुआ निकल जाता था। शान्तिप्रकाश के विरोधी अपने प्रचार में इस समय खास तौर से उनकी गिरफ्तारी का विवरण शामिल करके पूरे शहर को इस घटना की जानकारी दिये दे रहे थे।

उमाकान्त सिद्दीकी से कह रहा था, "आप ठीक कहते हैं। पर मेरा मंशा जसवन्त के घर की तलाशी लेने का नहीं था। मैं तो सिर्फ इतना

चाहता था कि वह आप लोगों को देखकर घबरा जाये। फिर मैं उसे अपने साथ लेकर शान्तिप्रकाश के बँगले की तलाशी के समय उसका इस्तेमाल करना चाहता था। मेरा ख्याल था कि उस वक्त घबराहट में वह जरूर कोई न कोई ऐसी बात कहेगा जो आपके मतलब की होगी। वैसे ही जैसे वीणा गहलोत ने वहाँ घबराहट में यह बता दिया कि बुर्का और चप्पलें उसी ने सप्लाई की थीं।"

एक नौकर ट्रे में कोकाकोला के गिलास ले आया। विद्यानाथ ने कहा, "अब हमें शुरू से बताइए, शान्तिप्रकाश तक आप किस तरह पहुँच सके?"

उमाकान्त की निगाह लॉन के उस पार फाटक की ओर थी। उसने कहा, "अगर आप फुरसत से सुनना चाहते हैं तो मेरे एक दोस्त को भी यहाँ बुला लीजिए। वह बाहर मेरा इन्तजार कर रहा है। उसका नाम बादशाह है। इस जाँच में बराबर वह मेरे साथ रहा है।"

विद्यानाथ ने खुद उठकर जाना चाहा, तब तक सिद्दीकी खड़ा हो गया था। बोला, "सर, यह बादशाह भी बड़े काम का आदमी है। मैं बुलाये लाता हूँ।" वह फाटक की ओर चला गया।

विद्यानाथ ने पूछा, "करता क्या है?"

"मि० बादशाह एक होटल के मालिक हैं।"

विद्यानाथ ने कुछ सोचकर कहा, "ओह! आपका मतलब श्री चार सौ बीस से है। तो वही आपके दोस्त हैं···!"

तब तक बादशाह बड़े सहज ढंग से सिद्दीकी के साथ उनकी ओर आता दीख पड़ा। पास आकर उसने विद्यानाथ को नमस्कार किया और इतमीनान से एक कुर्सी पर बैठ गया। लगा, वह हमेशा ऐसे ही लोगों के साथ उठता-बैठता रहा है।

सबों के हाथ में जब कोकाकोला आ गया तब सिद्दीकी ने कहा, "आपके कुछ और कहने के पहले जसवन्त की बात खत्म कर ली जाये। हमारे आदमी भी थाने की पुलिस के साथ उसके पीछे लगे हुए हैं। उनका ख्याल है कि वह कहीं शहर ही में छिपा है। हमें यकीन है कि हम उसे बहुत जल्द खोज लेंगे।"

उमाकान्त ने कहा, "हाँ, इसकी बहुत जरूरत है।" उसने विद्यानाथ की ओर रुख करके कहना शुरू किया, "शान्तिप्रकाश के खिलाफ अजीतसिंह की हत्या ही नहीं, मलिना की हत्या का भी आरोप लग सकता है। और मुझे

कि उसमें जगवन्त का भी हाथ रहा है।"

विद्यानाथ ने सिद्दीकी की ओर देखा। उसने कहा, "हम पूरी कोशिश कर रहे हैं, सर!"

उमाकान्त कुर्सी पर कुछ और फैलकर बैठ गया। विद्यानाथ ने कहा, "मैं इन्तजार कर रहा हूँ। अब हमारे महान जासूस को बताना चाहिए, शान्तिप्रकाश को उन्होंने कैसे पकड़ा?"

उमाकान्त ने कहा, "अजीतसिंह के मामले में एक बात मेरे दिमाग में शुरू से ही स्पष्ट थी। बाद में सी० आई० डी० ने भी इसका महत्त्व समझा था। वह यह कि अजीतसिंह को जहर देने की योजना बहुत पहले से नहीं बन सकती थी। हरिश्चन्द्र की गोली खाकर जब उसे अस्पताल लाया गया तब सबको यही लगा था कि वह मर रहा है। लगभग पौने आठ बजे शाम को उसे अस्पताल में आपरेशन-टेबुल पर रखा गया। नौ बजे जब उसे आपरेशन थिएटर से सर्जिकल-वार्ड में लाया गया तो उस वक्त वह बेहोश था। पर आपरेशन के बाद डाक्टरों को उम्मीद हो गयी कि वह बच जायेगा। इसलिए जहर देने की बात नौ बजे के बाद ही सोची गयी होगी।

"अजीतसिंह को सवा ग्यारह बजे कुछ होश आया। साढ़े ग्यारह बजे से वह नींद और बेहोशी की मिली-जुली हालत में डूब गया। फिर उसकी वह नींद खत्म नहीं हुई। दूसरे दिन सवेरे आठ बजे तक वह मर गया। डाक्टरों का ख्याल है, उसे जिस प्रकार का जहर दिया गया था उससे उसकी मृत्यु आठ-नौ घण्टे में होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि उसे बारह बजे के आसपास जहर दिया गया। यही नहीं, आपरेशन के बाद जब तक उसे होश नहीं आया, कोई भी बाहरी आदमी उसे देखने नहीं गया। जाहिर है कि, जब तक अस्पताल के ही किसी आदमी ने उसे जहर न दिया हो, उसे होश में आने के बाद यानी सवा ग्यारह बजे के बाद ही जहर दिया गया था।

"पर जहर देने का सवाल उठा कैसे? यह सवाल तभी उठा जबकि आपरेशन के बाद किसी को यह मालूम हुआ कि अजीतसिंह गोली-काण्ड के बावजूद बच जायेगा। तभी उसके किसी दुश्मन ने सोचा होगा कि उसे इसी वक्त जहर देकर खत्म कर दिया जाये। इसलिए जरूरी था कि नौ बजे के बाद, अजीतसिंह जिस वक्त आपरेशन थिएटर से हटाया गया उस वक्त अस्पताल में जो बाहरी लोग मौजूद थे, उन्हीं के बीच से

या उनकी मार्फत हत्यारे का पता लगाया जाये। उन्हीं में से किसी ने नौ और बारह बजे के बीच अजीतसिंह को जहर देने की व्यवस्था की होगी या उसके किसी ऐसे दुश्मन को अजीतसिंह की हालत बतायी होगी जो उसी रात उसे खुद जहर दे सके, या किसी से दिला सके।

"अस्पताल के स्टाफ पर मुझे ज्यादा सन्देह नहीं था। इस तरह की हत्याओं में सबसे पहले स्टाफ पर ही शुबहा होता है। ज़्यादातर स्टाफ का कोई भी आदमी इस तरह के अपराधों में जल्दी-जल्दी शामिल नहीं होना चाहता। दूसरी बात यह थी कि अस्पताल के स्टाफ में किसी का अजीतसिंह से ऐसा सम्बन्ध नहीं था कि वह उसे जहर देना चाहता। समय इतना कम था कि सिर्फ दो-तीन घण्टों में कोई बाहरी आदमी अस्पताल के स्टाफ को रुपये या किसी दूसरे प्रकार का लालच देकर उनके द्वारा अजीतसिंह को जहर दिला देता, इसकी भी बहुत कम सम्भावना थी। इसीलिए मैंने बाहरी आदमियों पर ही ज्यादा ध्यान दिया और बाहरी आदमियों में जसवन्त पर मेरा ध्यान विशेष रूप से गया। उसका अजीतसिंह से काफी पुराना सम्बन्ध था और इस वजह से वह अस्पताल में काफी देर मौजूद रहा था।

"रूबी के साथ अजीतसिंह के जैसे सम्बन्ध थे, उससे साफ जाहिर हो चुका था कि अजीतसिंह वास्तव में पत्रकार नहीं था। उसका असली पेशा लोगों को ब्लैकमेल करना था। सी० आई० डी० ने उसके घर से जो तस्वीरें बरामद की थीं उनसे भी इस बात की पुष्टि होती थी। यह भी मालूम हो गया था कि ब्लैकमेल करने के लिए वह तसवीरों का इस्तेमाल करता था।

"जहाँ तक रूबी का सम्बन्ध है, मैं उसे शुरू से ही निर्दोष समझ रहा था। एक तो इसलिए कि गोलीकाण्ड के बाद वह अपने एक रिश्तेदार के साथ चली गयी थी और फिर बराबर उसी के साथ रही। उसे यह मौका ही नहीं मिल सकता था कि वह जहर देने का इन्तजाम कर सके। दूसरे, उस रात अजीतसिंह के घर की तलाशी अगर उसके हत्यारे ने ली हो तो रूबी नहीं ले सकती थी। अजीतसिंह के पास उसका जो फोटो था उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी कि रूबी पर कोई लांछन लगा सके। फोटो में सिर्फ रत्ना और रूबी के साथ एक लड़का है, इतने से ही रूबी के खिलाफ कोई बात साबित नहीं होती। इसलिए अजीतसिंह के जिन्दा रहते हुए रूबी भले ही उस फोटो को उससे वापस ले लेना चाहती हो, उसके मर

बाद रूबी रात के वक्त फोटो के लिए उसके घर की तलाशी ले सकती थी। फिर, यदि उसने तलाशी ली भी होती तो कोई जरूरी नहीं कि वह अपने ही दिये हुए आठ हजार रुपये वहाँ से न ले आती।

"तलाशी जिस किसी ने भी ली हो, यह स्पष्ट था कि अजीतसिंह के पास उसे नुकसान पहुँचाने का कोई खतरनाक सबूत मौजूद रहा होगा। साथ ही तलाशी लेनेवाला इतना अमीर भी होगा कि उस सबूत के अलावा उसे अजीतसिंह के घर में आठ हजार रुपये लेने का बिल्कुल लालच नहीं हुआ। मेरी समझ में यह बातें रूबी पर लागू नहीं होती थीं। मैंने एकदम से यह भी नहीं माना था कि जसवन्त और अजीतसिंह का सम्बन्ध दोस्ती ही का था। रूबी से उसका प्रेम-सम्बन्ध माना जाता था, पर वहाँ दुश्मनी निकली। वही बात जसवन्त के साथ भी हो सकती थी। हमें पता चला कि जसवन्त अस्पताल से शान्तिप्रकाश के घर होता हुआ दो राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के घर गया और फिर अपने घर वापस चला गया। बाद में बादशाह की छानबीन से हमें यह भी मालूम हुआ कि जिस जीप पर जसवन्त अस्पताल आया था, वह शान्तिप्रकाश की थी। वह जीप उसके पास लगभग दस बजे तक रही। बाद में उसे घर पर छोड़कर शान्तिप्रकाश के यहाँ वापस चली आयी। बादशाह की खोज में यह भी पता लगा कि बँगले पर जीप खड़ी करके ड्राइवर खाना खाने जाने लगा तब शान्तिप्रकाश ने उसकी चाभी ले ली थी और ड्राइवर के वहाँ से जाते-जाते शान्तिप्रकाश खुद कहीं को रवाना हो गये थे।

"शान्तिप्रकाश के अलावा जिन दो आदमियों के घर जसवन्त उस रात को गया था, उनमें एक धोबी और एक घोसी था। वे सीधे-सादे और बेपढ़े-लिखे लोग हैं, पर वे अपनी बिरादरी के चौधरी हैं। जसवन्त उनके पास उनकी बिरादरी के वोट माँगने गया था। उनका हत्या से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता था। किस्मत से मुझे अजीतसिंह के एक सन्दूक में, जो कि 'जनशान्ति' प्रेस में रखा हुआ था, मलिनावाली दो फोटो मिलीं। उनसे दो बातें साबित हुईं। एक तो यह कि मलिना जिस पोशाक में मरी हुई पायी गयी थी उसी पोशाक में वह जसवन्त और दो दूसरे आदमियों के साथ मौजूद थी। जाहिर है कि वह फोटो मलिना के मरने के बहुत पहले का नहीं है। पर यह फोटो अजीतसिंह के पास से बरामद हुआ था। इससे मुझे लगा कि यह फोटो अजीतसिंह के ब्लैकमेल का हथियार हो सकता है।

पार्वती महिला आश्रम के तहखाने को देख चुकने के बाद जब मुझे ने हुआ कि वह फोटो वहाँ लिया गया था, तब यह स्पष्ट हो गया कि मलि की रहस्य को लेकर इस फोटो का बहुत महत्त्व है और इसमें जिन आदमियों गी तसवीर है, वे अपना रहस्य छिपाने के लिए अजीतसिंह की हत्या तक कर सकते हैं।

"यह स्पष्ट है कि इसके सहारे अजीतसिंह जसवन्त को तथा उस तसवीर में मौजूद दो दूसरे आदमियों को बराबर ब्लैकमेल कर सकता था। उस तसवीर से वह साबित कर सकता था कि वे लोग मलिना के पास शराब के नशे की हालत में मौजूद थे। यही नहीं, उस तसवीर से यह भी प्रमाणित होता है कि उन लोगों ने मलिना को उस पोशाक में देखा था जिसमें वह बाद में मरी हुई पायी गयी थी। मुझे इस बात का भी प्रमाण मिला कि मलिनावाले मामले को लेकर अजीतसिंह शहर के कुछ रईसों को ब्लैकमेल करता रहा है। जिस वक्त मलिना गायब हुई थी, उसने पार्वती महिला आश्रम का नाम दिये बिना उस संस्था के खिलाफ एक सम्पादकीय लिखा था और सी० आई० डी० को बताया भी था कि वह संस्था व्यभिचारियों का अड्डा है। उसी के बाद पुलिस ने उस संस्था पर छापा मारा था।

"मलिना की मृत्यु के बाद भी वह उस संस्था का नाम दिये बिना उसके खिलाफ सम्पादकीय लिखता और धमकाता रहा कि वह शहर के बड़े-बड़े रईसों के खिलाफ उचित समय पर प्रमाण दे सकता है। उसके बाद ही वे सम्पादकीय बन्द हो गये और शहर के कुछ रईसों के सचित्र विवरण उसके अखबार में छपे। यह सब ब्लैकमेल की कार्रवाई थी। सी० आई० डी० को मलिना के प्रसंग में उसने जिस तरह पार्वती महिला आश्रम के पीछे लगाया था, उससे मुझे सन्देह हुआ कि अजीतसिंह को यह मालूम था कि मलिना पार्वती महिला आश्रम में कुछ समय तक छिपाकर रखी गयी थी। उससे यह भी साफ था कि उस तसवीर में जो आदमी मलिना के साथ मौजूद हैं उनका सम्बन्ध भी पार्वती महिला आश्रम से होना चाहिए।

"उनमें से एक आदमी, जो सिन्धी व्यापारी था, मर चुका है। एक जसवन्त था। मुझे अब तीसरे आदमी का पता लगाना था। अतः मैंने उस शक्ल के आदमी की तलाश आश्रम के कार्यकर्त्ताओं और दूसरे समाज-सेवियों में करनी शुरू की। मुझे शक था कि अजीतसिंह ने ब्लैकमेल

करके उसमें कुछ-न-कुछ रहस्य जरूर ऐंठा होगा और बहुत मुमकिन था कि यह उन आदमियों में से हो जिनके सचित्र जीवन-चरित्र उसने अपने अखबार में छापे थे। अतः जितने समाज-सेवियों के चित्र उसने उस सिरीज में छापे थे, उनका मैंने मलिना की फोटो के दाढ़ीवाले आदमी से मुकाबला किया। अजीतसिंह ने जो फोटो छापा था उनमें से किसी के भी दाढ़ी नहीं थी। इसलिए पहले मुझे उस दाढ़ीवाले आदमी का पता नहीं चला। पर बाद में मैंने देखा कि जसवन्त मूँछें नहीं रखता। उधर, मलिना-वाले फोटोग्राफ में उसके काफी बड़ी मूँछें हैं। पता लगाने से मुझे मालूम हो गया कि इधर दो-तीन साल से उसने मूँछें नहीं बढ़ाई थीं। यह स्पष्ट था कि तसवीर में उसके चेहरे पर जो मूँछें दीख रही हैं वे नकली हैं। मुझे शुबहा हुआ कि क्या इस तीसरे आदमी की दाढ़ी भी नकली है? इसके बाद अजीतसिंह के अखबार में छपे हुए समाज-सेवियों की तसवीरों का मैंने फिर से मुकाबला किया। उनमें शान्तिप्रकाश की भी तसवीर है। दाढ़ी के बावजूद उसके चेहरे में तथा शान्तिप्रकाश के चेहरे में मैंने काफी समानता पायी। तब मैंने 'जनक्रान्ति' में छपी हुई सातों तसवीरों के चेहरे पर दाढ़ी खींचकर उनका मिलान करना चाहा। नतीजा आपके सामने है।"

उमाकान्त ने एक लिफाफा खोलकर 'जनक्रान्ति' में छपे हुए सात समाज-सेवियों के फोटो निकाले और उन्हें मेज पर फैला दिया। फिर प्रत्येक के नीचे एक-दूसरे फोटोग्राफों का सेट बिछा दिया। यह वही सेट था जिस पर रवीन्द्र ने हर फोटो के चेहरे पर एक फ्रेंचकट दाढ़ी जोड़ दी थी। उमाकान्त ने एक तीसरी तसवीर अपने हाथ में लेकर कहा, "देखिए, यह मलिनावाला फोटोग्राफ है। इसमें यह जसवन्त है, यह सिन्धी व्यापारी और यह महाशय हैं श्री शान्तिप्रकाश जी। हाँ, इन्हें आप फ्रेंचकट दाढ़ी के कारण नहीं पहचान पा रहे हैं। इधर इनकी वह तसवीर है जो 'जन-क्रान्ति' में छपी थी। इसी की दूसरी प्रिण्ट पर यहाँ देखिए, दाढ़ी खींच दी गयी है और यह दाढ़ीदार शान्तिप्रकाश का फोटो मलिना के ग्रुप-फोटो के शान्तिप्रकाश से कितना मिलता है। इस ग्रुप में यह भी शान्तिप्रकाश ही हैं जो अपनी 'फैन्सी ड्रेस' में ऐयाशी करने के लिए महिला आश्रम पहुँचे हुए हैं।

"इसके बाद मुझे कोई शक नहीं रहा कि अजीतसिंह मलिना के मामले को लेकर शान्तिप्रकाश और जसवन्त को ब्लैकमेल करता रहा था। हो

सकता है, इधर चुनाव के दिनों में, जब शान्तिप्रकाश मेयर बनाना चाहते थे, तब उसने ब्लैकमेल की कीमत बढ़ा दी हो या इस तसवीर को लेकर उनके विरोधियों से मोल-तोल करने लगा हो, जो भी हो, ऐसी हालत में जसवन्त और शान्तिप्रकाश में कोई भी अजीतसिंह की हत्या करने में हिचकता नहीं। हरीसिंह ने मुझे बताया था कि वह बुर्केवाली औरत जो अजीतसिंह के पास बाद में गयी थी, नयी और चमकदार चप्पलें पहने थी। वह उस औरत के गोरे-गोरे पाँवों से भी बहुत प्रभावित हुआ था। हरीसिंह ने मुझे बताया था कि उस चप्पलों में वे पाँव बड़े ही सुन्दर दीखते थे। मैं इस सम्भावना पर चल रहा था कि वार्ड में जो दूसरी बार बुर्का ओढ़कर गयी थी, उसने अजीतसिंह को जहर दिया होगा। अजीतसिंह के मुलाकातियों में उसी को लेकर रहस्य बना हुआ था, बाकी सबको हम अच्छी तरह जान चुके थे। जरीना वहाँ दुबारा गयी नहीं थी। और अगर वह गयी भी होती, तो वह गोरे पाँववाली औरत नहीं हो सकती थी, क्योंकि उसका रंग साँवला है। दूसरी बात यह है कि इस बुर्केवाली दूसरी औरत ने मिस लायल को पर्स छूट जाने की झूठी कहानी गढ़कर सुनायी थी। इसी से समझा जा सकता है कि वार्ड में वह किसी गलत उद्देश्य से आयी थी। मैं सोचता रहा कि यह औरत कौन हो सकती है ?

"बाद में यह जानते ही कि शान्तिप्रकाश पार्वती महिला आश्रम में भेष बदलकर गया था, मेरे मन में सवाल उठा कि क्या यह जरूरी है कि अजीतसिंह के पास बुर्के में जानेवाला व्यक्ति औरत ही हो ? क्या वह मर्द नहीं हो सकता ? शान्तिप्रकाश जी के पाँव मैंने पहले भी देखे थे, उस दिन जब अजीतसिंह की शोक-सभा हुई थी। उनके पाँव बहुत ही गोरे और चिकने हैं और औरतों-जैसे दीखते हैं। कल मैंने उनके कान में फुस-फुसाकर एक बात कही थी और उस पर उन्होंने फुसफुसाकर जवाब दिया था। उस वक्त उनकी आवाज भर्राई हुई थी। यह शायद चुनाव व्याख्यानों का नतीजा है। पर उनकी आवाज बहुत मीठी है और जब वह फुसफुसाकर बोले, तब मुझे लगा कि इतने धीमे स्वर में इसे मिस लायल आसानी से औरत की आवाज समझ सकती है।

"इस तरह इतना स्पष्ट हो गया था कि शान्तिप्रकाश के पास इस बात का कारण मौजूद है कि अजीतसिंह की हत्या की जाये। उनके पाँव वैसे ही हैं जैसे हरीसिंह ने देखे थे। उनकी आवाज भी वैसे हो सकती है जैसी मिस लायल ने सुनी थी। उन्हें जसवन्त से नौ बजे रात तक यह

खबर मिल चुकी थी कि अजीतसिंह के बच जाने की सम्भावना है। उन्हें पूरा मौका था कि अन्दर जायें और उसे जहर पिला दें। वे दस बजे के बाद अपना बँगला छोड़कर जीप से अकेले बाहर भी गये थे। जिस तरह मलिना के सामने वे भेष बदलकर गये थे वैसे ही वे बुर्का पहनकर वार्ड में भी जा सकते थे। उनका कद छोटा है और जिस्म दुबला है, वे ऐसा आसानी से कर सकते थे। जहर देने के बाद या पहले वे अजीतसिंह के घर की तलाशी भी ले सकते थे। वह इतने अमीर हैं कि उन्हें वहाँ से मलिनावाला फोटो ही लेने में दिलचस्पी होती, वहाँ के आठ हजार रुपयों की उन्हें फिक्र नहीं रही। यह भी संयोग की बात थी कि उनके वार्ड से जाने के पहले ही जरीना वहाँ से बाहर आयी थी और उन्होंने उसे निकलते हुए देख लिया था। अतः मौके पर पर्स छूट जाने की कहानी गढ़ना उनके लिए मुश्किल नहीं था। अजब नहीं कि जहर देने का भी उन्हें पहले से तजुर्बा रहा हो और ट्रेन से कुचलने के पहले उन्होंने ही मलिना को अफीम या कोई दूसरा जहर दिया हो।

"उस रात उनकी जीप की आमदरफ्त ने मेरे सन्देह को और भी पक्का कर दिया था। जसवन्त उन्हीं की जीप पर, शायद उन्हीं के पहले से, अजीतसिंह का हाल-चाल लेने गया था। जसवन्त के पास अपनी जीप नहीं है, वह कार पर चलता है। अब यह देखना होगा कि बारह बजे के पहले वह जीप अस्पताल के पास कहीं खड़ी हुई पायी गयी या नहीं। शान्तिप्रकाश उसे यकीनन वहीं नजदीक ही छोड़कर अस्पताल आये होंगे। आज की तलाशी में उन चप्पलों और बुर्के का भी पता लग गया, जिन्हें पहनकर शान्तिप्रकाश अजीतसिंह को जहर देने गये थे। कुमारी वीणा गहलौत अपनी बचत के लिए अब आपकी ओर से यह गवाही देने को तैयार है कि यह सामान शान्तिप्रकाश ने उन्हीं से लिया था। उसे लेने के लिए वे महिला आश्रम तक जीप से गये थे।

"मलिना की जो तसवीरें उसकी मृत्यु के बाद अखबारों में छपी थीं उनमें अजीतसिंह के पास से मिली हुई तसवीरों से थोड़ा-सा अन्तर है। अजीतसिंह के पासवाली तसवीरों में उसकी आँखें चमक रही हैं और वह बड़ी खुश-सी दीखती है। अजब नहीं कि किसी बहाने इन बदमाशों ने उसे शराब पिलायी हो या यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसे किसी रूप में अफीम दी हो और बाद में बेहोशी की हालत में उसे रेल की पटरी पर छोड़ दिया हो। पर यह बातें आगे के इन्वेस्टीगेशन की हैं।

जहाँ तक अजीतसिंह का मामला है, मैं समझता हूँ कि उसमें अब ज्यादा जाँच की जरूरत नहीं है।"

उमाकान्त की बात खत्म हो जाने पर कमरे में थोड़ी देर सन्नाटा रहा।

सिद्दीकी ने कहा, "हमारे पास इस बात का सबूत पहले से ही मौजूद है कि शान्तिप्रकाश ने काफी समय तक 'जनक्रान्ति' प्रकाशन का खर्च उठाया था। पार्वती महिला आश्रम को भी जिस-जिस वर्ष उन्होंने जितना-जितना रुपया दिया है, इसकी सूचना हमारे पास है।"

इतनी देर बाद बादशाह ने मुँह खोला। उसने कहा, "शान्तिप्रकाश के खिलाफ सबसे बड़ा सबूत तो वह खत है जिसे उमाकान्त जी ने अजीतसिंह की लाश के पास पाया था।"

विद्यानाथ ने पूछा, "कौन-सा खत ?"

इस पर सब लोग हँसने लगे।

उमाकान्त ने कहा, "ऐसा कोई खत नहीं है। खत की बात तो मैंने शान्तिप्रकाश के लिए गढ़ ली थी। उसका जिक्र आते ही शान्तिप्रकाश ने एक वाक्य में लगभग अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। उसने कहा—उस वक्त मेरी जेब में कोई खत नहीं था।"

विद्यानाथ ने पूछा, "किस वक्त ?" उसके बाद ही वे जोर से हँस पड़े। बोले, "ओह, यानी जिस वक्त शान्तिप्रकाश अजीतसिंह के बिस्तर के पास जहर लेकर पहुँचे थे। बहुत खूब !"

वे लोग हँसते रहे। कुछ रुककर विद्यानाथ ने पूछा, "आपने जसवन्त को कैसे मुआफ कर दिया। यह भी तो हो सकता था कि जसवन्त ने ही अजीतसिंह को जहर दिया हो ?"

"बिल्कुल हो सकता था। पर उस रात जसवन्त दस बजे तक अपने घर पहुँच गया था। फिर वह निकला ही नहीं। बादशाह ने इसका पता कर लिया है। फिर वह लगभग छह फुट ऊँचा है। कम से कम बुर्का पहनकर तो वह वार्ड के भीतर आने की सोच भी नहीं सकता था।"

"पर जसवन्त आज सवेरे से भागा क्यों है ?"

इसका जवाब बादशाह ने दिया। बोला, "मैं बताऊँ, हजूर ! उसने मेरे पास मलिना का वह फोटो देखा था जो पार्वती महिला आश्रम में खींचा गया था। शान्तिप्रकाश की दाढ़ीवाली तसवीर भी उसने देखी थी। उसे शुबहा हो गया था कि यह मामला फिर से उभरने वाला है।

पता नहीं उसने शान्तिप्रकाश को भी बताया या नहीं। जो भी हो, कल शाम उसने मुझे और उमाकान्तजी को शान्तिप्रकाश के साथ बात करते हुए देखा था। अजब नहीं कि वह मुझे देखते ही चौकन्ना हो गया हो और चुनाव के बावजूद दो-चार दिन बाहर रहकर उसने यहाँ की हालत पर निगाह रखने की बात सोची हो।"

वे लोग थोड़ी देर चुप रहे। फिर सिद्दीकी ने कहा, "पूरी घटना में सबसे ज्यादा हैरत की बात यह है कि ललिता के साथ शान्तिप्रकाश का फोटो *किसने खींचा होगा?"*

उमाकान्त ने कहा, "अभी मैंने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से बातें की थीं। उससे मुझे पता लगता है कि उसकी अजीतसिंह से दोस्ती थी। अजीतसिंह पुराना ऐक्टर था और बहुत-सी महिलाएँ उससे प्रभावित रहती थीं। यह लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट भी उनमें रही होगी। वैसे भी वह काफी स्मार्ट है और आश्रम के अलावा बाहरी चीजों में भी उसकी बड़ी दिलचस्पी है। कल मुझसे कैमरों और फोटोग्राफी के बारे में काफी देर बात करती रही थी। उसे पहले फोटोग्राफी का भी शौक रहा है। हो सकता है कि यह फोटो अजीतसिंह के कहने पर लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने ही खींची हो। शान्तिप्रकाश और उनके दोनों साथी उस वक्त नशे में रहे होंगे। तब लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को दरवाजे के पास से चुराकर उनका फोटो खींचने में कोई दिक्कत नहीं हुई होगी। कुमारी वीणा गहलौत ने यह सब तो अजीतसिंह की मुहब्बत में किया होगा, या हो सकता है कि अजीतसिंह को मिलनेवाले ब्लैकमेल के रुपये में उसका भी हिस्सा रहा हो। जो भी हो, ललिता के मामले में आप लोग दुबारा जाँच करेंगे ही।"

विद्यानाथ ने सिद्दीकी से कहा, "ललितावाली जाँच कल फिर से शुरू हो जानी चाहिए।"

सिद्दीकी ने उमाकान्त और बादशाह की ओर मुसकराकर देखा, फिर विद्यानाथ से कहा, "सर, अगर इसी तरह हमें जनता की मदद मिल जाये तो जाँच कल से शुरू होकर कल ही खत्म भी हो जायेगी।"

बादशाह ने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा, "फिक्र न करें सिद्दीकी साहब, कम-से-कम यह जनता इस मामले में आपके साथ है।"

उमाकान्त चलने को खड़ा हो गया। विद्यानाथ ने भी उठते-उठते कहा, "हाँ, एक बात और। कल सवेरे ही रूबी के मामले में जाँच की आखिरी रिपोर्ट लग जायेगी। रात हो जाने के कारण आज तो वह छूट

जहाँ तक अजीतसिंह का मामला है, मैं समझता हूँ कि उसमें अब ज्यादा जाँच की जरूरत नहीं है।"

उमाकान्त की बात खत्म हो जाने पर कमरे में थोड़ी देर सन्नाटा रहा।

सिद्दीकी ने कहा, "हमारे पास इस बात का सबूत पहले से ही मौजूद है कि शान्तिप्रकाश ने काफी समय तक 'जनक्रान्ति' प्रकाशन का खर्च उठाया था। पार्वती महिला आश्रम को भी जिस-जिस वर्ष उन्होंने जितना-जितना रुपया दिया है, इसकी सूचना हमारे पास है।"

इतनी देर बाद बादशाह ने मुँह खोला। उसने कहा, "शान्तिप्रकाश के खिलाफ सबसे बड़ा सबूत तो वह खत है जिसे उमाकान्त जी ने अजीतसिंह की लाश के पास पाया था।"

विद्यानाथ ने पूछा, "कौन-सा खत ?"

इस पर सब लोग हँसने लगे।

उमाकान्त ने कहा, "ऐसा कोई खत नहीं है। खत की बात तो मैंने शान्तिप्रकाश के लिए गढ़ ली थी। उसका जिक्र आते ही शान्तिप्रकाश ने एक वाक्य में लगभग अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। उसने कहा—उस वक्त मेरी जेब में कोई खत नहीं था।"

विद्यानाथ ने पूछा, "किस वक्त ?" उसके बाद ही वे जोर से हँस पड़े। बोले, "ओह, यानी जिस वक्त शान्तिप्रकाश अजीतसिंह के बिस्तर के पास जहर लेकर पहुँचे थे। बहुत खूब !"

वे लोग हँसते रहे। कुछ रुककर विद्यानाथ ने पूछा, "आपने जसवन्त को कैसे मुआफ कर दिया। यह भी तो हो सकता था कि जसवन्त ने ही अजीतसिंह को जहर दिया हो ?"

"बिल्कुल हो सकता था। पर उस रात जसवन्त दस बजे तक अपने घर पहुँच गया था। फिर वह निकला ही नहीं। बादशाह ने इसका पता कर लिया है। फिर वह लगभग छह फुट ऊँचा है। कम से कम बुर्का पहनकर तो वह वार्ड के भीतर आने की सोच भी नहीं सकता था।"

"पर जसवन्त आज सवेरे से भागा क्यों है ?"

इसका जवाब बादशाह ने दिया। बोला, "मैं बताऊँ, हजूर ! उसने मेरे पास मलिना का वह फोटो देखा था जो पार्वती महिला आश्रम में खींचा गया था। शान्तिप्रकाश की दाढ़ीवाली तसवीर भी उसने देखी थी। उसे शुबहा हो गया था कि यह मामला फिर से उभरने वाला है।

पता नहीं उसने शान्तिप्रकाश को भी बताया या नहीं। जो भी हो, कल शाम उसने मुझे और उमाकान्तजी को शान्तिप्रकाश के साथ बात करते हुए देखा था। अजब नहीं कि वह मुझे देखते ही चौकन्ना हो गया हो और चुनाव के बावजूद दो-चार दिन बाहर रहकर उसने यहाँ की हालत पर निगाह रखने की बात सोची हो।"

वे लोग थोडी देर चुप रहे। फिर सिद्दीकी ने कहा, "पूरी घटना में सबसे ज्यादा हैरत की बात यह है कि मलिना के साथ शान्तिप्रकाश का फोटो किसने खीचा होगा?"

उमाकान्त ने कहा, "अभी मैंने लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट से बातें की थीं। उससे मुझे पता लगता है कि उसकी अजीतसिंह से दोस्ती थी। अजीतसिंह पुराना ऐक्टर था और बहुत-सी महिलाएँ उससे प्रभावित रहती थीं। यह लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट भी उनमें रही होगी। वैसे भी वह काफी स्मार्ट है और आश्रम के अलावा बाहरी चीजों में भी उसकी बडी दिलचस्पी है। कल मुझसे कैमरों और फोटोग्राफी के बारे में काफी देर बात करती रही थी। उसे पहले फोटोग्राफी का भी शौक रहा है। हो सकता है कि यह फोटो अजीतसिंह के कहने पर लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने ही खीची हो। शान्तिप्रकाश और उनके दोनों साथी उस वक्त नशे में रहे होंगे। तब लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट को दरवाजे के पास से चुराकर उनका फोटो खीचने में कोई दिक्कत नहीं हुई होगी। कुमारी वीणा गहलौत ने यह सब तो अजीतसिंह की मुहब्बत में किया होगा, या हो सकता है कि अजीतसिंह को मिलनेवाले ब्लैकमेल के रुपये में उसका भी हिस्सा रहा हो। जो भी हो, मलिना के मामले में आप लोग दुबारा जाँच करेंगे ही।"

विद्यानाथ ने सिद्दीकी से कहा, "मलिनावाली जाँच कल फिर से शुरू हो जानी चाहिए।"

सिद्दीकी ने उमाकान्त और बादशाह की ओर मुसकराकर देखा, फिर विद्यानाथ से कहा, "सर, अगर इसी तरह हमें जनता की मदद मिल जाये तो जाँच कल से शुरू होकर कल ही खत्म भी हो जायेगी।"

बादशाह ने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा, 'फिक्र न करें सिद्दीकी साहब, कम-से-कम यह जनता इस मामले में आपके साथ है।"

उमाकान्त चलने को खडा हो गया। विद्यानाथ ने भी उठते-उठते कहा, "हाँ, एक बात और। कल सवेरे ही रूबी के मामले में जाँच की आखिरी रिपोर्ट लग जायेगी। रात हो जाने के कारण आज तो वह छूट

नहीं पायेगी। पर कल सवेरे उसे जल्द से जल्द छुड़ाना होगा।"

"उस सबमें मुझे दिलचस्पी नहीं है।" उमाकान्त ने धुन्ध-भरे आसमान की ओर देखा, "आपको शायद पता नहीं, इस सड़ी गर्मी में नैनीताल जाकर भी मैं उसी दिन लौट आया था। सिद्दीकी साहब को मालूम है। मेरा वह सफर अधूरा पड़ा है। कल सवेरे ही मैं उसे पूरा करने के लिए निकल जाऊँगा।"

उसने सिद्दीकी के कन्धे पर हाथ रखकर नकली अकड़ में कहा, 'इस शहर को अब कम-से-कम पन्द्रह दिन मेरे बिना रहना होगा।"

सिद्दीकी ने उसी तरह जवाब दिया, "शहर की बदकिस्मती!"

बादशाह ने भी कहा, "ठीक कह रहे हो, उस्ताद, यह शहर इसी लायक है।"

कहकर वह मुस्तैदी से विद्यानाथ और सिद्दीकी की ओर मुड़ा और बड़े मँजे हुए लहजे में बोला, "अब हम लोग चल दिये। गुड नाइट, सर!"

थोड़ी देर में लॉन पर सिर्फ पंखे की सनसनाहट रह गयी।